GOSSNER EVANGELICAL – LUTHERAN CHURCH IN CHOTANAGPUR AND ASSAM

GELC ARCHIVE

Signature: **GELC-A _ 001 _ 0424**

Classification:

Original File No. 57

Title

Ilaka History

Volume:

Running **from year: 1944** **till year: 1949**

Content:

- Letter from Pastor M.Manki to the Secretary on 25-1-1949.
- History of Takarma Ilaka (Jubilee for 200 Yrs)- S.Surin.
- History of Ilaka (Singhani, Gumla, Chainpur, Chaibasa, Lower Assam, Rajgangpur, Khuntitoli, Jharsugda, Lohardaga, Palkot etc.)

Centenary Jubilee file
Ilaka History

RAJASTHAN

1944-49

FLAT FILE

Ilaka Hist.

File No. 57

me

ect

Karimatti 25.1.49.

from the Pastor M. Manki.

F 157 F 40

To, the Secretary and all the members of the C.C. executive members.

Main aj dukh ke sath Karimatti se report bhejta hun. Main ne 5th January 49 ko ek Mita ek darkhast Takad ke Ilakai meeting men hoke ap logon ke pas arji pesh kiya - ki 4th January tak men Rs 50/ advance T.A. M.O se Rev. L. Kongari ke through bhej dijiye; par nahin mila - tab main ne socha ki ab kya karun ki bharia ko majuri dewe. Mujhe chatur Bhandari ki saman ek upay mili. Main ne T.B. kai ek mora jo 7 man-10 ser kai thai 5 ser ke das se Rs 58/ kai becha - jisse wahan kai khet kai malguzari aur wouring kai bhi Rs. 18-6-9 chukti kiya 1948 sal kai. aur Baki Rs 43/- kharcha kharch paya abhi tak main ne Rs 51/- Karimatti tak ane men kharch bharion ko diya - abhi Karimatti se Kalupani jane ke liye kisi bhai se Rs 50/ tak rin lena chahta hun.

Main 28-1-49 men yahan se rawani honge 29-30 tak men Kalupani men pahunch jaunga -

Age. Charge lene men deri kyon hui - ? Main 10 tarik se 17-18 tarik

Padri Paulus Toṛu Topkarā ki aisha dekhi-aur ek do admion ko bazir hoke hue jāineh bhejai ki kyai hua - Padrī babu deri meṇ hai — Jawāb milai ki C.C. se dusri bar order milne par awange. Main Takad Chairman Rev. L. Kongari se bhi arji ki charge lewe - unhon ne kahlā bhejā ki 19 tarik jaungā, agar nahiṇ to. M. Manki Babu mandli Pauruh aur parish panchon ko sab samagiri dekhake aur Charge Book meṇ darj kar dawāni howe - us motabik main 19th January ko paiṇchoṇ ke hāth item item karke charge Book meṇ likhai aur panchoṇ ko jimā deke. 20 tarik 8-9 baje rawāni apne gharaine sahit bidai hue aur Sāim Churdag parish ke Barjo meṇ thahre. phir Bharia ke Malalīnka meṇ pahuṇ gaye 21 tarik bhariye khojai par nahiṇ milā. main 22 tarik Barjo se phir chalai 23 ko Lowaram parish ke Raeburci mandli meṇ giryai kiyā jahan Rev. H. Kerketa Holy Communion diyai. 24 ko. Karmatti pahuchai. So is prakar se charge lene meṇ itnai ~~prabtha~~ pichhari hua huṇ. So. C-C

se kewaiy hai ki is Kasur ko ki thik samaj charge nahin le sakai ki māf kare - main hukum aduli nahin kar rahi hun par palan karte hue bhi itna galat ho rahi hai

main bharosai kartai hun ki C.C. anugrah karke māf karenge kyonki C.C. ne. kitnon ke upar par reconsider ko kar rahe hain.

Āp kai Bishwasi
Sewak
Pastor. M. Kerketta

With thanks
Yours Sincerely
[illegible]

POST CARD

ADDRESS ONLY

To
The Rev. J. J. P. Tiga
Convener centenary Jubilee committee
G. E. R. church compound
Lohardaga
Dt. Ranchi

From The Rev. A. M. Toppno. Burju Dated the 25th June 77

To The centenary Jubillee convener, Lohardaga.

Sir, Thank you for your Jubilee information letter and the list of money collected and sent to the Jubelee Treasurer But regrete to say the list is quite illesible. I therefore humbly request you to kindly send me one more at your earliest convinience.

टकरमा इलाके का इतिहास १०० वर्ष जुबिलीके लिये

जिस समय गोविन्दपुर इलाके के कोटबो आस पास मुन्डा लोगों के बीच में ख्रिस्तान धर्म्म का जोरों प्रचार हो रहा था, और ख्रिस्तान धर्म्म को जोरों ग्रहण कर रहे थे, उस समय जमिन्दारों से खिजबिजाये, जमटोली का एक मुन्डा घराना, अपना घर छोड़ कर शरना लेने के लिये रायकेरा आया। उनका नाम, टेयों, जेरेम और बुधु। टेयों, रायकेरा के बढ़ाईक साहेब के घर में नौकर हुआ। बड़ाईक सहेब के बच्चों को कोई सज्जन पढ़ाता था, उस समय टेयों भी कुछ दूर बैठ कर ध्यान से सुनता और सीखता था। जैसा कैसा सीख लिया और रायकेरा के भाईयों के साथ गिर्जा भी जाने लगा। पीछे उसने बपतिस्मा, राँची में लेकर घर वापस लौट आया। अपना बपतिस्मा नाम, मरकस रखा।

घर लौट आकर उसने अपने दोनों भाईयों को ईश्वर का बचन सुनाया और आस पास के गावों में जाकर प्रभु के विषय बताता था। निदान, लोयकेरा, टटी, जोन्हाटोली, कोन्सोदे, एल्हा, रोमजोल और कुभुमटोली से, जमटोली ईश्वर का बचन सुनने के लिये जाने लगे। अन्त मे एक मण्डली जमटोली में हुई। थोड़े दिन बाद टटी में, ऐसाही ख्रिस्तानों की संख्या वेग से बढ़ती जाती थी और उपरोक्त गावों में मण्डली भी बढ़ती जाती थी। इन मण्डलियों को चरवाही के लिये एक एक स्टेशन टकरमा मे, १८७३ ई० में खोला गया। सब से पहिला मिश्नरी W. Hussé था। उसने असमान सिंध गांझू से जगह बन्दोबस्त किया।

टकरमा इलाका में मिश्नरी लोग १६१४ तक काम किये। उन मिश्नरियों मे Kampfhinkel और Eidnaes बहुत विख्यात हैं। Kampfhinkel १८६२ तक काम किया। उसके समय में, गगपूर, और बिरु में लोग खिस्तान होना शुरु किये। जमिन्दार लोग घबडाये हुए थे। वे खिस्तान धर्म्म को रोकने के लिये जोरों कोशिश करते थे। प्रचारकों को बहुत ही सताते थे और प्रचार करने से रोकते थे। उनके अत्याचार और सताहट रुपी हल से लोगों का मन रुपी जमीन ईश्वर के वचन रुपी बीज के लिये जोत कर तैयार था। इसलिये जितना वे सताते थे प्रचारक लोग निधड़क प्रचरते थे और लोग और अधिक बेग से खिस्तान हो जाते थे उसने सरकारी पोलिशों के साथ जमिन्दारों को रोका और कितनों को जेल जाना पड़ा। धन्य हैं वे जो धर्म्म के कारण सताये जाते हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है- मत्ती ५,१०

फिर दूसरी परीक्षा Eidnaes के समय में आया। क्योंकि जहां कहीं कोई भला और उत्तम काम किया जाता है वहां शैतान अपना बुरा प्रभाव डाल कर नाना उपाय से ऐसे कामों को नष्ट भ्रष्ट करने के लिये अटूट परिश्रम किया करता है। शैतान के चलाने से कितने पहिले खिस्तान, ऐयो मरकस, चांगो इलियाजर आदी सरदार हो गये। उन्हों ने १८६४-१८६६ तक मिश्नारियों को छोटानागपूर से भगाने के लिये हड़ताल किये। जैसे उन्होंने बड़े बेग से बहुतों को खिस्तान धर्म्म में लाये वैसा ही बहुतों को बड़े बेग से बहका कर संसार

ख्रिस्तान धर्म अलग कर दिये। पर थोड़े दिन के बाद बहुत से उल्टे हुए लोग फिर पश्चाताप कर लौट आये। दैयो मरकस और चांगो इलियजर मृत्युलों पश्चाताप नहीं किये। कहा जाता है कि उनकी मृत्यु भयानक तौर से हुई।

इस इलाके में ख्रिस्तानों की जनसंख्या बढ़ने लगी। निदान और स्टेशन खोलने की आवश्यकता हुई। १८९८ मे, खूटीटोली, १९०० में लताकेल, १९०३ में कोरोजो १९०४ में बड़ो बिरिगा और १८९६ में ~~करीमटी~~ करीमटी। १९०७ में, टकरमा में र. के यू. पी० स्कूल को मिडल स्कूल बनाया जहाँ बहुतों ने प्रभु को पहिचाना। उसके अलावे सब प्रचारक पल्लों में लोअर प्राइमरी स्कूल बनाया। फिर टकरमा में ~~एक~~ लड़कियों के लिये एक स्कूल भी खोला है। करीमटी, खूटीटोली और कोरोजो अलग इलाका बनाये गये।

१९२५ में ? Eidmaes साहेब विलायत लौट गया उस समय इस इलाके में ७०९७ ख्रिस्तान थे। मिश्नरियों के चले जाने से इलाका देशी पादरियों के हाथ में पड़ा। तौभी ख्रिस्तानों की संख्या बढ़ती ही गई अत्मशाशन लेने के समय अर्थात १९२९ में ख्रिस्तानों की जन संख्या ८००० थी। अभी जुबिली के समय तक में १५७८२ है। गत ५ वर्षों की जनसंख्या इस प्रकार है

१९४२ ई० मे		१४७११
१९४३ "	"	१४९७८
१९४४ "	"	१५३२८
१९४५ "	"	१५५२५
१९४६ "	"	१५७८२

हर साल प्रायः २०० ख्रिस्तानों की बढ़ती है।

पुराने समय ही से इस इलाके में नये २ काम होते आये हैं। खड़ा सिरनी का दान इस इलाके में शुरू हुआ। इसको शुरू करने वाली कृपा बागे, लोयकेरा के रहने हारी हैं जो १८-१-१९४४ को ९० वरस के उमर में प्रभु में सो गई। यह दान अभी समूचे क्षेत्र में हैं।

मनौती नाम एक दान भी था। जैसे कि कोई खेत में धान बुनता है तो एक खेत प्रभु के नाम के लिये बुनता था। जितना उपज होगा उसको मण्डली मे देता था। यह दान अब मिट गया है।

कलीसिया के आत्म पालन का बीज इस इलाके में बोया गया है। इस वर्तमान समय में हरएक भाई और बहिन उसी लक्ष की ओर ध्यान कर रहे हैं। उसका फलस्वरूप यह है कि इस इलाके ने एक हाई स्कूल (Eidnaes High School.) को अपने ही खर्च से बनाया है जिसको इलाका सौ वर्षिय जुबिली का स्मरण पत्र मानती है। इस स्कूल का उत्पादक पादरी S. Kula, Mr. M. Purti Mr C.H. Horenz. हैं और अन्य इलाके के भाई हैं। इस स्कूल को पूरी मंजूरी प्राप्त करने के लिये निम्न भाईयों ने आत्मबलिदान किया है Mr. J. Barla, Mrs C.M. Barla. Rev. B. Minz. Mr. M. Purti और Mr. P.D. Bara और इलाका चेयरमैन Rev. S. Surin. इन भाईयों को हार्दिक

धन्यवाद ।

इलाके ने आत्मवृद्धि के लिये एक मिशन क्षेत्र भी खोला है जो लमगढ़ मौजा में है जहां एक भी ख्रिस्तान नहीं है १९८७ में एक धर्म खोजक का बपतिस्मा उस क्षेत्र से हुआ है । समूचे इलाके से हर साल कम से कम १०० धर्म खोजकों का बपतिस्मा होते आ रहा है प्रभु इस इलाके को बहुत आशीष देवें ।

S. Suin
Ilaka chairman
Takarma.

सिंघानी मंडली का इतिहास

पुराने समय में लोग- कहते थे- कि- लूथेरान मिशन सिंघानी का- पहले हजारीबाग खिरगांव में था जो कि डि॰यू मिशन जनाना अस्पताल के निकट- पश्चिम में है वहां पर बंगला भी था जो अभी लों बंगला तैयार है पर- अभी वह सब- दूसरे ढंग से तोड़ कर- जो लिया- सब- बनाया- । सेतागढ़ा- में चाह बगान था- तो- वहां काम करने- के वास्ते- नागपूर- से ख्रीस्तान भाई बहिन सब- आये जो- सब लूथेरान थे ~~से~~ पीछे- ये- भाई लोग- सेतागढ़ा में अपना अपना जगह लेकर रहने- लगे और चाह बगान में काम- करने लगे उन को देखभाल करना- हजारीबाग- से- दूर- होता था इस वजह से मिशनरी लोग- हजारीबाग से- मिशन उठाकर- सिंघानी गांव में ~~मिशन~~ ह जगह पदमा- राजा- से खरीद- किया- कौन साहेब खरीदा- सो मालुम- नहीं ~~पर~~ सो जमीन सब- जमा- 32 बीघा लिया गया- जिस में पदमाराज से 12 बीघा जमीन खैरात याने धर्म के वास्ते मिला बाकी जमीन मालगुजारी पर- है सुनने आया- था- कि- पहले सिंघानी में- बाछ साहेब- थे- वही सेतागढ़ा- के- भाई बहिनों को देखभाल करते थे और भाई बहिन सब- एतवार २ सिंघानी गिरजा- आते- थे बाछ साहब के- पीछे डडलो किस साहब- सिंघानी में थे- पर- मालुम- नहीं कि उलगुलान- के- पीछे थे कि पहले । डडलो किस के पीछे कौन- मिशनरी थे सो- मालुम- नहीं । ~~पर~~ बहुत दिनों- के बाद किफ़्लसाहेब सिंघानी आये और उस- के द्वारा- हाता प्रबन्ध किया गया- बगान, कुंवा कबर सब । और उस के द्वारा- ~~जाल~~ डुमर में जो सिंघानी से- पूरब 20 मील पर है जहां सन्ताल लोग- है मंडली, ठहराया- वहां एक प्रचारक रखा- गया था- उस के बाद- उन्हों ने जाला में- सन्ताल भाईयों के पास- मंडली स्थापित- ~~गया~~ किया- वहां- के- भाई बहिनों- को देखने के वास्ते एक प्रचारक- रखा

जिसका नाम- खिस्तोचित मूरमू था- जिसको- पोरैया मिशन से मांगाया था- किफेलसाहेब- ने- रांची से- कितने मास्टर और प्रचारक- मांगाया था- सिंघानी के वास्ते- कितने बरसों के- बाद- किफेलसाहेब का- बदली- हुआ- उस के जगह पर- वोयसाहेब- आये वही समूचा- मंडली- देखता था-। वोय साहेब- के सहायक- टेनिंगकेर साहेब, थे उस के- बाद- वोय साहेब- के- बदली होने- पर- गेरहरद साहेब- सिंघानी में- आये, उस का सहायक- पूदास्के साहेब- थे। गेरहरसाहेब को बिमारी हुआ तो डाक्टर के- हुकुम- से बिलायत जाना पड़ा- तो उस के जगह पर फुंसिंग साहेब- आये वे- भी दो तीन बरस रह कर बिलायत- गये- उसके बाद उस फुंसिंग के- जगह पर- छोटा वेकमन साहेब- आये- पीछे- जर्मनी लड़ाई के- वजह से- सरकार- सब- मिशनारियों को- ले गया- उस के बाद- सिंघानी मंडली देशी पादियों से चलाया गया जो- आज लों चलाया जा रहा है। पहला देशी पादी हनुकदत- लड़का- खिस्तोआनन्द आइन्द, हूरद, पादी, हूरद- के पीछे योहन टोप्पो थे योहन टोप्पो के- बदली होने- के- बाद आन्द्रयास तोपनो इस के बाद हाबिल तोपनो सिंघानी- में- आये- जो- आज- लों काम- कर रहें।

जालामंडली। जब जाला में खृस्तान- बढ़ने लगे तब- मिशनारी लोग- रांची से बड़ापापे को जाला भेजा। जिसने- वहां- के जमीदार से जो सङ्गम- में रहता है जगह जमीन बंगला बनाने के- वास्ते लिया और बंगला- गिरजा घर बनाया- बड़ापापे के बदली होने पर- गोसके- साहेब- जाला- में- थे- पर सुनने में आया कि टेनिंगकेर- साहेब- भी जाला में- थे। पानी के- तकलीफ के- वजह जाला में कोई मिशनारी नहीं ठहर- सके- वहां- पर- पीछे खृस्तआनन्द आइन्द पादी को जाला- में- रखा गया—

Rev. [illegible]

Short History of Gumla Ilaka.

गुमला इलाके का नेव १८९५ में डाला गया था। गोस्सनर कलीसिया के ५० वर्षीय जुबिली के पीछे, इसलिये इस स्टेशन का नाम "जुबिली" स्टेशन पड़ा। इस स्टेशन का नाम "एबेनेजर" भी है। इस स्टेशन का पहिला मिशनरी B. Lauzemis थे। उनके साथ कान्डिडात दाऊद कुजुर भी आये। स्टेशन बनने के पहिले उन्होंने ~~चाहा~~ बगीचे में तम्बु खड़ा करके काम आरम्भ किया था। मिशनरी साहेब के पीछे और अनेक मिशनरी साहेब गुमला में काम किये जैसे — C. Mehl A. Koppen, P. Kasten, R. Karsten, F. Jucknat, R. Ziech, F. Schnoor इत्यादि।

और देशी पादरी में कान्डिडात बाबु दाऊद कुजुर १९०६ में पदाभिषिक्त होकर अपने जीवन के अन्त लों इसी इलाके में काम किया। केवल कुछ समय के लिये गोबिन्दपुर गये थे जहां से १९३९ महासभा में गोस्सनर कलीसिया के प्रेसिडेन्ट चुने गये थे। यह स्टेशन बहुत ही छोटा है मान लीजिये एक पेरिस के समान है। पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्खिन दोनों ओर से १८ मील के अन्दर विस्तृत है। इसके अन्दर दो देशी पादरी काम करते हैं। Rev. Christ Nicanor Maghan लकड़ा गुमला सेन्टर में चेयरमेन के हैसियत से काम करते हैं। Rev. E. Kindo रघुनाथपुर के पेरिस पादरी हैं। इलाके भर में १४ प्रचारकपन हैं। अधिकांश प्रचारक निजगांव में काम करते हैं। केवल २ प्रचारक दूसरे जगह काम करते हैं। इन प्रचारकों के बीच २ मास्टर-प्रचारक हैं। एक प्रचारिका भी है जो समूचे इलाके की बहिनों के बीच में काम करती है। १९४१ के मर्दुमसुमारी के अनुसार जनसंख्या इस प्रकार है। बपतिस्मा पाये हुए २६३१, दीक्षित १६०६, धर्म्म खोजक- १४ हैं। जाति अनुसार इस प्रकार है। उरांव २६४४, मुण्डा ६४, खड़िया ६१, हिन्दू ३२ हैं।

सन्डे स्कूल — ८ हैं, जिनमें ६१ लड़के और ८६ लड़कियां पढ़ती हैं। पुरुष शिक्षक- १४ और स्त्री शिक्षक १ हैं। प्रार्थना समाज १६ हैं जो हफ्तेवार होते हैं। इनके अलावे हर प्रचारकपन में बहिनों का समाज है जिन को प्रचारिका चलाती है। इलाके के अन्दर २ अपर प्रेमरी स्कूल हैं जिनमें १२२ लड़के और ६६ लड़कियां हैं। लोअर प्रेमरी स्कूल ६ हैं जिनमें १३४ लड़के और ४४ लड़कियां पढ़ती हैं। इसके ऊपर प्रोपोज्ड M.E. स्कूल भी खोला गया है, ६+७ क्लास भी खोला गया है। शिक्षक १५ और शिक्षिकायें ३ हैं।

इस छोटे इलाके में ४ पादरी हुए हैं जो भिन्न इलाकाओं में काम कर रहे हैं। एक कान्डिडात है और १ सेमीनरी विद्यार्थी है। सेन्टीनरी जुबिली निशान का पक्का गिर्जा घर अब बनकर करीब तैयार हो चुका है।

K. Mhaker
Chairman
Gumla
28.3.46.

No. 410 of 7.2.46
To Rev. J J P Tigga
for Jubilee printing
B. Minz Hdm.

A Report of the Eidnaes High School, Takarma.

Messrs S.K, C.H.H. (Suleman Kulu, C.H. Herenz) and their friends ~~hatched out~~ formed the idea of founding a high school at Takarma. They thought and planned incessantly under all sorts of difficulties giving a lot of time over it. To-day we offer them our heartiest congratulations for their farsighted creative work, which to-day has come into full existence with all power apparent power and potentiality to thrive in this thoroughly jungle area completely cut off from ~~town~~ civilization. May God be in the school while it lasts to serve the humble peasants of the neighbourhood and others with them.

For Jubilee Publication

I Staff

The 12th of January 1942 saw the foundation of the Eidnaes High School under Mr M. Punti B.A as its founder teacher Pt. Markandya Jha and Br. M.M. Punti joined him soon.

In January 1943 Mr. J. Barla M.A, B.D. Dip. in-Ed. arrived here as a ~~Principal~~ Headmaster and continued till September of the same year, when he was succeeded by Mr. P.S. Vengra as offg. headmaster. Messrs, M. Jha and M.M. Punti left the school and Messrs. J. Kujur. R. Kerketta S. Misra and Mrs C.M. Barla joined the staff about June.

In 1944 February Rev. B. Minz joined the staff as headmaster.

In 1945 Mrs C.M. Barla left ~~the~~ the school and Mr. P.D. Bara B.A. Dip-in-Ed, Mr. M.M. Punti and Mrs. I. S Khalkho joined the staff.

To-day in January 1946 the staff consists of Messrs, B. Minz, P. Bara, R. Kerketta, J. Kujur, V. Topno, N. Tuti, B. Misra and Mrs, I. S Khalkho.

II Recognition.

In 1943, though all the four classes of H.E. section were in existence only the VIIIth & IXth classes were recognised by the Board of Secondary Education the Xth and XIth classes were ordered to be started afresh & in 1944 and 1945 respectively which was promptly followed up by the school authorities by restarting these classes again at the first chance.

On the 12th November 1945 the whole school was recognised as a high School by the Board of Secondary Education, Patna, by virtue of which 22 pupils have been sent up for Matriculation Examination forming the first batch of Matriculate candidates from this school.

III Building Extensions.

(1) The East wing was extended in 1943. (2) The West Wing was extended in 1944 (3) The Western Block running North South in length

was built in 1945. All the expenses have been met by the Ilaka by special contributions. Only in 1944 the Church Council contributed Rs. 300/- towards this building expenditure.

IV. Need of further buildings.

(1) A hall, a library, teachers quarters and hostel extension are most urgently needed. Furniture is still more urgently needed.

V. Finance.

Except for some help from the Church Council the school has been a self supporting institution, so far. If the full staff comes into existence, about Rs. 150/- p.m extra at least will be required from the Government or the Church Council or the public.

VI. Number of pupils.

The total number of pupils have been in 1942 — 69, in 1943 — 216, in 1944 — 230 and in 1945 — 262.

VII Total Income and Expenditure:- for all the years

In order to give brief pictures of income and expenditure of the school in all these four years, the following figures are given.

	Income	Expenditure
1942	Rs. 1035	Rs. 911
1943	Rs 4300	Rs 3854
1944	Rs 5570	Rs 5360
1945	Rs 7550	Rs 7044.

B Manin Ud...
2. 2. 1946

This report was read on the occasion of school dedication on. 15. 1. 46
Bm.

Brief History of CHAINPUR ILAKA

By. Rev. C. J. P. D. Tirkey
Ilaka Chairman
Chainpur

बरवे प्रगने में उरांव लोग वासिन्दे हैं। यहां के उरांव गरीब रैयतों को बहुत ही तखलीफ जमीन्दारों के जरिये मिलती थी। दुःख बिपत्ति में भूतों को सन्तुष्ट करना तथा जमीन्दारों की क्रूर सताहट से ग्रपढ़ जनता ऊब गई थी। जनता के मन में छुटकारे की भूख-प्यास जाग उठी थी। इतने में R.C.M. का फादर Lybin ने बरवे में मिशन काम ग्रारम्भ किया। पहला तम्बु उसने बेन्दोरा नाम भारी गाँव के पास ~~उसने~~ खड़ा किया ग्रौर कितने २ गांव के लोगों को ग्राम डहुड़े से छिड़क २ कर बपतिस्मा दिया। लोगों की भूख-प्यास देख कर उसने समूचे बरवे घूम२ कर खिस्तान किया, ऐसा कि वर्त्तमान में R.C.M. की संख्या ५० और ६० हजार के भीतर है।

उन्हीं दिनों में नवागढ़ परगने के काशीर मौजे के रैयतों ग्रौर जमीन्दारों के बीच मुकदमा चलती थी। मुकदमा लड़ने के लिये लोहरदगा जाना पड़ता था चूंकि गुमला में कचहरी न थी। भाइ लोगों ने किसी तारिख में लोहरदगा के लूथेरान मिशनरी के शरण ग्रा कर ग्रपनी बेचैनी प्रगट किया। उन्हों ने बतलाया कि हमारे कोई सिर न ग्रगुवे हैं और जमीन्दारों से बहुत दुःख पा रहे हैं। लूथेरान मिशनरियों ने इन की ठिकाना ग्रो हालत बूझ कर कहा कि ग्रच्छा दूसरी मुकदमा की तारिख में हम लोगों को खबर देना, देखेंगे कुछ मदद देने सकेंगे। उन्हों ने वैसा ही किया। फिर मिशनरियों ने यह भी उन्हें बतलाया कि इसके ग्रलावे प्रभु यीशु मसीह में पूरी छुटकारा है सो उन्हों ने लूथेरान मंडली में ग्राने की बात किये।

लोहरदगा से मान्यवर पाद्री W. Kiefel और हान साहेबों ने ग्राकर १८८२ और ८२ साल में ग्राकर कोबीटोली, के काशीर जेदो और जमगांई के ४६ घर के लोगों को बपतिस्मा दिया। १८८३ ई॰ में मान्यवर पाद्री G. Ekkert साहेब बरवे में प्रवेश कर चैनपूर में ग्रपना तम्बु खड़ा कर के धर्मप्रचार ग्रारम्भ किया। चारों तरफ से लोग ग्रा २ के प्रभु का बचन-प्रचार सुन के खिस्तान धड़ाधड़ होने लगे ऐसा कि R.C.M. के लोगों ने भी लूथेरान मत ग्रहण करने लगे। १८८३-८४ के भीतर चैनपूर, डुमरी, खटंगा, केमटे, काटू, कुदोकेल, लोटाकोना कितम, मड़ाईकोना ग्रौर पुलुक के लोगों ने प्रभु का बचन ग्रहण कर के बपतिस्मा लिया। मिशनरियों ने लड़के लड़कियों को शिक्षा देने के लिये चैनपूर में स्कूल भी खोल दिया। मंडली साल २ बढ़ने लगी। चैनपूर में साहेबों ने तुरंत एक सुन्दर गिर्जा घर की नेव डाली और स्कूली छात्र छात्रिकायें घर बनाने में खूब काम किया। १८०० ई॰ में सुन्दर गिर्जे घर की संस्कार हुआ। इस गिर्जे में ग्रासपास के प्रायः सभी गांव के लोग गिर्जा ग्राते थे i.e., मड़ाईकोना, डड़गांव, जयपूर, चैनपूर बस्ती, बरटोली, रामपूर ग्रौर कुंदीकेल।

मान्यवर G. Ekkert और Schnow साहेबों के कठिन परिश्रम से १८८३ से १९१२ ई॰ के अन्दर बपतिस्मा पाये हुओं की संख्या ३,००० हो गया जो ८२ भिन्न गांव या टोलों में बसते हैं। इन के साथ दो देशी पाद्री कुशलमय और पुरणप्रसाद भी थे। चैनपूर मिशन स्टेशन के अलावे जेदो और पुलुक दो सेन्टर भी बनाये गये। पुलुक में पाद्री पुरणप्रसाद मिंज थे। जेदो में कोई न थे पर चैनपूर ही से देख भाल ~~करते थे~~ किया जाता था।

१९१३ ई॰ में मान्यवर G. Ekkert साहेब छुट्टी बिताने जर्मनी लौटे उस की जगह मान्यवर W. Dehmlow चार्ज में ग्राये। इस बरस में पुलुक का सेन्टर उठा के ग्रामगांव में लाया गया और पुरणप्रसाद पाद्री हो ग्रामगांव में रहे। सेन्टर के ग्रदल बदल के कारण पुलुक, डेबीडीह, बिकेरा और ग्रांबवा टोली के भाइयों के बीच झगड़ा हुआ और दो दल हो गये। ग्रनबनाव बढ़ गई ग्रौर

बहुत से भाई बहिन इन मंडलियों से डुबको मिशन में चले गये। पीछे धीरे२ दो एक घर को छोड़ सभी लौट गये। फिर चैनपूर आसपास के ख्रिस्तान भाइयों में भी ख्रीष्टीय आचरण सम्बन्धी असन्तुष्टता पैठ गई। सो १९१४ ई० में महायुद्ध आरम्भ के कारण मंडली की दशा और ही सोचनीय हो गई। १९१५ ई० में जब मिशनरी लोग ले लिये गये तब मंडली डवांडोल हो गई और चैनपूर आसपास के टोले महल्ले के ख्रिस्तान लोग बिलकुल रोमी कलीशा में चले गये। ऐसी दशा में C.M.S. मिशन का पादरी W.E. Napeer Munn साहब चैनपूर आकर मंडलियों का देख भाल किये। बिमारी की वजह से वे केवल १० महिना काम कर के चले गये। उनके बाद लोहरदगा से S.P.G. मिशन का पादरी हैरिश साहब मंडली की देख भाल निमित्त आया करते थे।

ऐसी कठिनता में पड़ कर सेवकाई की जोर हिल गई। देशी पादरियों की पालन पोषण में भी भारी मुशकील हो गयी। जो भी हो इलाका में प्रभु के मंडली की सेवकाई सम्भालने के लिये आमगांव से पादरी पुरणप्रसाद मिंज आ गये। १९१२ ई० में पादरी धनकुंवार टोप्पो जदो में रखे गये थे सो इलाका में केवल दो ही पादरी थे। ऐसी दशा में आमगांव खाली रहा जो १९२० ई० तक थी। १९२१ ई० में पादरी जयमसीह मिंज चैनपूर भेजा गया सो पुरणप्रसाद मिंज आमगांव लौटे। उस समय तक में ५५१ घर ख्रिस्तान थे। औटोनोमी की जमाना आई। पादरियों की प्रतिपालन में निहायत ही कठिनता हुई। ऐसी हालत में Rev. J.M. Minz १९२४ ई० में जशपूर हेठघाट भेजे गये। और Rev. D.K. Toppo चैनपूर आये और जदो खाली रखा गया। १९२६ ई० में फिर Rev. J.M. Minz हेठघाट से चैनपूर लाये गये और पादरी धनकुंवार जदो लौट गये। इसी वर्ष में डालटेनगंज के छेछाड़ी प्रगने से २,३ भाई चैनपूर आये। उन से बात चीत करने से मालूम हुआ वे रोमन मिशन में थे किसी कारण उलट कर १०,१५ बरस तक संसार ही रहें पर मन में सच्चे धर्म की भूख प्यास है। सो १९२६ के माई महिने में Rev. J.M. Minz चर्च कौंसिल से छेछाड़ी भेजा जा कर मिशन काम आरम्भ किया जिस में और १८ या २० घर ख्रिस्तान हुए जो अब तक हैं।

लौकिक कठिनता के कारण मंडली पालन में इस इलाके की दशा आरम्भ की अपेक्षा निहायत ही घट गयी। १९१३ - १९३६ ई० तक के अन्दर ६९ गांव के ख्रिस्तानों में से २१, २२ गांव या टोले के लोग R.C.M. में चले गये। मंडली की बढ़ती इधर सलाना औसत केवल २ या ३ ही होते आया। १९३२ या ३३ ई० में मिशनरी फिर आये। The Late Rev. A. John किनकेल से चैनपूर आये तब स्टेशन में जो नौकर चाकर ख्रिस्तान चैनपूर में थे उन में कुछ शांति आई। उसने पहले स्टेशन की उजड़ी दशा पर ध्यान दे कर सुधार बढ़ाया। उसने एक तलाब खोदना आरम्भ किया जो आज तक पूरा नहीं हुआ और एक बगान और कुंवा सापी नदी के किनारे खोद कर आम की बगीचा लगाया है। ~~वर्तमान में~~

चैनपुर इलाके में १९२६ – ४४ ई० तक ~~के~~ में Rev. Nathaniel Khalkho Late Rev. Immanuel Kujur, Late. Rev. A. Johna और Rev. Johan Toppo आये। इतने बरसों के बीच Mass movement से खीस्तान न हुए और वैसा उमीद कम है।

समय के उलट फेर से ओटोनोमी पर ज्यादे ध्यान पड़ा और राज्यवृद्धि काम में अड़चन पड़ गई है। आमगांव और जदी के वृध पाद्रियों के परलोक वासी होने पर दोनों पेरिश खाली रहा। १९३६ – ३८ ई० तक Rev. J. Toppo अकेले रह कर मंडलियों को सम्भाले। सहायता के लिये Rev. J. M. Minz पेन्सनर अपने ही घर से काम के लिये लगाये गये थे। १९३९ ई० के फरवरी महिने में Rev. C. J. P. D. Tirkey आमगांव पेरिश में भेजे गये। Rev. J. Toppo Ilaka chairman & Rev. C. J. P. D. Tirkey ने १९४४ ई० तक के अप्रील तक इलाके की चरवाही की। उक्त महिने में Rev. J. Toppo की बदली हो गई। ~~Rev. J~~ उस के चले जाने से आमगांव के पाद्री को इलाका चेयरमैन ~~कर~~ बना कर C.C. ने चैनपुर भेजा। १९४५ के ~~मार्च~~ अप्रील ~~कि~~ तक फिर दोनों पेरिश खाली रहा। बाद मांई महिने में Rev. Premsukh Kujur आमगांव भेजे गये।

बर्त्तमान चेयरमैन की उद्योग से आमगांव स्टैपेन्डियरी पू० पा० स्कूल जो डिपार्टमेन्ट से ~~घ~~ उठा कर L.P. कर दिये जाने पर था सो १९४४ में फिर ठहराया जो कर स्थिर किया गया और पक्का स्कूल मकान बनवाया जो प्राय: तैयार है। फिर १९४५ ई० में चैनपुर स्टेशन में M.E. स्कूल Mr. J. K. Khalkho B.A. प्रथम हेडमास्टर नियुक्त हुए और डिपार्टमेन्ट से मंजूर कराया जो कर एक पक्का स्कूल मकान बनाने का काम आरम्भ किया गया है। प्रभु का अनुग्रह हो और कलीसा के ऊंच संस्था की सहानुभूति और सहायता होवे तो ~~अ~~ यह काम भी सफल होगा। अभी स्कूल की रोल संख्या २०० से ऊपर हैं जिन में संसार और रोमन छात्र छात्रिकायें ५० से ऊपर पढ़ते हैं। M.E. स्कूल जब बन के सुयोग्य रीति से चलेगा तब ओटोनोमी में तथा राज्यवृद्धि में बढ़ती की आशा दिख रही है। तौभी इलाके में सब बातों तथा कामों की बढ़ती का भार प्रभु के जीमे ही है।

१९४५ में इलाका की जनसंख्या ४२१५ छकाडो और दूसरी मंडलियों को छोड़ के है। १८ खास प्रचारकपन और उन में तीन सहायक दिये गये हैं। जिन में ७३९ घर और २३६८ दृढीकृत हैं। इलाके की संस्था में। Rev. C. J. Tirkey (I. chairman) 2. Bu. J. K. Khalkho B.A. H.D.M. (I. Secty.), 3. Bu. N. Ekka B.A. Dip. in Ed. S.T.S. (Treasurer) 4. Bu D. Tirkey. 5. Bu. J. Kerketta, 6. Bu Dh. Bara. 7. Bu. Y. Kujur. 8. Rev. P. S. Kujur 9. Cate. J. Toppo, 10 Cate. Christopal Ekka, 11. Cate. P. Ekka. 12. Rev. Jh. Kujur और 13 Rev. J. M. Minz हैं। ~~ये~~ यह ~~संगठन~~ संस्था पूरी संगठन के साथ बीते दो सालों से ~~हो के~~ यत्न से काम कर रही है। अब तक दो पेरिश है। पेरिश की शक्ति यों है अर्थात आमगांव ३५१ घर और चैनपुर ३८८ घर हैं। १९४५ जुलाई से फिर जदी में पेन्सनर पाद्री J. M. Minz को C.C. ने भेजा है। अगरचे जदी में पेरिश रखा ही जाय तब वहां २१२ घर होते हैं और चैनपुर में केवल १७६ घर होते हैं जब कि आमगांव एक में ३५१ हैं घर हैं। यहां पर कलीशा की ऊंच संस्था अर्थात् चर्च कौंसिल ~~अपनी~~ विचार में साफ नहीं है जिस के कारण यहां की मंडली को ठोकर दे कर प्रभु के राज्य की वृद्धि को रोक रखेगी! अतएव काम में अभी जैसा जोश पैदा किया गया है उसे बढ़ाने तथा स्थिर करने के निमित्त चैनपुर इलाका के सम्बन्ध का Administrative resolution के सुधार की जरूरत है।

Chaibassa (1)

इलाका का संक्षेप इतिहास।

सिंहभूम ~~जिला~~ छोटानागपुर के पांच जिलों से अजीब जिला है। यह जिला नीचे स्थान पर स्थित है जहां पहाड़ पर्वत और जंगल झाड़ हैं, जहां अनेक प्रकार के खनीज पदार्थ और इसप्रकार कैसे अनेक कारखानों से भरा है।

यहां के आदिवासियों में, हो, सन्ताल, उड़िया और गौड़ आदि अनेक जात के लोग रहते हैं जिनमें मुख्य हो हैं। यहां के वासियों का जैसा देश तैसा मन भी है। अन्दाज ~~19~~ 1920 ई० ~~तक~~ १९२० ई० तक प्राय: सभों के ध्यान से बाहर था। पर थोड़े दिनों से सरकार महोदय भी जिला के अन्दर अनेक छोटे २ स्कूल और ऊंच श्रेणी के स्कूलों को खोलकर यहां के वासियों को ज्योति में लाने का जोरों से ध्यान दे ~~रही हैं~~ रहे हैं और अनेक खानों और कारखानों में काम करने के द्वारा अनेक देश और जातियों के मनुष्यों की संगति से होते होते सभ्यता की पोसाक पहिन रहे हैं।

धर्म के विषय में ~~168~~ 1861 से काम आरम्भ है। 1866 तक में यहां के वासियों ने धर्म ग्रहण करना आरम्भ किया। 1861 में रांची जिला के खुटी थाना के दरला का जुनी नवचैन जो हाल के हमारे Rev. Sh. Tim Tujur के पिता थे और बुका आनन्दिदास जो मृत Rev. Nottrott Tim Buya Burjn के पिता थे पेन्डुगड़िया, डुकुरडिया, सिमजंगा, तोमडीह

P.T.O.

बड़ी बाजार, बोरकेला, गोइलकेरा, सुनुवा, कुम्परपुर, कोचांग तेबो, पोगाहट, गुदड़ीपीड़ और गिरगा आस पास ईश्वर का वचन प्रचार किया। अनेक बार दो लोग इन भाईयों को बलुवा से मार डालने चाहते थे। फिर उस समय कहीं सड़क नहीं थी बाघ भालू का बड़ा भय था। एक बार जब वे प्रचारने निकले तो बीच जंगल में रात हो गये। वे थोड़ा नास्ता खाकर गाछ पर चढ़ गये और वहां ही तकलीफ उठाकर रात बिताये। बिहान को ईश्वर की दया का स्मरण करते हुए गाछ पर एक पत्थर रखा। अब तक वह पत्थर बोरकेला के निकट सड़क के किनारे कौठा गाछ पर दिखाया जाता है।

ये दोनों नथनैल और अदुपस चैंवसा से कारवारी तक ईश्वर का पवित्र वचन प्रचारा। ईश्वर अपने दासों के लिये आप ही मार्ग तैयार करता है। यह बात नीचे लिखे वर्णन से प्रमाणित है। एक दिन की बात है कि कारवारी के एक भाई को रात के समय ईश्वर ने दो मनुष्यों को अपनी ज्योति देकर दिखाया, ये दो मनु[ष्य] पुस्तक खोल कर कुछ बातें बोल रहे थे। इस बात को उस भाई अपने परिवार को कह सुनाया। थोड़े घन्टों के बाद जुनी नथनैल और बुढ़ा आल्दुपस ईश्वर का वचन प्रचारने को पहुंच गये। उन दो मनुष्यों को देख कर उस भाई ने उनसे कहा कि रात को ईश्वर ने आप दो लोगों का दर्शन दिया सो

जिस बात के लिये आये हुए हैं सो बोलिये। ये प्रचारक बनम और बसुली लेकर सुन्दर २ गीतों को गाया समूची घराना को ईश्वर का वचन प्रचार किया। सारी घराना ने ईश्वर पर विश्वास किया और उस भाई ने Christ Kaleyan नाम पर पवित्र स्नान ग्रहण किया।

थोड़े दिनों के बाद जुनी नवनैल आटबारी का प्रचारक नियुक्त हुआ। उनके धर्म प्रचार से बहुतों ने धर्म ग्रहण किया। जैसा आज तक सिंहभूम जिले में मानकी साहबों की बहुत भारी प्रभाव है वैसा ही उन दिनों में भी थी। जुनी नवनैल भी आटबारी के मानकी साहब से बहुत सताया गया पर ईश्वर ने उस मानकी साहब को अपने लिये जीत लिया। उनके खृस्तान होने से आस पास के सब टोले वाले खृस्तान हुए।

पीछे जुनी नवनैल और बुका आनन्दिदास थोड़ी शिक्षा पाकर पादरी बनाये गये। जुनी नवनैल को पिंडिंग तब नुजर भेजे गये जहां 1893-1894 में ईश्वर का वीर योद्धा प्रभु के विश्राम में सो गये। वैसा ही बुका आनन्दिदास भी टेकाद तब कोपोंसा में भेजे गये वहां ही उनकी भी मृत्यु हुई। उनके बाद जुनी नवनैल का बेटा Rev. Sh. Tim Tujine पादरी बनाये गये जो अब तक जीते हैं और बुका आनन्दिदास का बेटा Rev. Nottrott Tim पादरी बनाये गये थोड़े वर्ष बीत गये उनकी

मृत्यु तुर्जू में हुई।

उन दिनों में चैंबसा में हता का बन्दोबस्त नहीं था। 1865 में Kriger साहब और Paul Struve चैंबसा भेजे गये। Paul Struve साहब एक ही वर्ष के भीतर हैजा बिमारी से ~~मृ~~ प्रभु में सो गये। चैंबसा इलाका में इन्हीं का मृत शरीर ईश्वर का था ऐसा ~~द~~ चैंबसा ही में Upman साहब द्वारा सनातन ~~कि~~ प्रभु के आने तक के लिये विश्राम में रखा गया है। Kriger साहब और Paul Struve साहब इन्हों ने चैंबसा ~~इलाका~~ हता का कुछ हिस्सा और एक दो बांगलाओं को 1500/रु. में खरीदा पीछे और खरीदा जाय आज हम सुन्दर हता पाते हैं।

चैंबसा इलाका की वर्तमान स्थिति बहुत सोचनीय हो गई है। अभी दो पेरिश अर्थात टेबाद और तुजूर अलग इलाका कर दिये गये हैं। हाल में चैंबसा, चक्रधरपुर और जमशेदपुर पेरिशों से चैंबसा इलाका बनाई गई है। इस इलाका के अन्दर हमारे पुराने ख्रिस्तान अनेक S.P.G. Church और अनेक R.C. church के शरण लिये हुए हैं और अनेक यहां के मानकी मुण्डों के दबाव के कारण उलट हुए हैं, कोई हैं जो अभी तक अपनी माता मण्डली में रह गये हैं पर खानों में और कारखानों में रांची जिला से अनेक ख्रिस्तान आकर यहां की संख्या बढ़ाये हुये हैं। 1944 के मर्दुमसुमारी अनुसार हो बपतिस्मा पाये हुए - - 403. हैं

और बाहर जिलों से आये हुए मुण्डा, उरांव वपतिस्मा पाये हुए खृस्तानों की संख्या 1816 . . है और हिन्दु मुसलमान वपतिस्मा पाये खृस्तानों की संख्या 168 . . है कुल जमा सिंहभूम जिले में वपतिस्मा पाये हुए खृस्तानों की संख्या 2901 — है।

List of the Missionaries worked in Chaibassa Ilaka.	List of the Pastors worked in Missionary time
(1) 1865 Kriger and Struve	1861–1866 Babu Jumi Nathaniel Tim + Babu Burka Andrias Tim
(2) 1866–76 Rev. A. Nottroth.	
(3) 1877–1882 Rev. W. L. Voss.	1877. Malaki
(4) 1883–1886 Rev. W. Dedlaocis	1881. Johan.
(5) 1887–1892 Rev. P. Eiduess	1887–1895 Rev. Daud Sockay
	1893 – Suleman Asna.
(6) 1893–1900 Rev. E. Wueste	1896–1903 Rev. Haskas Topno
(7) 1901 — 1903 Rev. Diller	1904. Petros candidate
(8) 1904 – 1905 Rev. E Wueste	1904–1906 Daud Soha
(9) 1906–1907 Rev. H. Klain	1905 – Prabhusahay Mankey.
(10) 1908 – 1908 Rev. H. Hehel	
(11) 1910 — Rev. Klain	
(12) 1911 — Rev. K Beieman	

(6)

List of the Missionaries
worked in Chaibassa Ilaka

(13) 1902-1915 Rev. P. Wueste. 1915-1923 Martin Horad.

List of the Pastors

1, Rev. Dh. Tiru
2, Rev. Santosh Munda
3, Rev. ~~Paulus Balan~~ John Baba, 4 Daniel Horo,
5 Rev. Christochit Guria. 6 Mansidh Purti
7 Rev. Christ Kalyan Guria.
8 6, Rev. Nathanial Munda
9 7 Rev. Santosh Surin
10 8 Rev. Mansukh Hanki
11 9 Rev. Namjan Horo
12 10 Rev. Luther Kongari
13 11 Rev. Martin Horad
14 12 Rev. Paulus Tirkey
15 13 Rev. Luther Jojowar
16 Rev Christ Kalyan Bhengra.
17 14 Rev. Samuel Hansdah
18 15 Rev. Markas Sanga

~~16~~,19 Rev. Suleman Kula
~~17~~ 20 Rev. Dharmdas Guria.
~~18~~ 21 Rev. Thomas Topono
~~19~~ 22 Rev. Martin Aind

Th. Topono.
Ilaka chairman Chaibasa,
8-2-46.

लोअर आसाम इलाके का संक्षिप्त इतिहास।

लेखक:- पाद्री हनुक मिंज, तेजपुर, आसाम।

सन् १९०१ ई० आसाम में गोस्सनर लूथेरान कलीशिया की स्थापना। छोटानागपुर के
लूथेरान भाईयों का आसाम के चाय बगानों में काम करना। एग्रीमेंट की समाप्ति
पर आसाम ही में बास करना। इनके द्वारा रांची छोटी सभा में अर्जी पेश करना कि
इनकी चरवाही के लिये कोई पाद्री भेजा जावे। छोटी-सभा के द्वारा, पाद्री जांच
करने के लिये पाद्री आनन्द मसीह सोय का आसाम भेजा जाना। इनके रिपोर्ट से
सन्तुष्ट हो छोटी-सभा का होम बोर्ड को लिखना कि एक योग्य मिश्नरी भेजा
जावे कि वह आसाम में काम करे। होम बोर्ड की आज्ञा पर, रांची छोटी
सभा द्वारा सीनियर मिश्नरी एफ० हाहन का आसाम भेजा जाना। पाद्री एफ० हाहन
का १२००)रु. में अपने रहने के लिये जोरहट रेल स्टेशन के निकट एक बंगला मोल
लेना। इनके द्वारा आसाम में मिशन स्थापित करना आवश्यक समझा
जाना इसलिये इनकी सहायता के लिये मिश्नरी पाद्री पी० वागनर का जोरहट
भेजा जाना।

दोनों मिश्नरियों द्वारा जोरहट को अपने काम का केन्द्र बनाना। अपने कामों को
आपस में बांटना। पाद्री हाहन ऊपर आसाम की मराडलियों का और पाद्री वागनर
लोअर आसाम की मराडलियों का। बार बार अस्वस्थ्य रहने के कारण पाद्री वागनर
का रांची लौट आना। इनके स्थान में मिश्नरी पाद्री कार्ल बेकमन का भेजा जाना।
परन्तु इनके आने पर पाद्री हाहन का रांची लौट जाना। इसलिये पाद्री बेकमन की
सहायता के लिये पाद्री फ्रान्ज ग्रैत्स का जोरहट भेजा जाना।

ये दोनों मिश्नरियों का यहां काम करना। लूथेरान ख्रिस्तानों की संख्या बढ़ना।
इसलिये डरांग जिले के बैठाभंगा बस्ती में एक नया हाता बनाने की आवश्यकता
पड़ना। जरमनी से मिशन डैरेक्टर एच. कौश का आसाम की मराडलियों को
देखने के लिये १९०५ ई० में आसाम आना। इनके द्वारा बैठाभंगा बस्ती में नया हाता
और एक बंगला बनाने की इज़ाजत। इन कामों को करने के लिये पाद्री
ग्रैत्स का अपने ऊपर भार लेना। किन्तु १९०६ ई० में ग्रैत्स साहिब का कालाज्वर
से पकड़ा जाना और लोकान्तर होना। इनकी जगह में इनके छोटे भाई
मिश्नरी फार्दिनन्द ग्रैत्स का काम करने की इच्छा प्रगट करना। पाद्री बेकमन
साहेब का छुट्टी में जर्मनी लौट जाना। छोटी-सभा के द्वारा मिश्नरी पाद्री
डबल्यू रदसिक का इनकी जगह में भेजा जाना।

इन दोनों मिश्नरियों (मिश्नरी पाद्री फार्दिनन्द ग्रैत्स और डबल्यू रदसिक)
का जोरहाट में एक साथ रहना और आसाम की मराडलियों को
सम्भालना। दोनों मिश्नरियों का प्रतिबरस प्रचारकों के धर्मज्ञान
की बढ़ती के लिये शिक्षा क्लास करने में ध्यान देना। १९०८ ई० में बेर्लिन
होम बोर्ड से और एक मिश्नरी पाद्री एफ़ गोहलके का आसाम भेजा जाना।
पाद्री एफ़ गोहलके के द्वारा बैठाभंगा गांव
में एक मिश्नरी बंगला और गिर्जा घर का निर्माण किया जाना।

१९०८ ई० में पाद्री फार्दिनन्द ग्रैत्स और पाद्री डबल्यू रदसिक की शादी।
शादी के पीछे पाद्री एफ़ ग्रैत्स का रांची लौटना। इनकी जगह पर
पाद्री कार्ल बेकमन का जर्मनी से लौट कर आना। १९०९ ई० में तिनसुकिया
शहर के निकट रदसिक द्वारा एक बंगला बनवाया जाना। उस बंगले में
रदसिक का रहना और प्रभु का काम १९१५ ई० तक करना।

सन् १९१२ ई० में पाद्री बेकमन साहेब का बिमार पड़ना और रांची
बुलाया जाना। उनके चले जाने पर पाद्री रदसिक का उनका काम भी
सम्भालना। पाद्री रदसिक की मूल चिन्ता यह थी कि सब ख्रिस्तान भले
मसीही बनें।

१९१४ में महासमर का आरम्भ। युद्ध छिड़ते ही मिशनरियों का सरकार द्वारा कलीशा से अलग किया जाना। कलीशा का असहाय अवस्था में पड़ना और अनेक परीक्षाओं का सामना करना। मिशनरियों के जाने पर ऊपर आसाम की मराडलियों की देखभाल पादी अब्राहम तोपोनो द्वारा और लोअर आसाम की मराडलियों का देखभाल पादी योहन होरो द्वारा किया जाना।

युद्धकाल के दिनों में सारी कलीशा की दुःखमय अवस्था। अन्य मिशनवालों का लूथेरानों को अपनी कलीशा में मिलाने की चेष्टा करना। किन्तु १९१९ ई० की १०वीं जुलाई में छोटानागपुर और आसाम की गोस्सनर एवंजेलिकल लूथेरान कलीशा का ओटोनोमी घोषित करना और विश्वास में स्थिर होना। रांची से पादी हनुक दत्तो का आसाम भेजा जाना। इनके द्वारा भाइयों का स्थिर होना। ऐसे संकट की अवस्था में भी लूथेरानों के संख्या की बढ़ती।

मिशनरियों के रहते समय ही लोअर आसाम में नोर्थ लखिमपुर सबडिविजन के देवबिल बस्ती में एक पादीपन का खोला जाना। पादी योहन भेंगरा का यहां रहना। इनका लोकान्तर होना। युद्ध काल के दिनों में मराडलियों को सम्भालने का कठिन भार अब्राहम तोपोनो (ऊपर आसाम) और योहन होरो (लोअर आसाम) के ऊपर सौंपा जाना। इन्हों का बड़े परिश्रम के साथ भाई बहिनों को समझाना और स्थिर करना। पादी भेंगरा की मृत्यु पर पादी अब्राहम तोपोनो देवबिल आना और इनके स्थान पर पादी हनुक खलखो का छोटानागपूर से भेजा जाना। देवबिल का पादीपन ठीक स्थान में न होने के कारण पादी अब्राहम तोपोनो का चांदमारी में एक नया पादीपन खोलना। नवांगांव जिले के लूथेरानों की चरवाही के लिये बाबु सुलेमान सरकार का पादी पदाभिषेक होकर ठहराया जाना।

पादी योहन होरो को बहुत काम होने के कारण सहायक बनाने के लिये प्रचारक बाबु सिलास होरो का रांची सेमिनरी में भेजा जाना। अपनी शिक्षा पूरी कर पदाभिषेक पाना। पीछे पादी सिलास होरो का बैठाभंगा भेजा जाना। बैठाभंगा से पश्चिम में मराडली का बढ़ना। इसलिये पादी सिलास होरो का बघराशांतिपूर में एक नया पादीपन खोलना। इनके काम पर ईश्वर ने बहुत आशीष दी। इनका काम पश्चिम में और भी बढ़ते गया। कुछ वर्षों के बाद पादी योहन होरो की मृत्यु और सिलास होरो का इनका काम भी १९३० ई० तक सम्भालना।

१९३१ में फिर मिशनरी पादी डबल्यू रदसिक का जर्मनी से आसाम आना और बैठाभंगा हाता में रहना। चर्च कौंसिल द्वारा आसाम की मराडलियों को चलाने के लिये छोटी-सभा का निर्माण किया जाना। पादी रदसिक का इस सभा का चेयरमेन और समूचे आसाम इलाका का इलाका चेयरमेन होना।

कुछ पादी डबल्यू रदसिक और पादी सिलास होरो का एक साथ मराडलियों को देखने जाना। परिश्रम के साथ मराडली के भाई बहिनों को आत्मिक जीवन और आत्मपालन में बढ़ाना। मराडली में प्रार्थना समाज, संयम समाज और सरोड स्कूल जारी रखना। कई स्थानों में धर्म सभा करना।

ऊपर आसाम का काम पादी सिलास होरो के लिये अधिक होना। इसलिये बाबु येशन तिडु का रांची सेमिनरी में कुछ महिनों तक शिक्षा प्राप्त करना। इनका पादी पदाभिषेक पाना और बैठाभंगा पेरिश की आजतक चरवाही करना।

तिनसुकिया के पाद्री हनुक खलखो की मृत्यु। इनके स्थान में चर्च कौंसिल द्वारा पाद्री लुकस हेड़ेंज का भेजा जाना। कुछ समयों के बाद इनकी बदली चांदमारी में होना और इनकी जगह पर फिर पाद्री अब्राहाम तोपोनो का आना। पाद्री लुकस हेड़ेंज का चांदमारी में स्वर्ग लोकान्तर होना। इस कारण पाद्री अब्राहाम तोपोनो का अपने पुराने स्थान में लौट जाना। और घघराशांतिपुर में रहनेवाले पाद्री का पाद्री अब्राहाम तोपोनो की जगह पर तिनसुकिया आना। नवांगांव पेरिश के पाद्री सुलेमान सरकार का घघराशांतिपुर पेरिश के कामों को सम्भालना।

कुछ बर्षों बाद पाद्री सिलास होरो का फिर घघराशांतिपुर पेरिश में आना। ~~इस समय इन्हीं का खिस्तान पाड़ा बस्ती में अपने लिये घर बनवाना~~ तिनसुकिया पेरिश के लिये पाद्री पौलुस पुर्ती का ठहराया जाना।

जोरहट का बंगला का गिरना। कोई ऐसा हाता नहीं था जो आसाम क्षेत्र के कामों को चलाने के लिये केन्द्र स्थान बन सके। सन् १९३४ ई० के ओक्टोबर महीने में सेस्य नामक चाय बगान के मेनेजर साहब Mr. Hugh Dinning का अपना बंगला और कुछ जमीन जो तेजपुर शहर के निकट था गोस्सनर कलीशिया को दान देना। जनवरी १९३५ ई० में रजिस्ट्री होने के द्वारा पूरी होना। बंगला और जमीन के मिल जाने पर पाद्री डबल्यू रदसिक का बैठाभंगा हाता छोड़ना और तेजपुर नया हाता में आना। अब यही स्थान आसाम क्षेत्र के कामों को चलाने का केन्द्र स्थान है।

१९३६ ई० में पाद्री डबल्यु रदसिक का चर्च कौंसिल द्वारा रांची ~~बुलाया~~ बदली किया जाना। इनके स्थान पर मिशनरी पाद्री जे० शेरनात का तेजपुर आना। कुछ महिनों के आगे और एक नये मिशनरी पाद्री डबल्यु कुम्बर्तस्की का बैठाभंगा भेजा जाना। तेजपुर में एक लोअर प्राईमरी स्कूल का खोला जाना और कई घरों का निर्माण। प्रति बरस पाद्री जे० शेरनात का तेजपुर में प्रचारकों का शिक्षा क्लास करना। कुछ बरसों के पीछे दोनो पाद्री जे० शेरनात और डबल्यु कुम्बर्तस्की का बिमारी के कारण जर्मनी लौट जाना। इस कारण फिर पाद्री डबल्यु रदसिक का भेजा जाना। इनके आने पर तेजपुर में स्कूल घर, बोर्डिंग घर और मास्टरों के रहने के घरों का निर्माण।

इन्हीं दिनों में चर्च कौंसिल द्वारा कन्डिडेट हनुक मिंज का आसाम क्षेत्र में काम करने के लिये भेजा जाना। इन्हीं का तेजपुर स्कूल में धर्म-शिक्षा देना।

सन् १९३७ ई० में पाद्री अब्राहाम तोपोनो का पेन्शन ग्रहण करना और पाद्री सुलेमान सरकार की बदली। इस पर कन्डिडेट हनुक मिंज का पाद्री पद पाना और इनका चांदमारी ओ नवांगांव पेरिसों को देखने के लिये ठहराया जाना। सन् १९३९ में नये मिशनरी पाद्री एच० बोरख्ता का तेजपुर आना। ~~पर थोड़े दिनों के बाद १९३९ के सेप्टेम्बर~~ से इसी साल के सेप्टेम्बर महीने में दूसरी महायुद्ध का छिड़ना ~~छिड़ना~~। इस कारण दोनों मिशनरियों का नजरबन्द में रखा जाना और पुरुधार कैम्प भेजा जाना। ऐसी आकस्मिक घटना के कारण पाद्री सिलास होरो का आसाम छोटी-सभा और आसाम इलाका का इलाका चेयरमैन ठहराया जाना। और हनुक मिंज का आसाम छोटी सभा का सेक्रेटरी होना। पाद्री हनुक मिंज का चांदमारी और नवांगांव पेरिसों को छोड़कर घघराशांतिपुर पेरिस का काम देखना।

ऐसी कठिनाई के कारण पुराने पादरी अब्राहम तोपनो को फिर ~~से~~ से चांदमारी ~~मेल~~ पेरिस का काम सौंपा जाना। पादरी सुलेमान सरकार का नवांगांव और डिकोराई पेरिशों का काम देखना।

१९४२ ई० में छोटी सभा ने तीन योग्य प्रचारकों को कुछ महीनों के लिये रांची सेमिनरी में भेजा। उनमेंसे दो जन अर्थात् बाबु संतोष होरो और बाबु नैनसुख तिर्की का पादरी पद पाकर १९४४ ई० के फरवरी महीने में आना। क्रमशः पादरी सन्तोष होरो और पादरी नैनसुख तिर्की का चांदमारी और डोंगीबिल (नया पेरिश) पेरिशों में काम करना।

१९४४ ई० की महासभा के फैसले अनुसार आसाम क्षेत्र के काम का (१) ऊपर आसाम इलाका और (२) लोअर आसाम इलाका में विभक्त होना। ~~इससे~~ इसके फलस्वरूप पादरी सिलास होरो का आसाम क्षेत्र के सुपरिंटेनडेन्ट पद पर नियुक्त किया जाना। पादरी मनसिद्ध हेमरोम का ऊपर आसाम इलाके का प्रथम इलाका चेयरमेन होना। ऐसा ही पादरी लुक मिंज का लोअर आसाम इलाके का प्रथम इलाका चेयरमेन होना। छोटी सभा इन दोनों इलाकाओं को शासनकर्त्ता सभा है।

लोअर आसाम इलाके के लिये तेजपुर में एक मिडिल ईंगलिश स्कूल है। वर्त्तमान समय में लोअर आसाम इलाका में करीब नौ हजार लूथेरानों की गिन्ती है। इनकी चरवाही के लिये करीब ४५ प्रचारक और छः पादरी हैं। यह एक बड़ी आशा का इलाका है जहां लाखों आत्मा सच्चे ईश्वर की खोज में पड़े हैं, हमें उन्हें खोजना और बटोरना है।

राज गांगपुर इलाके का संक्षेप इतिहास।

मिशन स्टेशन

एकमा, इलाके में लगभग १८७८ ई० में मिशनरी डिलोकिस साहब रहते थे। उनके आने जाने से घोघोर गांव में धर्म का बीज बोया गया। कई एक घराने खृष्टीय धर्म में लाये गये। यहां जो मिशन कम्पाउड है वह जमीन मुराडरा बरवा योहन तोपोनो और मोरहा मनमसीह गौटिया के द्वारा मिशन को बक्सीस में दिया गया। उस समय के प्राचीन बाबु हनुक बागे के कठिन परिश्रम से एक गिर्जा घर बनाया गया। यहां से धर्म का फैलाव पूरब और पच्छिम की ओर होने लगी। आरम्भ में धर्म प्रचारने में कोई तकलीफ नहीं था। जब गिमिस्की साहब कोरोंजो से राजगांगपुर आया जाया करते थे तब १८९९ ई० में रंगाबीरा घाट में एक घटना हुई। गिमिस्की साहब अपने साथियों के साथ कुम्बाकेड़ा आ रहे थे। तब भेलेगाडीह के भरोसा सिंह, रघुनाथ शिखर देव (राजा का दमाद) और राजपूत शिवनाथ सिंह गौटिया घोड़े पर तलवार के साथ आकर साहेब और उनके साथियों को घेर लिया। उन्हें मार पीट करना और सुन्दरगढ़ ले जाना चाहा। साहब ने इन शत्रुओं को कुछ रुपैया देकर शान्त किया और वे इन्हों को छोड़ दिया। साहेब और उनके साथी कुम्बाकेड़ा पहुंचकर व तमाम मिशन कम्पाउड के अन्दर जामुन गाछ के सामने डेरा किया। इन्हों ने जगह को भलीभांति देखा और ~~स्टेशन बनाने की~~ यहां स्टेशन बनाने की इच्छा प्रगट की। साहबने डिपुटी कमिश्नर के पास चैबासा अर्जी भेजा। इसपर पुलिस आकर उन शत्रुओं को पकड़कर चैबासा ले गये। फैसला होने पर शत्रुओं को ३००) रु. जुर्माना देना पड़ा। इसी समय से सब रोक टोक बन्द हो गयी। १९०० ई० में मिशन कम्पाउड बनाने के लिये ~~जमीन मोल लिया गया~~। कुम्बाकेड़ा में जमीन मोल लिया गया।

१९०२ ई० में मिशनरी पाद्री गोलके साहब कुम्बाकेड़ा (राजगांगपुर) आये। इनके कठिन परिश्रम से खृस्टानी धर्म इधर उधर फैल गया।

अनेक मिशनरियों और देशी पाद्रियों ने यहां काम किये, वे क्रमशः ये हैं — मान्यवर गोलके साहब, मान्यवर गिमिस्की साहब, मान्यवर पापे साहब, मान्यवर डिलर साहब, पाद्री नथानियल तिर्की

घोलन भेंगारा, अमुस बक्का आदि। वर्तमान में इस इलाका में पाद्री इलियाजर एक्का काम करते हैं।

यहां की खृस्टीयान जन संख्या — बपतिस्मा पाये हुए ११६१०, दृढ़ीकृत — ५४२१, धर्मखोजक ११५ हैं।

इस इलाके में ३ पाद्री और ४३ प्रचारक हैं।

खुटीटोली इलाके की संक्षिप्त मराङली इतिहास।

खुटीटोली इलाका पहले टकरमा इलाके के अन्दर थी। यह बीरु स्टेट के भीतर है। जब बीरु के कईएक मौजों में ~~*~~ खृस्तानी धर्म आयी तब मिशनरियों ने इधर भी स्टेशन बनाने का बिचार किया। Rev. P. Eidnes ने एक जगह चुने और इसके लिये उन्हों ने १००) रुपैया सलामी ~~भी~~ दिये। पर टिकैत साहिब गजराम सिंघ (बीरु स्टेट का जमीन्दार) इस शर्त पर जगह देने को स्वीकार किये कि पादरी साहिब लोग उसके राज्य के रैयतों को उसके अधीन कर देवें। यह हो न सका और इसके कारण जगह न मिली। थोड़े दिनों के बाद टिकैत साहिब का दीवान एक मोकदमा में रांची गये थे। उन्हें रुपैये की जरूरत पड़ी। इस बिचार से वे परिचित थे कि मिशनरी लोग बीरु के भीतर ~~स्टेसन~~ स्टेशन बनाना चाहते हैं। इसलिये उन्होंने Vorstand Rev. D. Dr. A. Nottrott के पास जो रांची में थे गये और ३००) रुपैया लेकर ६०,७० एकड़ जमीन खुटीटोली मौजा में स्टेशन बनाने के लिये लिख दिये। स्टेशन बनाया गया। कितने दिनों के बाद खुटीटोली मौजा नीलाम में चढ़ गया। इस मौके पर टकरमा इलाके ने अपनी मराङली पैसा से मिशन के नाम पर नीलाम खरीद किया। इससे खुटीटोली मौजा मिशन के दखल में चला आया। यह तो स्टेशन और मौजा की बात हुई।

इस इलाके में खृस्तानी धर्म के आने और फैलने का समय तीन भागों में बांटा जा सकता है —

१. मिशनरियों को खुटीटोली में स्टेशन बनाने को आने के पहले: —

खृस्तानी धर्म के आने के पहिले ~~इस देश~~ बीरु के आदिनिवासियों की अवस्था बहुत ही खराब थी। राजा जमीन्दार लोग इनसे मनमाना व्यवहार करते थे। जमीन्दारों के द्वारा आदि-निवासियों की सताहट को सोचने से मुण्डारी भाषा का एक उपयुक्त गीत ख्याल में आता है —

Chorus: - बीटी ~~बीटी~~ बीटी ते गोड़े - मयोम तरनाते लिंगी-तन २

१. ओह नेका गेनेरंग - जउगी चि नेनेका
निदा सिंगिंग राः गेरंगतन — बीटी बीटी

२. ओर नेका दशा बनोः तैंग बसा —
जेता रेओ बनोः रुडुन — बीटी बीटी

पर अब यह सोचनीय दशा खृस्तानी धर्म के आने से बिल्कुल मिट गई है।

इस इलाके में खृस्तानी धर्म पहिले कोलोमडेगा में आयी। वहां से लोम्बोई, घुटबहार और काहुपानी मौजों में फैल गई। आरम्भ में घुटबहार और काहुपानी में केवल एक प्रचारक (पतरस तोपोनो) था। सताहट के कारण बोम्बोलकेरा के कितने भाई अपनी रक्षा के लिये खृस्तान होना चाहे। उन्हों ने प्रचारक के पास अपनी इच्छा को जनाये। इस कारण प्रचारक बराबर उनके पास आया जाया करते थे। जब यह ~~बात~~ बात बीरु के जमीन्दार टिकैत गजराम सिंघ को मालूम हुआ तो उसने प्यादा भेजकर उन भाईयों और प्रचारक को पकड़ मंगाया। इन भाईयों से कठोर व्यवहार करने के लिये उसने अपने कई एक आदमियों को पहले ही से ठहरा रखा था। प्रचारक और भाईयों के आने पर उन्हों से पूछा गया कि क्या तुम खृस्तान हो? उन्हों ने कहा हां हम खृस्तान हैं। इतने पर ठहराये हुए आदमियों ने इन भाईयों को मारना आरम्भ कर दिये। उन्हों ने ~~२~~ इनको इतना मारा ~~पीटे~~ पीटे कि कितने तो बेहोश हुए और कितने लोहु लोहु छांट करने लगे। कठोर ~~२~~ मनुष्यों ने इन बेचारों का प्राण लेने को भी तैयार हो गये। इसी समय ढेंगांगर मौजा का जमीन्दार धरम सिंघ जो गजराम सिंघ के भाई थे कहीं से घटना स्थान में पहुंचे। ~~वे वहां पहले~~ ~~हुए~~ उन्हों ने सब कुछ देख सुन कर मारने ~~व~~ पीटने ~~व~~ वालों से लाठी छीन कर ~~मार~~ सतानेहारों को ही खूब मारे पीटे। ~~उनसे~~ ~~ने~~ इन्हों ने गजराम सिंघ को भी खूब दपटे और उन बेचारे भाईयों की सेवा करने को कहा। उनके कहने अनुसार उनकी सेवा की गई और वे छोड़ दिये गये। ऐसा होने पर भी खृस्तानी धर्म फैलती गई और आज बोम्बोलकेरा इस इलाके की एक बड़ी मण्डली है

बोम्बोलकेरा के बाद कुड़पानी के भाई खृस्तानी धर्म को ग्रहण किये। ये दो मण्डलियां अभी तक हैं।

२. मिश्नरियों का समय १८६५—१९१४ ई० —

इस इलाके का सब से पहिला मिश्नरी मान्यवर पादरी Rev. Ch. Lokies साहिब थे। ये पुरनियों के द्वारा आदर की दृष्टि से देखे जाते हैं। इन्हों ने बड़े प्रेम और धीरज के साथ नये पुराने भाई~~यों~~ बहिनों की खीष्ट में अगुवाई की। इनके आने पर बहुत से लोग ~~व~~ खृस्तान धर्म को अपनाने लगे। इसको देखकर जमीन्दार लोग कुढ़ने लगे और बहुत जगहों में लोगों को सताने लगे। ~~पर व तौभी मण्डके मण्डलियां बढ़ती ही गई।~~ सताहट बहुत थी। खृस्तान होने के कारण एक की खड़िया भाई बीरु पकड़ा जाकर मारा गया। नये धर्म को ~~धर्म~~ नहीं

छोड़ने के कारण वह एक वृक्ष में बंधा जाकर टांगा गया पर अचम्भे की बात है कि उसका बन्धन आप से आप खुल गया और वह मुक्त हो गया। ऐसी ही ताड़ना और सताहट खृस्तानों के ऊपर हुई पर तौभी ईश्वर की मण्डली बढ़ती ही गई। मिशनरियों के मेहनत से सताहट भी दूर होती गई।

३. मिशनरियों के बाद सन् १९१४ से आज तक —

१९१४ में महासमर के छिड़ने के कारण मिशनरियों को मिशन छोड़ना पड़ा। मिशन अनाथ छोड़ दिया गया। मण्डली कर्मचारियों का प्रतिपालन बहुत कठिनता से होने लगी। अनेक परीक्षाओं के आने पर भी मण्डलियों का पालन किया गया और अभी तक मण्डलियां लूथेरान विश्वास में ठहरी हुई हैं।

इस इलाका में छोटी बड़ी १७ मण्डलियां हैं जो ११ प्रचारकपन में बांटे गये हैं।

सिमडेगा पेरिश में ११ मण्डलियां हैं और ये ७ प्रचारकपन में विभाजित हैं।

इस इलाके का स्कूल विभाग बढ़ती पर है। पहले इस इलाके, खुटीटोली में अपर प्राइमरी स्कूल था पर अभी यह मिडिल इंगलिश स्कूल बनाया गया है और उम्मेद है कि यह ऊंचे दर्जे तक पहुंच जायगा। ईश्वर दया करे कि यह इलाका दिन दिन बढ़ती जावे।

सन् १९१४ ई० के महायुद्ध के समय Anglican Mission के Rt. Rev. Bishop साहेब की सहायता और अगुवाई को भी यह इलाका कभी भूल नहीं सकती है जिसके लिये यह इलाका महान दयामय ईश्वर को और महामान्यवर Rt. Rev. Bishop साहेब को सदा धन्यवाद सहित स्मरण करती रहेगी।

History of Jharsuguda Ilaka

By Rev. S. M. Bage.

झरसुगुडा इलाका उड़ीसा प्रदेश के सम्बलपुर जिले ~~के~~ में है। सम्भव है ख्रुस्तानी धर्म की ज्योति १८९१ ई० में इस इलाके में चमकी। यहां का काम चक्रधरपुर के मिशनरी से चलाया जाता था और पीछे राजगांगपुर के मिशनरी से।

यहां मिशन स्टेशन की स्थापना प्रायः १९०१ ई० में हुई * और हाते का नाम "फ्रिसहियपुर" रखा गया।

Rev. B. Lawzmis और Rev. A. Muzeus, १९०३ ई० से यहां काम आरम्भ किये। इन्हों ने बंगला, लाईन घर, स्कूल और कूवां आदि का निर्माण किया। पर अभाग्यवश गिरजा घर की स्थापना न हो सका क्योंकि १९१४ के महासमर के कारण मिशनरियों को मिशन छोड़ना पड़ा। अभी तक गिरजाघर नहीं है। गिरजा अराधना स्कूल के एक कोठरी में होती है।

१९१४ ई० की लड़ाई के कारण मिशनरियों को अपना देश लौट जाना पड़ा। मिशन को देखभाल करने के लिये कोई न रहा। इस दुःखमय अवस्था में सरकार ने इस इलाके की चरवाही करने के लिये बपतिस्त चर्च के मिशनरी Rev. Horsh Burg * को ठहराया। इन्हों ने १९१९ तक यहां की गोस्सनर मण्डलियों को सम्भाले रखा। इस समय यहां कोई देशी पाद्री न थे इसलिये इस इलाके का भार Candidate Nathaniel Khalkho के जिम्मे सौंपा गया। ~~मण्डली के पवित्र कामों को चलाने के~~ लिये राजगांगपुर के गोस्सनर चर्च के देशी पाद्री इस मण्डली के पवित्र कामों को चलाते थे। ~~१९१९~~ १९२२ ई० के अगस्त महीना में चर्च कौंसिल ने पाद्री नूथर जोजोवार को यहां भेजा ~~और~~ जिससे मण्डली काम उचित रीति से होने लगी। इसी साल से N.M.S. की ओर से इस इलाके को सहायता भी मिलने लगी। N.M.S. ने इस इलाके का पूरा भार १९२३ ई० में अपने ऊपर लिया। इस संस्था के मिशनरी भी यहां रहने लगे। N.M.S. ने १९३९ तक इस इलाके का भार अपने ऊपर उठाये रहा। बाद में चर्च कौंसिल ने इसका भार अपने ऊपर लिया और अब अपने औटोनोमस नियमानुसार इस इलाके ~~की~~ का संचालन कर रही है।

N.M.S. के बाद इस इलाके का U.P. स्कूल उठा दिया गया पर C.C. ने १९४० में इस स्कूल को फिर से कायम किया।

१९४४ में ~~~~ C.C. की मदद से फिर एक प्राईमरी स्कूल कूड़ालोर मराडली में खोला गया है। स्कूल की कमी के कारण शिक्षित ~~लोगों की बहुत~~ लोग बहुत कम हैं।

इस इलाके की मराडलियां ~~~~ मिशन स्टेशन से बहुत दूर २ जगहों पर है। यहां ~~की~~ मराडली ~~की~~ के लोगों की जनसंख्या:- बपतिस्मा पाये हुए ११७१, पुराने धर्म खोजक १९, नये धर्म खोजक १०, दृढ़ापन पाये हुए ५३९.।

इस इलाके में छः देशी पादियों ने काम किये वे ये हैं:— पादी लूथर जोजोवार, पादी लूथर बरौरैला, पादी अमुस बड़ा, पादी बरनाबास हेमरोम, पादी लूथर कोनगाड़ी और वर्त्तमान में पादी सुलेमान बागे काम कर रहे हैं।

यह इलाका आठ प्रचारकपन में बांटा गया है। ईश्वर इस इलाका को आत्मिक और लौकिक ज्ञान और सामर्थ देवे कि सिद्धता को प्राप्त करे।

जड़ाकुदर इलाके का संक्षिप्त इतिहास।

(ले० एम० डी० लकड़ा)

पहले पहल जब छोटानागपूर से खिरस्तान लोग जीविका के लिये गांगपुर और बनई आदि स्टेटों में आने लगे तब उनकी धर्मसुधि के लिये मिशनरी साहेबों का भी दौरा होने लगा। उन्हीं दिनों छोरपेन्डा का मनसिद्ध होरो जड़ा-कुदर आया। वह एस० पी० जी० मिशन का अंग था। यहां से उसने अपने मिशनरियों के पास अर्जी पेश की कि उसकी धर्मसुधि ली जाय परन्तु उन्हों ने उसकी न सुनी। उसने तब उसने लूथेरान मिशनरियों से अर्जी की और इन्हों ने ग्रस्ता किया। तुरन्त याकूब मिंज नाम का प्रचारक भेजा गया। थोड़े दिनों में दो और घराने इस खिरस्तान घर के साथ मिल गये। एक २ करके खिरस्तान होने लगे और जड़ाकुदर एक मराडली बन गयी। धर्म के लिये बहुत कोशिश की गई गयी जिसके फल स्वरूप पुनापानी और टकरा में भी छोटी २ मराडलियां बन गयीं। मिशनरी साहेब लोग टकरमा, चाईबासा और चक्रधरपूर स्टेशनों से दौरा करते थे।

१९०२ ई० मे इस क्षेत्र का काम चक्रधरपूर इलाके के देखरेख मे सौंपा गया। महायुद्ध के आरम्भ तक मिशनरी लोग * नगरा (गांगपूर) और बनई की तितर बितर खिरस्तानों की चरवाही करते थे। उस समय जड़ाकुदर का प्रचारक खिरस्तानन्द आइन्द बड़े शिकारी थे। जंगल में शिकार खेलने के समय भी लोगों को धर्म प्रचारते थे और इस तरह से उसने अनेकों को खीष्ट के लिये जीता। मिशनरी साहेबों ने खुश होकर उसे सेवकाई के पद पर अभिषेक किया। जड़ाकुदर एक पेरिश बन गया। लेकिन पादरी जी थोड़े दिनों के बाद बदली हो गये उनके जगह पादरी मरकस तोपोनो १९०८ ई० में यहां आये।

१९१४ की लड़ाई के कारण मिशनरियों को यहां से जाना पड़ा और इसके कारण पर चक्रधरपूर से अलग एक इलाका मानी गई। सिंहभूम जिले के मनोहरपूर, चिड़िया, दुइया स्थान, सारान्डा फोरेस्ट डिपार्टमेंट, जराईकेला और रेडा: ये कितने वर्षों से जड़ाकुदर इलाका से ही सम्भाले जाते थे। सन् १९३१ में पादरी मरकस तोपोनो अपनी बिमारी की अवस्था में पादरी लूथर बगेरैला को सहायता के लिये बुलाये। पादरी बगेरैला जोड़ाबांध को हेडक्वाटर बना कर काम करने लगे।

[जोड़ाबांध, बनई स्टेट का एक गांव है। किसी समय लूथेरान मिशनरियों के जरिये बनई राजा का प्राणोद्धार हुआ। इसके चिन्ह के लिये राजा ने मिशनरियों को अपने राज्य में धर्म प्रचारने की इजाजत दी और मिशनरियों के चुनने जमीन चुनने पर कुछ जमीन जोड़ाबांध में स्टेशन बनाने के लिये दिये]

उसी १९३१ के स्वर्गारोहण के दिन पादरी मरकस तोपोनो इस संसार से विदा हो गये। इनके जगह पर मसीहदास लकड़ा पादरी पद पर नियुक्त किये गये हैं। अब जड़ाकुदर और जोड़ाबांध दो पेरिशों में बंट गयी। कुछ वर्षों के पीछे सिंहभूम की मराडलियां चक्रधरपूर में मिलाये गये। गांगपूर स्टेट के आन्दोलन से इलाके के कामों में कुछ २ धक्का पहुंची। छोटी २ मराडलियां घने जंगलों के भीतर यहां वहां छितरी हुई है। ऐसे विस्तृत इलाके का काम हल करने और राजनैतिक असुविधाओं को दूर करने के लिये महा सभा के

फैसला अनुसार और एक नया पेरिश बनाया गया है।

समूचे इलाके का ख्रिस्तान जनसमूह ५५८९, उनमें दृढ़िकृत २८८६ हैं। १८८२ धर्मसेवक हैं। जिनके बीच ४० प्रचारक और ३ पादरी काम करते हैं। ९ लोअर प्राइमरी स्कूल हैं जिनमें २२५ लड़के लड़कियां विद्या हासिल कर रहे हैं। ९ शिक्षक हैं। ईश्वर योग्य सेवकों को उदय करे और त्राण पानेवालों को मण्डलियों में लावे॥

I

कोरोंजो इलाके का संक्षिप्त इतिहास।

प्रभु की आज्ञा मत्ती २८, १९-२० के अनुसार एकरसा इलाका से मिशनरी लोग पश्चिम की ओर प्रभु के राज्य के सुसमाचार को सुनाने लगे। जिस का असर यह हुआ कि कोलोमडेगा आसपास के लोग ख्रिस्तान हो गये। प्रचारक लोग भी एकरसा ही से भेजे जाते थे। इन के अन्तिम पश्चिम से मण्डली बढ़ती ही गई। जैसे लोम्बाई, बरवड़ा, अम्बापानी, डोम्बापानी इत्यादि। जैसे २ प्रभु की मण्डली बढ़ती गई वैसे २ बिरू के हिन्दू राजा-रजवाड़ों द्वारा विघ्न बाधा डाली गई। उन दिनों में बिरू गढ़ का राजा Gajraj Sing था। ये ख्रिस्तान धर्म के घोर विरोधी थे। वे ख्रिस्तान धर्म को बिरू में से जड़ से उखाड़ने के मतलब से कितने प्रचारकों को पकड़ लिया जैसे खुरबहार, डोम्बापानी मण्डली के प्रचारक यतरस तोपोनो, प्राचीन इलाइजा तोपोनो और ऐसे ही कितने साधारण भाइयों को। उन्हें कठिन दण्ड देने लगा। यहां तक कि जैसे मुर्गी के सामने चावल का खूटि रख कर चराते हैं वैसे इन ख्रिस्तानों के सामने भी चावल की खूटी रख कर और नंगी तलवार लिया हुआ प्यादा पीछे की ओर खड़ा हो कर कहलाने लगे कि यह तुम्हारे लिये आखरी मौका है, यदि प्राण बचाने चाहते हो तो ख्रिस्तान धर्म को छोड़ो और आगे प्रचार मत करो। पर वे मार परदन सहते हुए, नंगी तलवार के सामने भी अपने लक्ष्य विश्वास से नहीं हटे गये। इतने समय में टोंगर का सरदार धर्म सिंह (Dharam Sing) जो कि राजा गजराज सिंह का निकटवर्ती रिश्तेदार था

अचानक से बिलगढ़ आ पहुंचा, ख्रिस्तान प्रचारकों की ऐसी दुर्दशा को देखकर नंगी तलवार लिये दुर्जन को मार भगाया और राजा को भी धमकी देते हुए कहा कि इन ख्रिस्तानों को यदि मार डालोगे तो सारा राज्य डूब जायगा। इन बातों को सुनकर राजा डर गया और उन्हें छोड़कर उनकी सुधि लेने लगा। और २ दूसरे जगहों पर भी ख्रिस्तानों की ऐसी ही दुर्दशा हुई। प्रभु आपने लोगों की रक्षा कीई और ख्रिस्तान विश्वास की जय होते गई।

ख्रिस्तान धर्म बिल राज्य में बढ़ते गया, अनेक मण्डलियां खड़ी होती गईं, इस रीति से रकसा को छोड़कर खुटिटोली में मिशनरि काम का केन्द्र रहा और यहां का काम संभाला जाने लगा। मिशनरि Gimiski साहब ने जिसने कि पश्चिम की ओर काम बढ़ मिशनरी स्टेशन खड़ा करने के लिये तीन जगहों को चुना अर्थात् कोरोंजो पालमुरा और बेहरिन बाला जिन में से, जगह आ सुविधानुसार कोरोंजो ही मिशनरी स्टेसन चुना गया। सो १९०२ ई. में कोरोंजो मिशन स्टेशन का नेव डाला गया। धर्म प्रचार करने का काम बढ़ गया। उन दिनों में समसेरा का सरदार Dariyao Sing (दरियाव सिंह) ख्रिस्तान धर्म फैलाव के काम में रोकटोक डालने लगा, प्रचारकों और नये २ ख्रिस्तानों को विरोध सतावट मिली। प्रचारक मनसिद्ध तापोना बलआजोर का और प्रचारक मनसुख होरो सलंगाबुरू का सरदार के विरुद्ध बाधक थके में पड़े थे। साधारण नहीं बल्कि लोग भी सतावट पाकर अपने विश्वास में स्थिर रहकर प्रभु के सच्चे साक्षी रहे।

अब कोरोंजो इलाका में तीन पेरिश बनाये गये हैं अर्थात् कोरोंजो, कहुपानी और लोम्बाई। कोरोंजो इलाके का इलाका स्टेशन ठहराया गया है। यहां एक एम० ई० स्कूल भी है जहां इलाके भर के विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं। हाल में कोरोंजो ~~पेरिश~~ इलाके का इलाका चेयरमैन पादरी लूथर कोनगाड़ी हैं जो कि साथ में खास करके कोरोंजो पेरिश का काम भी देखते हैं।

कोरोंजो पेरिश १० प्रचारकपन में बांटा गया है ~~[illegible]~~ और इन प्रचारकपनों में १३ प्रचारक काम करते हैं।

कहुपानी पेरिश में पादरी इतिमोन गुड़िया हैं जिनके अधीन में ७ प्रचारकपन और ८ प्रचारक हैं।

लोम्बाई पेरिश में पादरी ख्रिस्त रोयान तोपोनो हैं जिनके देखरेख में १२ प्रचारकपन और १३ प्रचारक हैं। इलाका भर में दो प्रचारिका हैं जो बहिनों के बीच में काम करती हैं।

कोरोंजो इलाका में १९४३ के दिसम्बर के अन्त तक में मर्दुमसुमारी अनुसार २४०३ ख्रिस्तान घर हैं जिनमें १६१७८ प्राणी बपतिस्मा पाये हुए हैं जिसमें ७८२२ प्राणी दृढ़ापन पाये हुए हैं।

Rev. L. Kongari

Lohardaga Illaka History

१८४८ ई० से लोहरदगा में मिशन काम शुरू हुआ। १८५० ई० में चार
उरांव परिवारों ने प्रभु को ग्रहण किये। रांची से पहिले लोहरदगा छोटानागपुर का
जिला था। इस जिला के Commissioner का ओफिस यहीं था। अंग्रेज
ओफिसर लोग मिशन काम के बड़े प्रेमी थे। गोस्सनर साहेब के चार मिशनरियों
के कलकत्ते पहुंचते ही Commissioner और Deputy Commissioner ने
Dr. Habelin के पास चिट्ठी लिखे, जो उस समय Calcutta में B.S. का काम
करते थे कि चारों मिशनरियों को ~~रांची भेजि~~ छोटानागपुर भेजिये कि वे यहां मिशन
का काम करें। मिशनरियों ने १८४५ ई० के २२ नोवेम्बर को रांची आये। इन के
आने पर १८४८ ई० में दयालु ~~Commissioner~~ Commissioner Hemington ने
लोहरदगा की अपनी बंगला और हाता को मिशनरी साहेबों को रहने के लिये दे दिये।

<u>प्रथम मिशन स्टेशन</u> — वर्तमान Lohardaga Municipal office
Compound ही पहला मिशन स्टेशन था जो Rev. Konrad & Rev. Berner
के द्वारा स्थापित किया गया। यहीं से मिशनरी लोग सुसमाचार प्रचार
करते थे। अभाग्यवस १८५१ ई० में Rev. Berner और उनकी बेटी Johanna
लोकान्तर हो गये। यहां की आबहवा भी ठीक न थी। इसलिये १८५४ ई० में
मिशनरी लोग रांची बुला लिये गये + और कई वर्षों तक कोई मिशनरी लोहरदगा
नहीं आये। Rev. Berner और उनकी बेटी का मृतक शरीर इसी पुराने
हाते में रखे गये पर बहुत दिनों के बीतने से इनके कबर का निशान लोप हो
गया है। ऐसा ही Domba में भी एक पहिला मिशन स्टेशन खोला गया था पर
वहां की भी आबहवा के ठीक न होने के कारण और छोटा बन्न साहिब की
मेम साहिबा के १८४८ ई० में लोकान्तर हो जाने से वह स्टेशन भी छोड़ दिया
गया। मेम साहिबा की कबर Domba ही में है पर इसका भी कोई
पता नहीं है।

<u>लोहरदगा का नया स्टेशन</u> — यह नया स्टेशन Rev. H.
Lorbeer के द्वारा जो अभी हाल में उपस्थित है १८७१ ई० में स्थापित किया गया।
१८७१-७५ तक Rev. H. Lorbeer साहेब प्राय: १०० गांव और टोलों में घूम २
कर सुसमाचार प्रचार करते और जड़ी बूटियों से दवाई तैयार कर भाई बहिनों की
सुधि लिया करते थे। इन्हों ने बहुत से धर्मखोजकों को ख्रिस्तानी मण्डली में
ग्रहण किये + और ईश्वर की सेवा-उपासना के लिये १८७२ ई० में एक बड़ा गिर्जाघर
बनवाये।

१८७६ — १८७७ तक Rev. Didlaukis & Rev. H. Onash साहेबों
ने प्रभु की पवित्र मण्डली में ज्वलन्तता के साथ काम किये और नये २ धर्म-
खोजकों को मण्डली में ग्रहण किये।

१८७७ — १८९३ तक Rev. F. Hahn, Rev. E. Bartsch, Rev. G.
Eibert, Rev. Suleman Khalkho और Rev. R. D. Lakra काम करते थे।
इन्हों ने बड़ी कठिनता और ज्वलन्तता के साथ लोहरदगा के चारों ओर सुसमाचार
प्रचार करते थे। इन्हीं दिनों में हिन्दु, मुसलमान और जमीन्दारों की ओर से सतानों
की भारी कठिनता में पहुंचना हुआ।

ईश्वर की महानुग्रह से Rev. F. Hahn ने १८८३ में लोहरदगा में एक
Leper Asylum (कोढ़ीखाना) खोला। इसका सम्बन्ध Scotland के Leper
Mission Society से था। इस कोढ़ीखाना में छोटानागपुर, जशपुर और
बिहार के कोढ़ी लोग चिकित्सा के लिये आया करते थे। प्राय: सभी जात के लोग इसमें
आते थे। प्रति महिना इनकी संख्या २५-३० रहा करती थी। इनके साथ २ लंगड़े,
अन्धे और ऐसे बिमारी के लोग रहते थे जो कमाने खाने में असमर्थ थे। Scotland

Leper Mission Society इनके खर्च वर्च के लिये दिया करती थी। कोढ़ियों और दूसरे बिमारी के लोगों के चंगे होने और उनकी शादी हो जाने पर जो लड़केवाले थे उनकी पढ़ाई और बोर्डिंग खर्च के लिये Leper Mission children home से खर्च आता था। इस फंड से पढ़नेवालों की संख्या १५-२० तक रहती थी।

Lohardaga Leper Mission Dispensary उन दिनों में इतनी बढ़ी चढ़ी थी कि प्रतिदिन डेढ़ से दो सौ बिमारी लोग दवाई लेने के लिये यहां आया करते थे। इसका कारण तो यही है कि सरकार की ओर से विशेष २ जगहों और थानाओं में अस्पाताल नहीं खोले गये थे। इसलिये दूर २ के Lutheran, S.P.G. और R.C. ख्रिस्तान और अख्रिस्तान सभी जात के लोग इस Dispensary में दवाई के लिये आया करते थे। मिशनरी लोग Dispensary का विशेष देखभाल किया करते थे। इस Dispensary के पहिला डाक्टर Dr. Kasirath थे। इनके परिवार जुब्बान मिशन में हैं और लोहरदगा में बसे हुए हैं। इनका सहायक Compounder Phanuel Kujur, Doba के थे। Dr. Kasirath 1883-1891 तक काम किये। इनके बाद Dr. D.D. Minz हैं जिन्होंने १८९२-१९२३ तक इस Dispensary में काम करते थे। इनके अनेक सहायक कम्पौण्डर हुए। जैसे - १८९२-९३ तक मृत Emmanuel Ekka, १८९४-९७ तक मृत Johan Minz, इनके बाद मृत Suleman Panna जो हमारे D.M. Panna के खानदान के थे। सब से पिछला सहायक मृत Prabhudayal Toppo, Chattakpur के थे। १९१४ ई० महायुद्ध के शुरु होने से हमारे मिशनरी लोग विलायत लौट दिये गये। इस पर इस Dispensary का भार सरकार के हाथ में पड़ा और सरकार कोढ़ीखाना की सहायता के लिये माहवारी ५०) रुपैया दिया करती थी। कोढ़ियों की संख्या के घट जाने से १९२३ ई० में कोढ़ीखाना यहां से उठाकर पुरुलिया में ले लिया गया। इसी समय से कोढ़ीखाना और अस्पाताल भी उठ गया। आनन्द की बात तो यह है कि हमारे पुराने बूढ़े Dr. D.D. Minz पुरुलिया नहीं लिये गये पर लोहरदगा ही में अपने Private Dispensary से मिशन स्कूलों के लड़के लड़कियों और अन्य भाई बहिनों की सुधि लिया करते हैं।

१८९४ ई० में Rev. F. Hahn, Rev. O. Gemesky, और Rev. C. Rokiss की अध्यक्षता में चट्टी में एक पेरिस खोला गया। इस पेरिस की देखभाल करने के लिये पहिला देशी पादरी Rev. Suleman Khalkho नियुक्त किये गये। इनके बाद Rev. R.D. Lakra चट्टी पेरिस का काम देखते थे।

१८९६ में फिर एक नया पेरिस कुड़ू में खोला गया। Rev. Christochit Tirkey पहिला पादरी इस पेरिस के लिये ठहराये गये।

१८९७-१९०० तक Rev. F. Hahn, Rev. F. Kasten, Rev. G. Beckmman, Rev. A. Koppen, Rev. Ch. G. Tirkey और Rev. R.D. Lakra मण्डली और स्कूल के काम की देखरेख में रखे गये।

ईश्वर पिता की अनुग्रह से ख्रिस्तानों और स्कूल के लड़के लड़कियों की संख्या बढ़ जाने से, माननीय प्रधान मिशनरी Rev. G. Beckmman, Rev. G. Gyallies और Rev. W. Stanker की अध्यक्षता में लोहरदगा में M.E. School, १९०५ ई० में खोल दिया गया और पहिला Hd. Master Mr. Hanukh Kujur ठहराये गये जो अभी तक जीवित हैं।

पहिला Staff जो इस M.E. School के लिये रखे गये थे सो ये थे:- (1) Mr. Hanukh Kujur (Hd. Master) (2) मृत Pd. Yakub Lakra, Second Master और Candidate, (3) Mr. Christogirih Tirkey, (4) Mr. Prabhusewak Toppo, (5) Pd. Suleman Minz, (6) मृत Nuwas Minz, Loyo, (7) मृत Johan Tirkey

ये स्कूल के मास्टरों ने इस स्कूल में प्रभु के लिये शक्ति भर काम किये। इनकी शिक्षा और अगुवाई से हमारे लूथेरान मण्डली में पहिले बेंच के लड़के लोग आज तक ज्योति की नाईं चमक रहे हैं। जैसे:- (1) ~~[illegible]~~ Lazarus Lakra छोटानागपुर के महाराजा के तहसीलदार थे। Mr. Daud Tirkey, Tigawal – बड़े लूथेरान मण्डली के अगुवे और C.C. मेम्बर हैं। (3) Mr. Abednego ~~Munzni~~ Munzni ये भी छोटानागपुर महाराजा के तहसीलदार थे। (4) मृत Daniel Munzni ये P.O. के clerk थे। (5) Mr. Premchand Khalkho ये बीरू के प्रधान अगुवे, हेड प्रचारक और मास्टर थे। इन्हों ने बहुत से संसारिक भाई बहिनों को ख्रीस्तान मण्डली में प्रभु के लिये बुलाये। (6) मृत Ishwardatt Lakra जो इलाका पंच के मेम्बर थे।

ऐसा ही * इस स्कूल से क्रमानुसार आगे पीछे कितने और भी योग्य और विश्वासी-जन इन प्रधान अगुवों के द्वारा निकलते गये और अभी छोटानागपुर और आसाम की लूथेरान मण्डलियों में प्रभु का काम कर रहे हैं। जैसे:- Rev. Joel Lakra, M.A; B.D; S.T.M. जो वर्तमान में हमारे छोटानागपुर और आसाम की लूथेरान कलीसिया के प्रेसिडेन्ट हैं। (2) Rev. N. E. Kujur, Ranchi Ilaka chairman और C.C. मेम्बर। (3) Mr. N. Toppo, Asst. Manager, Trustee Board. (4) Pd. ~~[illegible]~~ C. M. Tiga, Ranchi Ilaka Secry. (5) Mr. Immanuel Khalkho, Lohardaga Ilaka member और Treasurer. (6) Mr. ~~Mahindra~~ Mahindar Kujur, Lohardaga मण्डली के प्रधान मेम्बर और Committee के अंग हैं।

ऐसे ही और भी वीर और धीर लोग इस स्कूल से निकलते गये और मण्डली में अगुवे हैं — (1) Rev. J. J. P. Tiga, B.A; B.D. Theological Seminary और C.C. मेम्बर (2) Mr. Theodor Toppo, Chattakpur, Mission Press के Book-Binder (3) Sharan Lakra, B.A., Kanke High School, Math. Teacher. (4) Kushalmay Minz, ~~Allah~~ Accountant, N. I. C. T. Society, Allahabad. (5) Theodor Lakra B.A. Asst. to A. G. Ranchi.

१९०६–१९१२. Rev. W. Stanker, Rev. A. Mozkus, Rev. G. Beckmann, Rev. P. Wenylaff, Rev. G. Eikert, Rev. Ch. G. Tirkey, Rev. M. Toppo और Rev. Mattias Toppo काम करते थे।

१९१२ में फिर एक पेरिस सिकवार में खोला गया। इस नये पेरिस की देखरेख के लिये Rev. Mattias Toppo रखे गये।

१९१३–१९१४ में Rev. G. Beckmann, Rev. R. Zick, Rev. Mattias Toppo और Rev. Ch. G. Tirkey काम करते थे।

१९१४ में महा समर का आरम्भ हुआ। मिशनरी लोग विलायत लौटा दिये गये। ~~फिर~~ इस पर कलीसिया का भार देशी पादरियों के हाथ में सौंपा गया। जिसके अनुसार १९१५–१९२० तक Lohardaga Ilaka में Rev. Ch. G. Tirkey, Ilaka Chairman, Rev. Mattias Toppo, Sikwar, Rev. D. P. Minz, Chatti और कुड़ु पेरिस को इलाका चेयरमेन लोहरदगा ही से देखभाल करते थे।

१९२१–१९२४. Ilaka chairman Rev. M. Toppo थे जो कुड़ु पेरिस के का काम भी देखते थे, Rev. Mattias Toppo Sikwar में और Rev. Dh. Ba. Minz, Chatti पेरिस में काम करते थे।

१९२५–१९२५. Rev. N. E. Kujur, Ilaka chairman, Chatti में Rev. M. Toppo और Kuru में Rev. Maghan Lakra काम करते थे। Ilaka Chairman Sikwar Parish का काम भी लोहरदगा से चलाते थे और इन्हीं दिनों से लोहरदगा और ~~8~~ सिकवार का काम Ilaka chairman ही से चलाया जा रहा है।

१९३० में Rev. J. J. P. Tiga, Rev. N. E. Kujur और Rev. Maghan Lakra ये समूचे इलाका का काम चलाते थे।

१९३१ — १९३४. Rev. H. E. Kujur, Ilaka chairman और Rev. N. Khalkho, chatti, Rev. Maghan Lakra, Kuru में काम करते थे।

१९३५-१९३६. Rev. H. E. Kujur, Rev. J. J. P. Tiga, Rev. M. Lakra और Rev. N. Khalkho थे।

१९३७ — ३८. Rev. N. Khalkho, Ilaka chairman, Rev. M. Lakra, Kuru और Rev. I. Lakra, chatti में थे।

१९३९ — ४०. Rev. H. E. Kujur, Ilaka chairman, Rev. N. Khalkho, Kuru, और Rev. I. Lakra, chatti में काम करते थे।

१९४१ में Rev. J. A. Kujur Ilaka chairman, Rev. L. Kujur, chatti, और Rev. N. Khalkho, Kuru में काम करते थे।

१९४२ — ~~४~~४४. Rev. L. Lakra, Ilaka chairman और Rev. L. Kujur, chatti. ये दो जन ही समूचे इलाका का भार कर्मचारियों की घटी से काम चलाते थे।

१९४५ में C. C. से एक पादरी कुड़ु पेरिस के लिये दिया गया जिससे Rev. L. Lakra Ilaka chairman, Rev. L. Kujur, Chatti और Rev. ~~J~~ Z. Khalkho, ~~Ku~~ Kuru में काम कर रहे हैं। इन्हीं ~~के~~ अधिपतित्व में अभी समूचे इलाके की जनसंख्या और पेरिस और प्रचारकपन के कर्मचारियों की संख्या नीचे लिखे ~~ए~~ हुए के अनुसार वर्तमान है:—

घर — २०१५, बपतिस्मा पाये हुए ५८८७, धर्मखोजक ५९, दृढ़ीकृत — ३२१८, प्रचारक — २६ और पादरी — ३ हैं।

स्कूल:— लोहरदगा इलाका में दो प्रकार के स्कूल हैं। ~~वहि~~ पहिला stipendary ~~स्कूल~~ जिनका खर्च ~~~~ D.B. और C. C. और इलाके के खर्च से चलता है। दूसरा Private स्कूल, जो केवल इलाका और भाइयों की मदद से चलाये जा रहे हैं।

दोनों प्रकार के स्कूलों की संख्या १२ है और इन सब स्कूलों के लड़के लड़कियों की संख्या ५२३ है। सब मिलाकर २० मास्टर और मिस्ट्रेस इन स्कूलों में काम करते हैं।

Ilaka Members ये हैं:— Rev. L. Lakra, Ilaka chairman, Rev. L. Kujur, Rev. Z. Khalkho, Rev. S. A. B. Lakra, H. Master, Ilaka Secy., Candi. S. Toppo, Mr. Emmanuel Khalkho, Treasurer, Mr. Isawar Sahay Kujur, Second Master, Mr. Gidiun Kindo, Arangi, Mr. Samuel Kujur, Karak, Cate. Barnabas Khalkho (Kuru, Chandwa) और Cate. Christoray Kindo, Jalka, Sikwar.

लोहरदगा ही उरांव एरिया का एक ऐसा सेन्टर है जहां से ईश्वर पिता ऐसे २ अगुवों को उदय करता है जो हमारे छोटानागपुर और आसाम की लूथेरान कलीसिया के लिये श्रेष्ठ धर्म के अगुवे माने जाने के लायक हैं। ये समय २ पर सभा और समाजों को खड़ाकर अगुवाई करते हैं। जैसे, I. Jonkh Sabha जो १९२७ में खड़ा किया गया। यह सभा समूचे उरांव एरिया में बढ़ी चढ़ी थी। इसके मुख्य अगुवे ये थे — Mr. Khushalmay Lakra, Taku और Mr. Nahum Kujur, Marle. इनका मुख्य लक्ष्य यह था (क) खुस्तानों को संसारिक यात्रा में जाने से मना करना। (ख) मतवालापन से रोकना। (ग) ईश्वरोपासना के लिये लोगों को जगाना। II. क्रूश सेना — यह १९४० से पहिले अरांगी प्रचारकपन से शुरू होकर अभी प्राय: समूचे इलाके में फैलती जा रही है। इसके मुख्य अगुवे ये हैं — ~~~~ Mr. Mansukh Ekka, Arangi, जो हमारे सेमिनरी विद्यार्थी हैं। ये सभा के President हैं, Mr. Ruben Kindo, Jalka, Vice President, Mr. Ruben Kindo, Secy., Sidhatoly, Mr. Jushaph Toppo, Dathi, Treasurer हैं। इस सभा का मुख्य उद्देश्य यह है — (क) S. S. प्रति गांव में चलाना, (ख) ईश्वरोपासना में लोगों को अगुवाई करना, (ग) राज्य-वृद्धि का काम करना, (घ) Bible क्लास खोलना, (ङ) मतवालापन से लोगों को बचाना, (च) समाज खोलना और समाज में सहायता देना।

III महिला समाज — यह समाज गिरती उठती कई वर्षों से चली आ रही है। पर १९४४ से यही समाज पूरे इलाके के समाजों की अगुवाई कर रही है। इस समाज का मुख्य काम

V

को जो अभी चालू हैं सो यह है—(क) इलाके के सब समाजों का संगठन करना, (ख) प्रोपोज्ड टट्टई स्कूल के लिये रुपैया जमा करना, (ग) समाज में सिलाई काम सिखलाना, (घ) नये मिशन फील्ड के लिये चन्दों को बटोरना, और उनके उत्साह के लिये चिन्ता करना, (ङ) समाज में Bible क्लास को चलाना। इस समाज के मुख्य चालक ये हैं:— Mrs. M. Lakra, President, Mrs. A. Tiga, Vice President, Mrs. D. Lakra, Secry., Mrs. P. P. Minz, Treasurer.

ईश्वर पिता का अनुग्रह जो आज और कल और सर्वदा एकसा है हमारे इलाके की सदा रखवाली करे। उसी का गुणानुवाद सदा सर्वदा होवे। आमीन।

Rev. J. J. P. Tiga.
Jubilee convinor

मैं तीन विशेष लेख जुबली इतिहास के लिये भेज रहा हूं।

I लोहरदगा इलाका इतिहास।

II लोहरदगा इलाका का नकसा।

III Life Sketch of
Rev. L. Lakra

faithfully yours
Rev L. Lakra
27. 11. 45.

Lohardaga Ilaka History

ईश्वर पिता का धन्यवाद होवे कि १८५० के चार ~~मिशनरियों~~ उरांव परिवारों के खिरस्तान होने के पहिले ही १८४८ ई० में मिशनरियों ने रांचीसे पश्चिम लोहरदगा तक मिशन का काम शुरू किये। लोहरदगा रांची से पहिले छोटानागपुर का जिला बनाया गया था। जिसमें जिला के Commissnor का सारा ओफिस लोहरदगा में चलती थी। अंग्रेज ओफिसर लोग मिशन काम के बड़े प्रेमी और जन्क बिश्वासी जन थे। गोस्सनर साहेब के ४ मिशनरियों के कलकत्ते पहुंचते ही Commissnor और Deputy Commissnor Mr Hemington रांची से Dr Heberlin के पास चिट्ठी लिखे, जो उस समयमें Calcutta में B.S. का काम करते थे कि चारों मिशनरियों को छोटानागपुर भेजिये जिसें यहां मिशन का काम करें। मिशनरी लोग जब १८४५ के २ रे नोवेम्बर को रांची पहुंचे तो उनके आने के कुछ दिन पीछे १८४८ ई० में दयालु Commissnor Hemington ने लोहरदगा के अपने बंगले और हाता को मिशनरी साहेबों को रहने के लिये दे दिये॥

प्रथम मिशन स्टेशन जिसे Rev Konrad + Rev. Berner

स्थापित किये यह वही जगह था जहां आजकल Lohardaga Municipal office है। इसके आस पास और जो जगह और बंगले हैं जिसमें हमारे मिशनरियों ने रहकर सुसमाचार प्रचार करते थे। जलवायु बस आबहवा के ठीक न होने के कारण और १८५१ में Rev Berner साहिब और उनकी बेटी Johanna के लोकान्तर होने से १८५८ में मिशनरी लोग फिर रांची बुला लिये गये और इनके बदले और कोई लोहरदगा कई वर्ष लों नहीं आये। Rev Berner और उनकी बेटी Johanna की कबर पुराने मिशन हाते में रखे गये हैं, पर अब शोच की बात है कि बहुत दिनों के बीत जाने से वे कबर लोप हो गये और अभी दिखाई नहीं देते हैं, फिर कोई भी नहीं बतलाते हैं कि वे कबर के जगह कहां हैं। वैसाही लोहरदगा इलाके के भीतर और भी एक पहिला mission station Domba में खोला गया था। पर वहां भी जलवायु हवा के ठीक न होने के कारण और छोटा बक साहिब की मेम साहिबा के १८४८ में लोकान्तर हो जाने के कारण वह Station भी छोड़ दिया गया। मेम साहिबा की कबर Domba ही में है, पर उसका भी जगह का पता नहीं है कि कहां पर गाड़ी गई थी॥

लोहरदगा का नया Station Rev H. Lorbeer से जो

अभी हाल में उपस्थित है १८७१ में खोली गई। १८७१-७५ तक Rev H. Lorbeer साहेब घूम घूम के प्रचार कर, जड़ी बुटी से दवाई आदि तैयार कर उरांव, मुण्डा, भाई बहिनों को सुधि लिया करते थे। प्राय: २०० गांव और टोलों में चारों ओर घूम घूम के सुसमाचार प्रचार किये और

II

बहुत से धर्म खोजकों को खिस्तानी मण्डली में ग्रहण किये। और ईश्वर की सेवा + उपासना के लिये १८७२ ई० में एक बड़ा गिर्जाघर बनाये॥
1876–1877 में Rev Sidkaukis + Rev H. Onasch साहिबों ने प्रभु की पवित्र मण्डली में बड़े ज्वलन्तता से काम करते और नये २ धर्मखोजकों को मण्डली में ग्रहण करते थे।

1877–1893 Rev F. Hahn + Rev. F. Bartsch, Rev G. Eikert + Rev Suleman Khalkho + Rev. R. S. Lakra काम करते थे। इन्होंने भारी कठिनता और ज्वलन्तता के साथ लोहरदगा के चारों ओर सुसमाचार प्रचार करते थे। इन्हीं दिनों में हिन्दु मुसलमान और ~~जमीनदारों~~ ज़मींदारों की ओर से खिस्तानों को भारी कठिनता में पहुंचना हुआ।

ईश्वर की महाअनुग्रह से Rev F. Hahn ने 1883 में लोहरदगा में एक Leper Asylum (कोढ़ी खाना) खोला। जिसका सम्बन्ध Scotland के Leper mission Society से था। इसी कोढ़ी खाना में रांची, लोहरदगा, गोविन्दपुर, तुर्जु, जशपुर, बेरो, बरवे, और हजारीबाग, संताल परगना, और बिहार के कोढ़ी लोग आया करते थे। जिसमें प्राय: मुन्डा, उरांव, तेली, राजपूत, तुरी, लोहार, ब्राह्मन प्राय: सब जाति के लोग आते थे। जिनकी संख्या २५–३० तक प्रति महिना रहा करती थी। इनके साथ २ लंगड़े + अन्धे, और ऐसे बिमारी के लोग जो रहते थे जो कमाने खाने में ~~असमर्थ~~ असमर्थ थे जैसे पित के बिमारी से हाथ पांव + बदन का फूला हुआ। Scotland Leper mission Society इनके खर्च बर्च पूरे तौर से दिया करते थे। कोढ़ियों और दूसरे लोगों के चंगे हो जाने और उनके शादी ब्याह हो जाने पर जो लड़के वाले थे उनको पढ़ाई और बोर्डिंग खर्च के लिये Leper mission Children home से खर्च आया करता था। बड़े आनन्द की बात है कि इसी Society से पढ़े लिखे हुए बालक आज तक शादी होकर लोहरदगा मिशन हाता + उसके आसपास में बसे हुए हैं और अपनी जीविका के लिये आपही आप चिन्ता किया कर रहे हैं। लड़के लड़की लोग जो इसी फन्ड से पढ़ा करते थे उनकी संख्या १५–२० तक रहती थी।

~~Leper~~ Lohardaga Leper mission Dispensary. उन दिनों में इतनी बढ़ी चढ़ी थी कि जिसमें प्रतिदिन डेढ़ से दो सौ बिमारी लोग दवाई लेने के लिये आते थे। उसका विशेष कारण यही था कि उन दिनों में Government से आस पास में कोई Hospital नहीं खोला गया था। जैसे Lohardaga, Kuru, mandar, Bero, Sisai, Ghaghra, Bishunpur, Gumla, Chainpur + Biru इन थानाओं में कोई ~~किसिम~~ किस्म का अस्पताल नहीं था। जिससे सब थानाओं के Lutheran, S.P.G. R.C खिस्तान और अखिस्तान हिन्दु, मुसलमान सब जाति के लोग दवाई के लिये Lohardaga Leper Dispensary में आया करते थे। मिशनरी लोग Dispensary का विशेष देखभाल किया करते थे। 1883–1891 तक का ~~[illegible]~~ पंडित Dr. Kashinath था उसके परिवार आज तों हमारे लूथेरन मिशन में हैं और लोहरदगा में बसे हुए हैं। उसका सहायक Compounder Phanuel Kujur Dolia का था। उसके बाद II Dr. A. A. Muir हैं जो 1892–1923 तक Lohardaga mission Leper Dispensary में काम करते थे। उनके अनेक सहायक कम्पोंडर लोग हुए। जैसे 1892–93 Mr Emmanuel Ekka जो हमारे वर्तमान Municipality के ओवरसियर Mr. N. Ekka के पिता थे जो अब प्रभु में सो गये। उसके बाद Mr Johan Muir ~~[illegible]~~ जो रांची से आये हुए थे वे भी प्रभु में सो गये जो 1894–97 तक Dr A. A. Muir के साथ काम किये। बाद में Mr Suleman Panna (जो हमारे S. M. Panna) के बाप दादा थे

वे भी अभी तक हैं। और सबसे पहिला सहायक Mr. Prabhudayal Toppo Chatakpur (जो हमारे वर्त्तमान Government Dispensary Lohardaga के Compounder Mr Premchand Toppo के पिता थे जो अभी प्रभु में सो गये हैं)। १९१४ के महायुद्ध के शुरु होने से हमारे मिशनरी लोग विलायत लौटा दिये गये, तो Lohardaga Mission Leper Dispensary का पूरा भार Government के हाथ में पड़ा और Government Rs 50/- कोढ़ी खाना की सहायता के लिये दिया करता था। १९२३ तक में कोढ़ियों की संख्या घट जाने से कोढ़ी खाना १९२३ में पुरुलिया ले लिया गया। और उसी समय से लोहरदगा का कोढ़ी खाना और अस्पताल भी उठ गया। आनन्द की बात तो यह है कि हमारे पुराने बूढ़े Dr. D. D. Minz कोढ़ियों के साथ पुरुलिया नहीं लिया गया पर यहां ही लोहरदगा में अपना Private Dispensary से हमारे मिशन के M.E school + लड़कियों के U. P. School और भाई और बहिनों की देख रेख किया कर रहे हैं॥

1894 में:— Rev F. Hahn + Rev. O. Gumasky + Rev. C. Lokiss की आज्ञा से चट्टी में एक पेरिस खोल दिया गया, और पेरिस के काम को देख-भाल करने के लिये Rev Suleman Khalkho पहिला देशी पादरी लोहरदगा इलाका में चट्टी के लिये ठहराया गया। उनके पीछे Rev. R. D. Lakra चट्टी पेरिस का काम देख भाल किया करते थे।

1897 में फिर भी एक नया Parish कुड़ु में खोला गया और पेरिस के काम को देख भाल करने के लिये Rev Christogirih Tirky पहिला पादरी कुड़ु के लिये ठहराया गया।

1897–1900 में Rev F. Hahn, Rev Christogirih Tirky + Rev R. D. Lakra और Candi Johan Tirky पूरे इलाके में घूम घूम के प्रभु का सुसमाचार प्रचार किया करते थे और बहुत से धर्म खोजक खृस्तान मंडलों में ग्रहण किये गये।

1901–1904 में Rev F. Hahn, Rev. F. Kaston, Rev. G Beckmman Rev A. Koppen, Rev Ch. G. Tirky + Rev R. D. Lakra मंडलों और स्कूलों के काम के देख रेख में रखे गये थे।

ईश्वर पिता की महा अनुग्रह से जब खिस्तानों की संख्या बढ़ गई और स्कूल के लड़के लड़कियों की संख्या बढ़ गई, तो मजबूर प्रधान मिशनरी Rev G. Beckmman, Rev Y. Gyallies + Rev. W. Stauter की आज्ञा से लोहरदगा में M. E. school 1905 में खोल दिया गया। जिसका पहिला Headmaster Mr. Hanuk Kujur ठहराये गये जो अभी तक लोहरदगा में ईश्वर की महा अनुग्रह से जीते हैं।

पहिला Staff जो M. E. School के लिये रखे गये थे सो ये थे।

(1) Mr. Hanuk Kujur (Headmaster).
(2) Pd. Yakub Lakra (Second master + Candidate थे जो अभी प्रभु में सो गये हैं).
(3) Mr. Christogirih Tirky (अभी तक जीते हैं)
(4) Mr. Prabhusewak Toppo (जो अभी चलहो में लोहरदगा इलाके में प्रचारक का काम कर रहे हैं)
(5) Pd. Suleman Minz – (जो अभी S. P. G. मिशन के M.E school में काम कर रहे हैं)
(6) Mr. Nuwas Minz Loyo (जो अभी प्रभु में सो गये).
(7) Mr. Johan Tirky Chitarkota (ये भी अभी प्रभु में सो गये हैं).

ये स्कूल के मास्टर, पण्डित और करिन्दात लोग- लोहरदगा स्कूल में प्रभु के लिये अपनी शक्ति भर काम करते थे। ~~जिन्हों की शिक्षा और अगुवाई से हमारे लुथेरान मण्डली~~ में पहिले बेच के लड़के लोग आज तक ज्योति की नाईं चमक रहे हैं। (1) Mr. Lazarus Lakra Tahsildar जो हमारे छोटानागपुर के महाराजा के तहसीलदार थे पर अभी पेंशन पाकर रांची में अपने घर में हैं। (2) Mr. David Tirky Tigawal जो बरवे लुथेरान मण्डली के प्रधान अगुवे हैं और बहुत वर्षों से C. C. के मेम्बर भी हैं। (3) Mr Abadnego Munzni थे जो छोटानागपुर महाराजा के तहसीलदार थे पर अभी पेंशन पाकर अपने घर में हैं। (4) Mr. Daniel Munzni जो F.O. को Clerk थे और अभी प्रभु में सो गये हैं। (5) Mr. Premchand Khalkho जो बोरे राज्य के प्रधान अगुवा और Head Pracharak + Master का काम करता था और बहुत से ~~सं~~सांसारिक भाई+बहिनों को क्रिश्चियनी मण्डली में प्रभु के लिये बुलाये। (6) Mr. Ishwardatt. Lakra जो इलाका पंच का मेम्बर था पर अभी प्रभु में सो गया है।

ऐसा ही लोहरदगा M. E. school से क्रमानुसार अनेक पीढ़ी कितने और जो धीरज और विश्वास सहित इसी स्कूल से इन्हीं प्रधान अगुवों के द्वारा निकलते गये और अभी छोटानागपुर और आसाम की क्रिश्चियानी कलीसिया में प्रभु का काम कर रहे हैं। जैसे:- (1) Rev. Joel Lakra. M.A. B.D. S.T.M. जो वर्तमान में हमारे छोटानागपुर और आसाम के प्रेसिडेन्ट हैं।

(2) Rev. U. E. Kujur जो रांची इलाके के Ilaka Chairman + C.C मेम्बर हैं।

(3) Mr. N. Toppo जो हमारे Trustee Board के Assistant Manager हैं।

(4) Pd. Christ Mikhael Ziga जो अभी Ranchi Ilaka ka Secy हैं।

(5) Mr. Immanuel Khalkho जो लोहरदगा इलाका के इलाका मेम्बर और Ilaka Treasurer हैं।

(6) Mr. Mahindar Kujur जो अभी डुमरी में मण्डली के प्रधान मेम्बर और Comittee के मेम्बर भी हैं।

ऐसा ही और भी कितने कितने बीर और और लोग इसी ही M. E school से निकलते चले आ रहे हैं और मण्डली में अगुवे ~~...~~ हैं।

(1) Rev. J. J. P. Ziga B.A. B.D. + Theological Principal + C.C. मेम्बर हैं।
(2) Mr. Theodor Toppo Chatakpur जो Mission Press के Book Binder हैं।
(3) ~~I~~ Sharan Lakra B.A. जो अभी वर्तमान में Kanke High school के Mattemetic Teacher हैं।
(4) Kuphalmay Minz जो अभी N. I. Ch. T. Society of Allahabad के accountant हैं।
(5) Theodore Lakra B.A. Asst. to A.G. Ranchi

1906 — 1912. Rev W. Brautser, Rev A. Mozkus, Rev G. Beckmman + Rev P. Wenylaff + Rev G. Eikert. + Rev Ch. G. Tirky, Rev M. Toppo + Rev Mattias Toppo. काम करते थे।

1912 में ईश्वर की अनुग्रह से Rev G. Beckmman की सहायता में फिर भी तीसरा पेरिस Sikwar में खोला गया और उसकी देखरेख के लिये Rev. Mattias Toppo रखा गया।

1913 + 1914 में Rev G. Beckmman + Rev R. Zick + Rev Mattias Toppo + Rev Ch. G. Tirky + ~~Rev ... Toppo~~ काम करते थे।

~~१९~~ 1914 में दुनिया में महायुद्ध का आरम्भ हुआ मिशनरी लोग विलायत अपने निज देश में लौटा दिये गये। मिशनरियों के चले जाने के बाद कलीसिया का भार देशी पादरियों के हाथ में सौंपा गया। जिसके अनुसार

1915 — 1920 तक Lohardaga Ilaka men Rev Ch. Girih Tirky Ilaka chairman + Rev Mattias Toppo Sikwar ka Parish chairman + Rev D. P. Minz Chatti Parish chairman और कुड़ु पेरिस को Ilaka chairman Lohardaga hi से देखरेख किया करते थे।

1921 — 1924. Ilaka chairman Rev M. Toppo थे और कुड़ु पेरिस का

काम को देखते थे + Rev Mattias Toppo Sikwar Parish में + Rev Ah. Pramuig Chatti का काम संभालते थे।

1925–1925. Rev U. E. Kujur Ilaka chairman, Chatti में Rev M. Toppo + Kuru में Rev Maghan Lakra काम करते थे। Ilaka chairman Sikwar Parish ka काम लोहरदगा से चलाते थे और उन्हीं दिनों से Lohardaga + Sikwar का काम Ilaka chairman ही से चलाया जा रहा है।

1930 में Rev. J. J. P. Tigga + Rev U. E. Kujur + Rev Maghan Lakra ने समूचे इलाका का भार चलाये थे।

1931–1934. Rev U. E. Kujur Ilaka chairman + Rev N. Khalkho Chatti, Rev Maghan Lakra Kuru में काम करते थे।

1935 + 1936 में Rev U. E. Kujur + Rev. J. J. P. Tigga + Rev M. Lakra + Rev. N. Khalkho थे।

1937 + 38. में Rev N. Khalkho Ilaka Chairman, Rev M. Lakra Kuru + Rev J. Lakra Chatti में थे।

1939 + 1940. Rev U. E. Kujur Ilaka Chairman, Rev N. Khalkho Kuru, + Rev J. Lakra Chatti men काम करते थे।

1941 में:– Rev J. A. Kujur Ilaka Chairman + Rev L. Kujur Chatti + Rev N. Khalkho Kuru में काम करते थे।

~~1942 + 1944. Rev J. Lakra. Ilaka Chairman + Rev L. Kujur Chatti में थे जो सब इलाका का भार लेकर कर्मचारियों की मदद से काम चलाते थे।~~

1945 में डिस्ट्रिक्ट कौंसिल की सलाह से कुड़ु पेरिस के लिये एक पादरी C.C. से नियुक्त किये। Rev L. Lakra Ilaka Chairman + Rev L. Kujur Chatti + Rev L. Khalkho Kuru में काम कर रहे हैं। इन्हीं के अधिपतित्व में अभी समूचे इलाके की जन संख्या और पेरिस + प्रचारक पद के कर्मचारियों की संख्या नीचे लिखे हुए के अनुसार वर्तमान है।

	घर।	बपतिस्त।	धर्मखोजक।	दृढ़ि कृत।	प्रचारक	पादरी।
I Lohardaga + Sikwar	384,	2133	15.	1196.	7	1
II Chatti Parish	306	1684	31	865.	9	1
III Kuru Parish.	361	2070.	5.	1157	10	1
Total No.	1015	5887.	51.	3218.	26	3.

Schools:– लोहरदगा इलाके में दो प्रकार के स्कूल हैं। पहिला Stipendary जिनका खर्च D.B + C.C + इलाके के खर्च से चलता है। और दूसरा Private schools जो केवल इलाका + भाईयों की मदद से चलाये जा रहे हैं॥

I Stipendary schools.

(a) M. E Boys school 1
(b) U. P Girls " 1
(c) L. P. Debat " 4
Total No. 6.

Boys + Girls →
222 + 101

VI.

		School	Boys		Girls
I.	B. F.	6	222	+	101
II	Private L. P. Schools. / Dehat L. P. Schools No. 6	6	Boys 150	+	Girls 50
		12	372	+	151 = 523.

Staff :- 17 Master + 3 Mistress = 20.

Ilaka members

(1) Rev. L. Lakra Ilaka Chairman.
(2) Rev L. Kujur. Parish "
(3) Rev. Z. Khalkho "
(4) Rev. S. A. B. Lakra. M.E. School Headmaster + Ilaka Secy.
(5) Cand. S. Toppo. Lohardaga
(6) Mr. Immanuel Khalkho Treasurer.
(7) Mr. Ishwarsahay Kujur. Second master
(8) Mr. Gideon Kindo Arangé (Sikwar Parish)
(9) Mr. Samuel Kujur Karak (Kuru Parish)
(10) Cate Barnabas Khakha (Kuru + Chandwa)
(11) Cate. Christoray Kindo Jalka (Sikwar Parish)
(12) vacant.

× × ×

ईश्वर पिता का अनुग्रह जो आज और कल और सर्वदा एकसां है हमारे इलाके की रक्षा रखवाली करे। उसी का गुणानुवाद सदा सर्वदा होवे। आमीन।

प्रभु में आप का सेवक
Rev. L. Lakra
Ilaka Chairman.
26-11-45.

लोहरदगा ही उरांव एरिया का एक ऐसा सेन्टर है जिसे समय समय पर ईश्वर पिता ऐसे ऐसे अगुवों को उदय करता है जो हमारे छोटानागपुर और आसाम की कलीसिया कलीसिया के लिये और धर्म के अगुवे माने जाते के लैक हैं। जैसे: समय समय पर सभा और समाजों को खड़ा कर अगुवाई करते हैं।

I. Jonkh Sabha जो १९२० में खड़ा किया जाकर समूचा उरांव एरिया में बढ़ा यही थी उसके मुख्य अगुवाये थे :- (1) Mr. Kushalmay Lakra Takie + Mr. Nahum Kujur merle. इनको मुख्य श्रम यह था (क) खिस्तानों को संसारिक यात्रा में जाने से मना करना। (ख) मतवालपन से रोकना, (ग) ईश्वरोपासना के लिये लोगों को अगुवाई करना।

II. क्रूश सेना जो १९४० से पहिले अरांगी प्रचारकपन से सुरु होकर अभी वर्तमान में प्रायः समूचे इलाके में फैलती आ रही है। इसके मुख्य अगुवा ये हैं (1) Mr Mansukh Ekka Arangi जो अभी हमारे सेमिनरी में पढ़ रहे हैं। जो सभा के President है (2) Mr. Ruben Kindo Jalka जो vice President (3) Mr. Ruben Kindo Sidhatoly जो सभा के Secy है (4) Mr Juraph Toppo Datre Trea. है। इसी सभा का मुख्य उद्देश्य भी ऐसा ही है जैसा जोंख सभा का काम था (क) S. S. प्रति गांव में चलाना, (ख) ईश्वरोपासना में लोगों को अगुवाई करना (ग) राज्यवृद्धि का काम करना। (घ) Bible कोश का खोलना, (5) मतवालपन से लोगों को बचाना, (च) समाज खोलना और समाज में सहायता देना॥

III महिला समाज :- यह समाज गिरती उठती कई वर्षों से चली आ रही है। पर १९४४ से यही समाज पूरे इलाके समाजों को अगुवाई कर रही है। इसी समाज का मुख्य काम जो वर्तमान में चालू है सो यह है (क) इलाके के सब समाजों को संगठन करना, (ख) प्रोपोज्ड हाई स्कूल के लिये रुपैया जमा करना,

P. T. O —

(ग) समाज में सिलाई काम सिखलाना, (घ) नये मिशन फील्ड के लिये चन्दों को बटोरना और उनके उत्साह के लिये चिन्ता करना, (ङ) समाज में Bible Class का चलाना।

इसी समाज के मुख्य चालक ये हैं:–

Mrs. M. Lakra President.

Mrs. A. Tiga Vice President.

Mrs. D. Lakra Secy.

Mrs. P. P. Minz. Treasurer.

Rajgangpur Ilaka का संक्षिप्त इतिहास।

—॥—

लगभग ईस्वी सन् १८७८ में जब मान्यवर डिडलौ फिस साहब टकरमा मिशन स्टेशन में थे उसी समय उन के आने जाने से चोथोर नामग्राम में धर्म का बीज बोया गया - ओ सब से पहिले चोथोर के वर्तमान बरला घराने का ~~वर्तमान व~~ कुशलमय रघु मुण्डा, बागे घराने का लोहरो आनन्द मसीह, बड़: खिरस्तोदास तोपनो ओ उसके भाई खुशीयान दुरु - दुसरी यथा में बरटोली के वर्तमान तोपनो घराने का मुन्डरा बरवा योहन, मोरहा मनमसीह डांग, ओ महुवाटोली का डेबरा युनास गुड़िया आदि भाइयों समेत ख्रीष्टीय धर्म में आये।

पहिले धर्म-चारियों में शेम बरद, थोमस हेमरोम, इसाहक तोपनो मन सिद्धु मुण्डु, इसाहक कुल्लना और सुलेमान तोपनो क्रमश: थे। पादरियों में रेथुव हेमरोम, मरकस तोपनो, ओ प्रभुसहाय होरो क्रमश: थे। हाल में थोमस तोपनो हैं। चोथोर मिशन कम्पाउण्ड को मुन्डरा बरवा योहन तोपनो और मोरहा मनमसीह गौरिया के द्वारा प्रेम से मिशन को सदा के लिये बकसीस दिया गया और उस समय के प्राचीन बाबु हानुख बागे के कठिन परिश्रम से वहां एक गिर्जा घर निर्माण किया गया - यहां से धर्म पूर्व की ओर लसे, लिलिया पोइंस, करीमाटी (जो अभी करीमाटी इलाका में शामिल है) पश्चिम में केउन्दमुण्डा, बड़माल उत्तर में तेतरा बहार, रैरबहार और दक्षिण में झुरमुल गांवों में धर्म फैल गया। आरम्भ में धर्म प्रचार में इतनी तकलीफ नहीं हुई पर जब गिमिस्की साहब कोरांजो से राजगांगपुर आया जाया करते थे उसी बीच लगभग १८८८ ईस्वी में भेलोवा डीह के पूर्व रंगाबोरा घाट के सामने अचानक घटना हुई। याने मान्यवर गिमिस्की साहब बबरची भैयरो तिरकी (बाद लेओ तिरकी प्रचारक), आनन्द मसीह

मिंज प्रचारक (खुरीटोला) भरिया, सिरु निर्मल, योगो डुइयां के साथ कुम्बा केड़ा (कुमारकेला) आ रहे थे उस समय भेलोवाडीह के गन्दरु उरांव, साहब ओ अनेक साथियों को देख जल्दी से गांव की ओर भागा और बताया कि ओड़का सब आया है इतने में गांव वाले, और भरोसा सिंह पैदल और रघुनाथ शिखर देव के राजा का दयाद राजपुत शिवनाथ सिंह गौरियां घोड़े पर तलवार के साथ आकर साहब ओ नौकरों को रास्ते में घेर लिया और उन्हें मार पीट करने चाहा और बांध कर सुआगढ़ (सुन्दरगढ़) ले जाने चाहा। साहब उन के चमक धमक ओ नंगे तलवार को देख डर से रुपैया का थैली उन्हें देने चाहा ~~एक गड्ढा में छिप गया~~ - इस पर प्रचारक आनन्द मसीह मिंज ~~साहब को हल्ला किया और~~ उन शत्रुओं को कुछ रुपैया दे शान्त किया के पीछे कुशल से कुम्बाकेडा पहुंच आ वर्तमान मिशन कम्पाउण्ड के अन्दर के एक जामुन गाछ के सामने डेरा किया। साहब ओ उन के साथियों ने जगह को भली भांति देख और रेलवे लाइन नजदीक होने से सुविधा के लिये मिशन स्टेशन बनाने का इच्छा प्रकाश किया। साहब कुम्बाकेड़ा से एक अर्जी D.C. चैबासा को भेजा ओ आप रांची चले गये और उन के साथी नौकरों को कह रखे कि नोटिस होने पर आना। बाद चैबासा पुलिस आ शिवनाथ सिंह गौरियां को पकड़ कर चैबासा ले गये उनके मामला गवाही में सिरु उरांव निर्मल, योगो डुइयां, भैयरो तिरकी और प्रचारक आनन्द मसीह मिंज गये थे। मामला फैसला पर शिवनाथ सिंह गौरियां को रु. ३००) जुर्माना देना पड़ा था - इसी समय से धर्म प्रचार में भी जो रोक-टोक थी बन्द हो गई।

१९०० ईस्वी में मान्यवर नोतरोत साहब, मा: गोलके साहब के साथ रांची से कुम्हाकेड़ा (कुमारकेला) आकर मिशन पावराड के लिये एक जमीन मोल लिये।

धर्मखोजक पुराना रिकॉर्ड से मालूम हुआ कि ईस्वी सन् १९०० में ७ प्राणी, १९०१ में २७ प्राणी कुमारकेला में मान्यवर नोतरोत साहब द्वारा बपतिस्मा पाये। १९०२ से ३ के बीच जिला सम्बलपुर के बीजू पाली गांव में ३ प्राणी, कुड़ालोर, कुसरी पाली, सिरगिड़ा १५ प्राणी धर्मखोजकों को बपतिस्मा मिला। १९०२ में गोलके साहब (राजगांगपुर) कुमारकेला आये औ हाता में एक बाजार बैठाया गया। उस बाजार में निषेध की चीजें (दारू, हाड़ियां) लाये जाने के वजह साहब कुछ कारवाई किये। यह खबर राजा के कान में पड़ी औ राजा के हुकुम अनुयाई धर्म की बढ़ती में कुछ बाधा हुई पर भाई लोग धर्म औ विश्वास में स्थिर रहे। मान्यवर गोलके साहब के कठिन परिश्रम से केसरामाल के पुरा सुकरा उरांव, सुना उरांव, सागर उरांव, कुरनोआं के बुधु चंदा उरांव और स्नानपाली के सिधा उरांव आदि ख्रीष्टीय धर्म को ग्रहण किये इस रीति से कारसाकानी, केन्दाईमाल, खनगा, बामड़ा औ झारसुगदा आदि में धर्म फैल गया। उस समय के मिशनरी औ पादरियों में — मान्यवर गोलके साहब, मा: गिमिरकी साहब, मा: पांपे साहब, मा: डिलर साहब पादरी नथानियल तिरकी, मोहन मेथा, अमुस बड़ा आदि थे। इनमें पादरी इलियाजर एक्का हैं। प्रचारकों में सब से पहिले रांची से स्नानपाली में दाऊद लकड़ा, केसरामाल में युनास उरांव, कारसाकानी में खुस्त प्यारा पेआं थे उनके बाद पुरुलियां से रूफुस, मसीह दास, मोहन संतलाल आदि प्रचारक आये।

वर्तमान कुमारकेला (राजगांगपुर) इलाका में

४५ प्रचारक, बपतिस्मा संख्या ~~८५४६~~ ११८१०, दृढ़ीकृत ~~३८८२०~~ ५४२१, धर्मखोजक ~~७८~~ १ पाद्री ११२ हैं।

(~~खनगन फेरिस्कल जन संख्या का हिसाब न मिलने के कारण इसमें दिखाया नहीं जाता है~~)

E. Ekka
Ilaka — Chairman

P. Nag
I. Secretary

लोअर आसाम इलाके का संक्षिप्त इतिहास।

लेखक :— पाद्री हनुकमिंज, तेजपुर, आसाम।

छोटानागपूर से उत्तर-पूर्व करीब ७०० मील दूर पर आसाम प्रान्त मे सन् १९०१ ई. में गोस्सनर लूथेरान कलीशा ने अपने काम का एक नया क्षेत्र स्थापित किया। छोटानागपूर से कितने लूथेरान लोग अपनी जीविका व्यतीत करने के लिये आसाम के चाय बगानों में रहते थे, कितने चाय बगान में रहने का स्थायी सुख समझ कर अपनी जन्मभूमि न लौटकर बस्तियों में रहने लग गये। यद्यपि उनके मध्य में अमेरिकनबपतिस्त औ अंगलिकन मिशन काम करते थे किलनी बातों में कठिनाई पाकर उनमें से कितने धर्म के पूरे लूथेरान खिस्तानों ने रांची छोटी-सभा में अरजी भेजा कि उनको आत्मिक चरवाही के लिये रांची से कोई पाद्री भेज दिया जावे। निस्सन्देह, आसाम प्रान्त में गोस्सनर एवं जेलिकल लूथेरान कलीशा का स्थापित होना उन्हीं धर्म के प्रेमी लूथेरान भाइयों के रांची छोटी-सभा (Vorstand) में अरजी करने का फल है। छोटी-सभा ने उचित समझ कर पाद्री आनन्दमसीह सोय को जांच करने के लिये आसाम भेजा वे कई जिलों में भ्रमण किये और लूथेरानों की आत्मिक औ लौकिक अवस्था को जांचकर रांची लौट गये, जिनके रिपोर्ट से छोटी-सभा सन्तुष्ट हो बेरलिन के होम बोर्ड को लिखा कि आसाम प्रान्त में गोस्सनर लूथेरान कलीशा का एक नया क्षेत्र स्थापित करने के लिये एक योग्य मिशनरी भेजा जावे। होम-बोर्ड की आज्ञा पर छोटी-सभा ने सीनियर मिशनरी पाद्री एफ. हाहन को आसाम भेज दिया। वे सबसे पहले सिबसागर जिले के जोरहाट शहर में पहुंचे और अपने रहने के लिये जोरहाट रेल स्टेशन के निकट १२००) रु. से एक बंगला खरीद लिये। उन्हें अच्छी रीति से इधर उधर भ्रमण करने पर मालूम हो गया कि आसाम में कलीशा खोलना नितान्त आवश्यक है, सो उनकी अरजी पर उनकी सहायता के लिये छोटी-सभा ने मिशनरी पाद्री पी. वागनर को जोरहाट भेज दिया।

ये दोनो मिशनरी जोरहाट को अपने काम का केन्द्र ठहराकर आपस में कामों को बांट करके चलाते थे, पाद्री हाहन ऊपर-आसाम के औ पाद्री वागनर लोवर आसाम के बस्ती और चाय बगानों की मण्डलियों की देखभाल करते थे। अभाग्यवश पाद्री वागनर औ उनकी मेमसाहिबा को बारबार बिमार होने के कारण आसाम का काम छोड़ देकर थोड़े दिनों के पीछे रांची लौट जाना पड़ा। उनके स्थान में काम करने के लिये मिशनरी पाद्री कार्ल बोकमन जोरहाट भेजे गये किन्तु उनके आने पर कुछ दिनों के पीछे पाद्री हाहन भी रांची लौट गये इसलिये पाद्री बोकमन की सहायता निमित्त मिशनरी पाद्री फ्रान्ज गौत्स जोरहाट पहुंचे। पाद्री बोकमन लोवर आसाम के नवगांव, डरांग औ नोर्थ लखिमपूर जिलों की मण्डलियों को वैसा ही पाद्री गौत्स अपर आसाम के लखिमपूर औ

सिबसागर जिलों के मण्डलियों की देखभाल करते थे।

जब लुथेरान ख्रिस्तानों की संख्या प्रतिवर्ष अधिकाधिक होती गई, डरांग जिले के बैंठामंगा बस्ती में एक नया हाता बनाने की आवश्यकता आ पड़ी। सन १९०५ ई. में आसाम की नई मण्डलियों को देखने के लिये बेरलिन से मिशन डैरेक्टर एच. कौश आये। वे बैंठामंगा बस्ती में एक नया हाता खोलने और मिशनरियों के रहने के लिये एक बंगला बनाने की आज्ञा दिये, उनकी आज्ञानुसार पाद्री ग्रैंस ने इस नये काम को आरम्भ करने का भार अपने ऊपर लिया किन्तु सन् १९०६ ई. में वे कालाज्वर से पकड़े गये, दिन प्रतिदिन उनकी अवस्था बुरी होने लगी. यह समाचार पाकर जोरहाट से पाद्री बेकमन उनकी सेवा के लिये बैंठामंगा आये। डाक्टर ने पाद्री बेकमन को सलाह दिया कि हवाबदली के लिये पाद्री ग्रैंस तेजपूर पहुंचाया जावे। वहां लाये जाने पर कुछ दिनों के पीछे पाद्री ग्रैंस अंग्रेजी मिशन के बंगला में लोकान्तर हो गये। दुःख का समाचार पाकर रांची से उनके छोटे भाई मिशनरी पाद्री फर्दिनन्द ग्रैंस तेजपूर पहुंचे किन्तु शोक की बात हुई कि वे उस समय पहुंचे जब कि उनके भाई का मृतक शरीर कबर में रखा जा चुका था। उन्हीं की इच्छा हुई कि अपने भाई के स्थान जोरहाट में काम करें, वैसी बात होने पर पाद्री बेकमन छुट्टी में जरमनी लौट गये तिसपर छोटी-सभा ने उनके जगह में मिशनरी पाद्री डबल्यू. रदसिक को भेज दिया।

दोनों मिशनरी अर्थात पाद्री फर्दिनन्द ग्रैंस और पाद्री डबल्यू. रदसिक जोरहाट के छोटे बंगला में एक साथ रहते थे और वहीं से आरम्भिक रीति अनुसार ठहराये हुए कामों को करते थे। दोनों मिशनरी प्रतिबरस प्रचारकों के धर्मज्ञान बढ़ती के लिये शिक्षा क्लास करने में बहुत ध्यान देते थे। पाद्री रदसिक कभी २ डरांग और नवागांव जिलाओं के प्रचारकों के लिये शिक्षा क्लास चलाते थे उन्हीं दिनों में सन् १९०८ ई. में बेरलिन होम बोर्ड की ओर से और एक मिशनरी पाद्री एफ. गोहलके आसाम भेजे गये उन्हें यह आज्ञा दिई गई थी कि बैंठामंगा नये हाते में एक मिशनरी-बंगला और गिर्जा घर निर्माण करें। उन्हें घर बनाने का अच्छा ज्ञान था सो उन्होंने बैंठामंगा का बंगला और गिर्जा घर बनवाया।

सन् १९०८ ई. में पाद्री फर्दिनन्द ग्रैंस और पाद्री डबल्यू. रदसिक दोनों की शादी हो गई। शादी के पीछे पाद्री एफ. ग्रैंस तो रांची लौट गये किन्तु उनके स्थान पर मिशनरी पाद्री कार्ल बेकमन भी शादी करके जरमनी से जोरहाट पहुंचे। एक ही छोटे जोरहाट

बंगला में दो परिवारों का रहना असुविधाजनक मालूम हुआ। इस कारण १९०९ ई. में लखिमपुर जिले को तिनसुकिया शहर के निकट और एक नया हाता खोलने की आवश्यकता हुई। थोड़े ही खर्च से पादरी डबल्यू. एदसिक ने वहां एक सुन्दर बंगला और कई घरों को बनवाया। तिनसुकिया एक बड़ी रेल जंकशन का स्टेशन होने के कारण पादरी डबल्यू. एदसिक को मराडलियों को देखने जाने के लिये बड़ी सहायता होती थी, यों वे अपने परिवार के सहित १९०९ ई. से १९२५ ई. तक वहीं रहकर प्रभु के कामों को किये।

सन् १९१२ ई. में जब पादरी कार्ल वेकमन बिमार पड़े उनकी अरजी पर छोटी-सभा ने उनको आसाम से रांची बुला लिया। उनके चले जाने पर पादरी डबल्यू. एदसिक को उनका काम भी सम्भालना पड़ा, किन्तु पादरी एदसिक अपने काम में कभी थक नहीं जाते थे, उन्हें कभी २ महीनों दिन स्टेशन से बाहर रहना होता था उनकी मेमसाहिबा अपने बालकों और स्कूल के लड़के लड़कियों की चिन्ता में लगी रहती थीं। स्कूल के प्रधान शिक्षक बाबू मोहन मराईया थे जो पीछे आसाम छोटी-सभा की मंजूरी पर सेमिनरी (रांची) में कुछ दिनों की विशेष शिक्षा लेकर पादरी पद पर अभिषिक्त हो राजाबहार पेरिस के जिम्मे में रखे गये और वे वर्तमान समय तक उस पेरिस की आत्मिक चरवाही कर रहे हैं। पादरी डबल्यू. एदसिक की मूल चिन्ता थी कि सब खिस्तान लोग भले मसीही हो आत्मिक जीवन में बढ़ते जावें।

इन्हीं दिनों में जब आसाम में मराडलियां दिन दिन बढ़ती जाती थीं सन् १९१४ ई. में यूरोप में अंगरेज और जर्मन जातियों के बीच प्रधान महायुद्ध छिड़ गई। युद्ध छिड़ते ही जितने जर्मन मिशनरी आसाम में थे शत्रुप्रजा ठहराये जाकर नजरबन्द किये गये। उनके जाते ही कलीसिया असहाय अवस्था में आ गई, मानो कलीसिया के लिये कठिन परीक्षा के दिन आ चुके थे। उनके जाने पर छोटानागपुर से भेजे हुए बाबू अब्राहाम तोपनो पादरी पद पर नियुक्त हो ऊपर आसाम की मराडलियों के देखभाल में वैसा ही लोवर आसाम के लिये बाबु मोहन होरो पादरी अभिषिक्त किये जाकर ठहरा दिये गये।

युद्धकाल के दिनों में सारी कलीसिया की अवस्था अति डरावनी थी। अन्य मिशनवाले हमारे लुथेरानों को अपनी कलीसिया में मिलाने की चेष्टा करने लगे किन्तु जब छोटानागपुर और आसाम की गोस्सनर एवंजेलिकल लुथेरान कलीसिया ने सन् १९१९ ई. की १० वीं जुलाई में कलीसिया का ओटोनोमी घोषित किया, सारी गोस्सनर कलीसिया नये सिरे से अपने बहुमूल्य लुथेरान विश्वास में स्थिर हो गई। आसाम के भाइयों को शान्त और स्थिर करने के लिये सेन्ट्रलकमिटी ने रांची से पादरी रुफुस दत्तो लकड़ा को भेजा। उनका ऐसे समय में पहुंचना बड़ी आशीष का कारण बन गया। अब कलीसिया

ऐसी अवस्था होने पर भी संख्या में बढ़ती जा रही है। आसाम के लुथेरानों को १६१५ ई॰ से १६२० ई॰ तक बिना मिशनरी होकर मराडली का काम चलाना पड़ा है।

आसाम में गोस्सनर कलीशिया का इतिहास देखने से मालूम होता है जौभी प्रगट रीति से आसाम क्षेत्र का काम दो इलाकाओं में विभक्त नहीं था तौभी आरम्भ काल ही से मराडली का काम ऐसा चलाया जाता था मानो दो इलाकाओं ही में विभक्त हैं।

मिशनरियों के रहते समय ही लोअर आसाम में नोर्थलखिमपुर सबडिविजन के देवबील बस्ती में एक पाद्रीपन खोला गया था जहां पाद्री योहन मैंगरा रहते थे किन्तु वे थोड़े दिनों ही में ~~वहीं~~ लोकान्तर हुए। महायुद्ध के कारण जब मिशनरियों को मराडली का काम छोड़ना पड़ा लोअर आसाम की मराडलियों की देखभाल करने के लिये मिशनरी पाद्री एफ॰ गोहल्के के स्थान में पाद्री योहन होरो और ऊपर आसाम के लिये मिशनरी पाद्री डबल्यु॰ रदीरु के स्थान में पाद्री अब्राहाम तोपनो ठहराये गये। युद्धकाल के दिनों में मराडली चलाने का कठिन बोझ इन्हीं के ऊपर में था, भाई बहिनों को समझाने, स्थिर करने में दिन और रात लगा रहना पड़ता था और उनका परिश्रम सन्त में व्यर्थ नहीं हुआ। ऐसे दुर्दिनों के समय में देवबील के पाद्री योहन मैंगरा की मृत्यु हो गई - ऐसी अवस्था के उपस्थित होने पर पाद्री अब्राहाम तोपनोको जो उस समय तिनसुकिया में थे देवबील आना पड़ा और उनके स्थान पर बाबु हनुक खलखो पाद्री पद पर अभिषिक्त किये जाकर मराडली का बोझ उठाने को छोटानागपुर से भेजे गये। ~~उठा~~ देवबील का पाद्रीपन ठीक स्थान में न होने के कारण पाद्री अब्राहाम तोपनो को चांट[illegible]री बस्ती में एक नया पाद्रीपन खोलना पड़ा।

लोअर आसाम के मराडलियों की देखभाल करने में कई कठिनाइयां होने लगीं इस कारण नवागांव जिले के लुथेरानों की आत्मिक चरवाही के लिये बाबु सुलेमान सरकार पाद्री पदाभिषिक्त ~~पा कर~~ होकर ठहराये गये जो आजतक नवागांव पेरिस की चरवाही में लगे हैं।

~~अब~~ पाद्री योहन होरो ~~बुढ़ापे की अवस्था में आने लगे~~ को बहुत काम होने के कारण सहायक बनाने के लिए एक अनुभवी प्रचारक बाबु सिलास होरो थोड़े दिनों को विशेष शिक्षा के लिये रांची लुथेरान सेमिनरी में भेजे गये। अपनी शिक्षा पूरी करने पर पाद्री पद पर अभिषिक्त किये गये। वे पीछे डरांग और कामरूप जिलाओं के खिस्तानों की चरवाही के लिये बैठामंगा भेजे गये। उनदिनों में बैठामंगा से पश्चिम मराडली बढ़ रही थी सो पाद्री सिलास होरो ने धमरासाल्लिपुर में एक नया पाद्रीपन खोला। प्रभु ने उनके कामों पर अधिका

से आशीष दी जिनका प्रमाण कितनी जीवती औ बड़ी मराडली ही हैं। उनका काम और भी आगे पश्चिम में बढ़ते गए जब कि उड़ीसा प्रान्त के Schleswig Holstein Evangelical Lutheran (S.H.E.L.) मिशन से आये हुए उड़िया जाति के लुथेरान ख्रिस्तानों को जो कितनी बाग बगानों में रहते थे देखना पड़ा। कुछ बरस बीतने पर पादरी मोहन होरो की मृत्यु हो गई, पीछे पादरी सिलास होरो को उनका काम भी सन् १९३०ई. तक सम्भालना पड़ा।

सन् १९३१ ई. में दूसरी बार मिशनरी पादरी डब्ल्यु. रदसिक जर्मनी से आसाम भेजे गये। जब उन्हें मालूम हो गया कि तिन सुकिया और जोरहाट के बंगला गिर गये हैं बैठामंगा हाता में रहना अच्छा समझे। उनके आते ही चर्च-कौंसिल ने आसाम की मराडलियों को चलाने के लिये छोटी-सभा का निर्माण किया और पादरी डब्ल्यु. रदसिक छोटी-सभा के चेयरमेन औ समुचे आसाम इलाका का इलाका-चेयरमेन हो गये।

बहुधा पादरी डब्ल्यु. रदसिक और पादरी सिलास होरो दोनों एक साथ मराडलियों को देखने जाते थे और प्रायः सभी मराडलियों में मराडली पंच औ प्राचीन ठहराते थे। मिथ्याविश्वास और मतवालपन से लड़ने के लिये भाई बहिनों को जगाते थे। विशेष ध्यान दिया जाता था कि प्रतिरविवार हर मराडली में गिर्जा होती है औ मराडली के भाई बहिन आत्मिक जीवन और आत्मपालन में बढ़ते जाते हैं। इन्हीं की सफलता के लिये मराडली मराडली में प्रार्थना-समाज, संयम समाज औ सराडे स्कूल खड़े किये जाते थे फिर कई स्थानों में धर्मसभा किये जाते थे। निस्सन्देह इन सब परिश्रमों का फल सार्थक हुआ, भाई बहिन विवाह में डालीटका लेने की प्रथा त्यागने लगे, मिथ्याविश्वास औ मतवालपन से लड़ने लगे औ आत्मपालन के लिये कई देनों को देने के लिये हाथ बढ़ाने लगे।

पादरी डब्ल्यु. रदसिक आसाम इलाके का इलाका चेयरमेन होने के कारण बहुधा ऊपर आसाम की मराडलियों को भी देखने जाते थे। इस कारण जब देखा गया कि पादरी सिलास होरो का काम अधिक होता है छोटी-सभा की ओर से यह अरजी की गई कि चर्च-कौंसिल बाबु मोहन तिड़ु को थोड़े दिनों की विशेष सेमिनरी शिक्षा देकर आसाम भेज देवे।

अरजी सुनै जाने पर बाबु मोहन तिड़ु कुछ महिनों की विशेष शिक्षा के लिये लुथेरान सिमिनरी रांची में भेजे गये। पादरी हो जाने पर उनको बैठामंगा आना पड़ा जहां वे आजतक बैठामंगा पेरिस की देखभाल करते हैं।

जब तिनसुकिया के पाद्री हनुक खलखो की मृत्यु हो गई उनके स्थान में चर्च कौंसिल ने पाद्री लुकस हेडेंज को भेजा। ये एक योग्य और अनुभवी पाद्री होकर मण्डली के कामों को चलावे थे और ईश्वर ने उनके कामों पर बहुताई से आशीष दिया। कुछ समयों के बाद उनकी बदली चांदमारी में हुई और उनके स्थान में फिर पाद्री अब्राहाम तोपनो को आना पड़ा। जब वे चांदमारी में रहते थे उनके शरीर में विषैले घावें निकले जिससे अन्त में वहीं उनकी मृत्यु हो गई। ऐसी दुर्घटना के कारण छोटी-सभा ने पाद्री अब्राहाम तोपनो को उनके पुराने स्थान में भेज दिया और उनके स्थान में घघराशान्तिपुर में रहनेवाले पाद्री सिलास होरो को तिनसुकिया भेजा। घघराशान्तिपुर पेरिस के कामों को अब नवागांव पेरिस के पाद्री सुलेमान सरकार को लेना पड़ा।

कई बरसों के पीछे पाद्री सिलास होरो को अपने पुराने स्थान घघराशान्तिपुर में लौट आना पड़ा किन्तु इस समय वे अपने लिये रहने का निज घर खिस्तानपड़ा बस्ती में बनवाये और तिनसुकिया पेरिस के लिये बाबू पौलुस पुर्ती जो एक अनुभवी प्रचारक थे थोड़े महिनों की विशेष शिक्षा के लिये रांची सेमिनरी में भेजे गये। पाद्री पद पाने पर वे तिनसुकिया पेरिस के जिम्मे में ठहराये गये और वे वर्त्तमान समय लों वहीं हैं।

आसाम क्षेत्र के कामों को चलाने के लिये जब जोरहाट का बंगला गिर चुका था कोई हाता ऐसा स्थान नहीं था जो कि केन्द्र स्थान बन सके। इस बड़ी घटी को पूर्णता के लिये कितनों ने अपनी घुटना ईश्वर के आगे झुकाया। ईश्वर ने निश्चय ही उनकी पुकार पर ध्यान दिया और इसके प्रति तेजपुर शहर के निकट एक सुन्दर स्थान को दान में कलीसिया को मिल जाने के द्वारा प्रमाण दिया। बात यों हुई— सन १९३४ ई० के अक्टोबर महीने में सेसा नामक चाय बगान के मैनेजर साहब Mr. Hugh Dinning ने मिशनरी पाद्री डब्ल्यु. रदीसिक को कहा कि "मैं अपने लिये तेजपुर शहर के निकट जो जमीन और बंगला खरीदा हूं आप को कलीसिया को सेंतमेंत में दे दूंगा"। जमीन और बंगला लूथेरान कलीसिया को मिल जाना ५ वीं जनवरी १९३५ ई० में रजिस्ट्री होने के द्वारा पूरी हो गई। यह ईश्वर का महादान था जिसे उसने हमारी कलीसिया को दिखाया। तेजपुर में जमीन और बंगला मिल जाने पर पाद्री डब्ल्यु. रदीसिक बौंगाईगांव हाता छोड़ कर तेजपुर नये हाते में आ गये और तब से यही स्थान आसाम क्षेत्र के कामों को चलाने का केन्द्र स्थान बन गया है।

जब तेजपुर का नया हाता मिला था जंगली पौधों और झाड़ों से पूर्ण था जहां बाघ और सियार रहते थे। पादरी डबल्यु रदसिक को इस निर्जन स्थान को सुन्दर रूप में बदलना पड़ा। जंगल साफ किये जाने पर दो तीन घर भी बनवाये। अगले बरस सन् १९३१ ई. में चर्च-कौंसिल ने उनको बदली रांची में किया और उनके स्थान पर मिशनरी पादरी जे. शेरनात तेजपुर पहुंचे। कुछ महिनों के आगे एक और नये मिशनरी पादरी डबल्यु. कुम्बर्लस को बैठाभंगा भेजे गये। तुरन्त एक लोअर प्राइमरी स्कूल तेजपुर में खोला गया और फिर कितने घर बनवाये गये। प्रति बरस पादरी जे. शेरनात तेजपुर में प्रचारकों को शिक्षा क्लास चलाते थे और कभी कभी ऊपर आसाम की मण्डलियों को देखने भी जाते थे किन्तु कुछ बरसों के पीछे दोनों पादरी जे. शेरनात और डबल्यु. कुम्बर्लस को को उनकी बिमारी के कारण परिवार सहित जर्मनी लौट जाना पड़ा। इस बदलाहट के कारण चर्च-कौंसिल ने पादरी डबल्यु. रदसिक को फिर तेजपुर भेज दिया। वे नये आनन्द और जोश के साथ मण्डली के कामों को चलाना शुरू किये। तेजपुर में स्कूल घर, बोर्डिंग घर और मास्टरों के घर बनवाये गये, किन्तु दुःखकाल का आगमन निकट ही था।

उन्हीं दिनों में छोटी-सभा की अरजी पर आसाम क्षेत्र में काम करने के लिये करिडन्त हनुकमिंज को चर्च कौंसिल ने तेजपुर भेज दिया। वे पादरी जे. शेरनात और पादरी डबल्यु. रदसिक की अगुवाई में होकर विशेष कर तेजपुर स्कूल में धर्म की शिक्षा देने का काम करते थे।

सन् १९३७ ई. में जब पादरी अब्राहाम तोपनो ने पेन्शन ग्रहण की और पादरी सुलेमान सरकार की बदली डिकोराई नामक नये पेरिस में हुई करिडन्त हनुकमिंज पादरी पद पर ठहराये जाकर चांदमारी और नवागांव पेरिसों के कामों को देखने के लिये ठहराये गये। सन् १९३९ ई. के फरवरी महीने में नया मिशनरी पादरी एच. बोरुत्ता तेजपुर पहुंचे। वे थोड़े दिनों के लिये भी मण्डली का काम न करने पाये क्योंकि उसी बरस जब सेप्तेम्बर महीने में दूसरी महायुद्ध छिड़ गई दोनों पादरी डबल्यु. रदसिक और पादरी एच. बोरुत्ता नजरबन्द में रखे जाकर पुरन्धर केम्प भेज दिये गये। ऐसी आकस्मिक घटना के आने पर पादरी सिलास होरो आसाम छोटी-सभा के चेयरमेन और आसाम इलाका का इलाका चेयरमेन ठहराये गये और पादरी हनुकमिंज आसाम छोटी-सभा के सेक्रेटरी हो गये। उनको अब चांदमारी और नवागांव पेरिसों का काम छोड़ कर घघराशलिपुर पेरिस का काम देखना पड़ा।

चांदमारी पेरिस के काम को पुराने पादरी अब्राहम तोपनो को ऐसी कठिनाई के कारण फिर से लेना पड़ा। पादरी सुलेमान सरकार नवागांव और डिकोराई पेरिसों की चरवाही करने लगे।

१९४२ ई. में छोटी-सभा ने तीन योग्य और अनुभवी प्रचारकों को कुछ महिनों की विशेष शिक्षा के लिये रांची लुथेरन सेमिनरी में भेजा उनमेंसे दो जन अर्थात बाबु सन्तोष होरो और बाबु नैनसुख तिरकी पादरी पद पाकर सन् १९४४ ई. की फेरवरी महीने में आसाम आये और छोटी-सभा ने क्रमशः पादरी सन्तोष होरो और पादरी नैनसुख तिरकी को चांदमारी और डोंगीबील (नया पेरिस) पेरिसों के जिम्मे में रक्खा।

आसाम क्षेत्र का काम सन् १९४३ ई. तक मिशनरीकाल की रीति अनुसार चलाया जाता था। इस रीति को १९४४ ई. की महासभा ने बदल दिया। उसी महासभा की फैसले अनुसार आसाम क्षेत्र का काम (१) अपर आसाम इलाका और (२) लोवर आसाम इलाका में विभक्त हो गया। इसके फल स्वरूप पादरी सिलास होरो जो पहले आसाम क्षेत्र वा इलाके के इलाका-चेयरमेन थे अब आसाम क्षेत्र के सुपरिन्टेनडेन्ट पद पर घोषित किये गये और पादरी मनसिद्ध हेमरोम जो अपर आसाम में रैडांग पेरिस का देखभाल करते थे अपर-आसाम-इलाके का प्रधान इलाका चेयरमेन हो गये वैसाही पादरी हनुक मिंज जो छोटी-सभा के सेक्रेटरी थे लोअर-आसाम-इलाके का प्रधान इलाका चेयरमेन हो गये।

इस बड़ी बदलाहट के आने पर छोटी-सभा जो बराबर चर्च-कौंसिल की अगुवाई में काम करती है अब दोनों इलाकाओं के कामों पर शासन कर्त्ता सभा रहेगी।

लोवर-आसाम-इलाके के लिये तेजपुर में एक मिडिल ईंगलिस स्कूल है। अभी इस नई निर्धारित लोअर आसाम इलाका के सन्मुख कई जटिल सामस्य उपस्थित हो रही हैं परन्तु वह ईश्वर के आत्मा की अगुवाई में होकर आगे की ओर दौड़ने की आशा रखती है।

इस लोअर-आसाम-इलाके की चौहद्दी यों है, उत्तर में हिमालय पर्वत श्रेणी, दक्षिण में नवागांव और सिवसागर जिला, पूर्व में लखिमपुर जिला और पश्चिम में कामरूप जिला है। इस नये इलाके का भौगोलिक फैलाव नवागांव, डरांग, कामरूप और नोर्थ लखिमपुर सब-डिविजन (लखिमपुर-जिला) जिलाओं में है। जिसमें छघराशान्तिपुर, नवागांव, बेहामंगा, डोंगीबील और चांदमारी पेरिस हैं। इस इलाका के भीतर कई बड़ी नदियां हैं, जैसे ब्रह्मपुत्र, रंगा, सुबनसिरी, डिकरंग, जियाभरेली इत्यादि। फिर तेजपुर-बालिपड़ा रेलवे और बंगाल एन्ड आसाम रेलवे कम्पनियों की रेल लाईन दौड़ती है।

हवापानी इस इलाके में अच्छा है, पर गर्मी ऋतु में अधिक गर्मी और शीतकाल में अधिक शीत होता है। प्रधान खेती धान, जूट, गुड़, कतारी और चाय है। चायखेती के लिये आसाम संसार भर में पहला होने के कारण इस इलाके के भीतर सैंकड़ों सुन्दर चाय बगान हैं। जहां अधिकतः छोटानागपूर से आये हुए आदिवासी लोग अपनी जीविका कमाने के लिये काम करते हैं। इस इलाके में रोमन कथोलिक, अमेरिकन बपतिस्त और अंग्रेजी मिशन काम कर रहे हैं।

इस वर्त्तमान समय में लोअर आसाम इलाका में करीब नौ हजार लुथेरान खिस्तान हैं जिनकी आत्मिक चरवाही के लिये करीब ४५ प्रचारक और छः पादरी हैं। यह एक बड़ा आत्मा का इलाका है जहां लाखों आत्मा सच्चे ईश्वर की खोज में पड़े हैं हमें उन्हें खोजना और बटोरना है।

———x———

Palkot Ilaka ka Sanchhep Barnan.

Palkot Ilaka bilkul naya Ilaka hai. yah 1944 men banaya gaya hai. jis samay Ilaka nahi banaya gaya tha us samay bahut kathinta se dekhi jati thi. yah Khutitoly se utar Takarma se pachim Gumla se dakhin men hai. Sab ~~taf~~ tarap se prayah bich men hai. jau bhi Takarma aur Gumla se kuch nikat hai tau bhi yah Ilaka Khutitoli se dekhi jati thi.

Ilaka jab nahi ~~bay~~ banaya gaya tha, Lamdon men ek Perish khara kiya gaya tha jo Khutitoli ka perish tha.

yahan ke sab se adhik bikhyat padri baboo Christ Anand Ming the. We bare parisram se budhe hone tak biswastta se kam kiye unke bad Padri babu L. Topno aye we bhi bahut parisram se kam kiye ye yahan ke Kunt khatidar samghe jate hain. abhi

bartman men we penson pa rahe hain.

Lamdon periosh tha, lekin anek karanong se yah phir uthaya gaya aur phir Khutitoli men milaya gaya. Wahin se bahut barson tak kam chalaya gaya.

Khutitoli Ilaka bahut jangal aur paharong se bhara hai. anek asubida-wong ko dekh yah alag kiya gaya. yah Palkot Ilaka pahle Tupar Pat ke nam se tha, lekhin jab se alag kiya gaya Palkot Ilaka kaha jata hai. Hal men is ka center Parsoani men hai.

Palkot Ilaka men ath pracharak pan hain jo panch pracharakong se chalaya jata hai. yahan mission ke kam adhik hain. abhi yah bahut chhota hai yahan ki jan sankhya Christanong ka 1229 hai. Umed hai aur binti hai ki is Ilake men Iswar ka raj bahut

. jaldi aur adhik adhik phailta jaega. Ishwar pita yahan ke mission kam men Sahayta kare.

Rev. P. W. Lakra.
Panigam.

Ilaka History, Manbhum Purulia 1945. A.D.

Manbhum G.E.L. Mandali ka suru 1865. A.D. se huwa hai. Bilati padri Rev. H. Onasteh ke dwara Manbhum Christian mandali kam ka suru huwa hai. 1865 iswi se abtak bhin bhin 13, jan bilati padri yahan kam kiye hain, Aur Deshi padri 8 jan Kam Kiye hain. Mandali ka suru se ab tak jitne larke larkiyon ko Baptisma mila hai unka sankhya 2796. hai. Aur suru se ab tak jitne dharm khojakon ko Baptisma mila hai unka sankhya 1155. hai. Bartman iswi men Baptisma paye huwon ka sankhya 1153. Aur Drirhikriton ka sankhya 609 hai. Manbhum mandali ka pahila christian Jargo gaon men huwe the. 1865. A.D. We nirgun dharm mante the. Jab we christian dharm samjha tab Christian huwe. Hamare Chota-naghur men Deshi Padri Paulus Nemo sab se pahila hai. Yahan lon jitne Christian huwe hain ulat ke sangsari ya Hindu Dharm men nahin gaye hain. Par san iswi 1879 sal men bahut kai S.P.G. mission men chale gaye hain. Aj kal Jargo gaon men R.C. Mission bhi Kam kar rahe hain. Bartman samay men 10 stationon men ye Lutheran christian lag rahte hain. San iswi 1945. men. Manbhum Lutheran Christianon ke bich kam karne ke liye C.C. do deshi padrion ko niyukt kiye hain.

P.C. Punoria, Pastor. Purulia
G.E.L. Church. 15th March 1945.

रुगुड़ीटोली- कलीसिया-का

संक्षिप्त- मसीही- इतिहास

रुगुड़ीटोली- Station और-कलीसिया — रुगुड़ीटोली-कलीसिया-पहले-टकरमा-कलीसिया-के अन्दर-थी-। और-रुगुड़ीटोली-कलीसिया- Biru Estate के-अन्दर-है-।-जब-इस- Estate याने- परगने-के-कई एक-गाँवों-में-ख्रीस्तानी-धर्म-आई- तब-मिशनरियों-के-द्वारा-इधर-भी-एक- Station बनाने-का-विचार-हुआ-।- जिस पर नायवर-पादरी- Rev. P. Eidness. जो-टकरमा-कलीसिया-के- Chairman-थे- पहले-वर्तमान मिसनेड़ा-कचहरी-आफीस को- Station के लिये- जगह-चुने थे- जिसके-लिये-उन्हों-ने उस-समय-के- Biru Estate के जमीन्दार- ठिकैत- साहेब- गजराज-सिंह-को २००) एक-सौ- रुपैया-सलामी-भी-दिये-।-पर-ठिकैत-साहेब- इस-शर्त-पर-जगह-देने-को- कबूल-किये-कि-पादरी-साहेब-लोग-उसके-समय-के सब-रैयतों-को-उसके-अधीन-कर देवें, जिसको वह-से-मिसनेड़ा-में-जगह-न-मिली-। पर-नायवर-इस-बात-को-थोड़े-दिनों बाद-ठिकैत-गजराज-सिंह-का-देहान्त-अचानक-होई एक-गोलवाना-में- रांची-जाते हुए भी जिसके-उनको-रुपैये-की-बहुत-आवश्यकता-हुई-।-देहान्त गोविन्दपुर-में- तब-मिशनरियों-को- Biru Estate के-भीतर- Station बनाने-का-विचार-को-जानते-थे-रांची-के- हमारी-कलीसिया-के- Vorstand- Rev. D. Dr. A. Nottrott. के-पास-जो-रांची-में-थे-गये और उनसे ३००) तीन-सौ-रुपैया-लेकर- Station बनाने के लिये- आदमी- ई०, ७०-एकड़ टांड़-जमीन रुगुड़ीटोली-गाँव-में लिखवाये-।-जो पर कि-वर्तमान रुगुड़ीटोली Station Compound है-।- कितने-दिनों-के-बाद-रुगुड़ीटोली-गाँवकी सोलह आना अदाय-न-करने-के-कारण-निलाम-में-चढ़-गया-। जिसको टकरमा-कलीसिया-की मसीही-पैसा-से- कम- २०००) दो-हजार-रुपैया-में-मिशन-के-नाम-से निलाम खरीद-किया-गया-। जिससे-रुगुड़ीटोली-गाँव- ~~मिशन~~-मिशन-के-दखल-में-आ-गया-। (इस प्रसंग-बातों-को- लिखनेहुआ- यहां-के-पहिला-मिशनरी-नायवर पादरी- Rev. Ch. Jokies साहेब- को-पादरी-बाबू-रामदुलार मिंज- को-प्रचारक-बोआस बागे-के-मुँह-से- सुना-है-।-) यह-तो- Station और-गाँव-की-बात-हुई-।-

इस-कलीसिया-में ख्रीस्तानी धर्म-के-आने-को-मैंलने-का- समय-तीन भागों-में-बांटा-जा-सकता-है- याने- I मिशनरियों-को- यहां-रुगुड़ीटोली-में- Station बनाने की-आने-के-पहिले- II मिशनरियों-का-समय- III मिशनरियों-के-बाद का-समय-याने- सन्-१९६४-से-इधर-आज-तक-।

I मिशनरियों-के- यहां रुगुड़ीटोली-में- Station बनाने-को आनेके-पहिले-।-

पहिले-दिखलाया-गया है- कि-यह-कलीसिया- परगने- बीरु के अन्दर-है- जो-टकरमा-कलीसिया-में-थी-।- ख्रीस्तानी- धर्म- के- आने-के-पहिले- इस- देश-के- आदिवासियों को- भूत-प्रेत-और- डाइनों-का-है- बहुत ही- जंगली-और-दुःखमय-अवस्था-में-रहती-थी-।- इसका-लिखनेवाला-इन-दिनों-के-देश-की-हालत-को-कुछ बहुत-अच्छी-आंखों-से-नहीं-देखता है- और-ऊपर-आवाजी-देता है- कि-जाना-चाहिये लोग- इन आदिवासियों-से-नाना-व्यवहार- करते-थे-।- जुल्मों और-पशुओं-के

કે-જૈસા-ઇન-સે કામ-લિયા-જાતા-થા। ખેતી-બારી-ઘર-ગૃહસ્થી. મજદૂરિયા-બેઠ બેગાર
ઔર-સબ-તરહ-કા-કામ ઇનસે-લિયા-જાતા-થા। કિસી આદિવાસી-કા-અગર કોઈ-
જાનવર ભી-હો-તો-વહ-જાનવર રાજા-જમીંદારોં-સે-બિના-દામ-દિયે-હી-લે લિયા-જાતા-થા-
થે-આદિવાસિયોં-કો-સબ-અચ્છે-અચ્છે-ચીજ-કી-વસ્તુએં યહાં-તક-કિ-જમીન ભી
ભી-જમીંદાર-કે-હી-હોતે-થે। આદિવાસી-લોગ-રાજા-જમીંદારોં-કો-દાન-સમઝે-જાતે
થે। ઉપરોક્ત-બાતોં-કો-સોચને-પર-ગુલામી-પ્રથા-કા-એક ઉપયુક્ત-ચિત્ર-ખ્યાલ-મેં-
આતા-હૈ- યાને—

Chorus. બીટી બીટી-તે-ગોડે-નચોન-તરનાતે-લિંગીતન-રા-
૧. ઓહ-નેના-રોનેરંગ--જઉરીઈ-ચિ-નેલેના-
નિધા-રિરંગિંગ-રાઃ ગેરંગતન—— બીટી-બીટી-
૨- ઓટ-નેના-દશા- બનોઃ-વૈંગ-બસા—
જેતા રૈયાં-બનોઃ રડુન—— બીટી-બીટી.

ઇસ-પ્રકાર-ઇસ-દેશ-કે-આદિવાસિયોં-કી-સોચનીય-દશા-થી। પર-ઈસાઈ-
ધર્મ-કે-આને-સે-અબ-દેશ-કી-દશા-બિલ્કુલ-બદલ-ગઈ। જિસ દેશ-મેં-કેવલ-ઘાસ-
ફૂસ-કે-ઝોંપડી-પાયે-જાતે-થે-વહાં-અબ-વિરલ-હી-ઘાસ-ફૂસ-કા-ઝોંપડી-દેખને-મેં
આવેગા। અબ-હરેક-ગાંવ-મેં-કેવલ ખપરોં-કે ઘર-ઔર-અધિક-પક્કે-
ઔર-અચ્છે-ઘર-પાયે-જાતે-હૈં—।
મેંગ્લાઇ-વહાં
ઇસ-ઇલાકે-મેં-~~ઈસાઈ~~-ધર્મ-પહિલે-~~[illegible]~~-જોલાનકેગા-ગૌસ્નર-સે-ઇધર
લોહરદગા
ખુટવાર વો-ઝહુપાની-ગૌજરોં-મેં-આઈ. જો-અભી-બીસોં-જો-ઇલાકે કી-બડી બડી-
નગરિયોં-મેં-હૈં। આરંભ-મેં-ખુટવાર ઔર-ઝહુપાની-મેં-કેવલ-એક-પ્રચારક-થા
જિસકા-નામ-પતરસ-તોપનો-થા-પ્રચારક-કા-કામ-કરતા-થા। જૈસા-ઉપર-લિખા-
ગયા હૈ કાફિર-સતાફૂર-કે-અનુસાર-અપની-રક્ષા-કે-લિયે-ગૌસા-બોસ્વાલ્ટકેમ-કે-કિતને
આઈ-ઈસાઈ-લોગોં-કો-વિચાર-કિયે-ઔર-ખુટવાર-જાકર-પ્રચારક-પતરસ-તોપનો-કો
અપની-ઇચ્છા-સુનાયે-જિસકો-અનુસાર-પ્રચારક-બરાબર-બોસ્વાલ્ટકેમ-ગૌસા-આતા-
જાતા-થા। જબ-બોસ્વાલ્ટકેમ-કે-કિતને-આઈયોં-કા-ઈસાઈ-હોના- Biru
Estate કે-જમીંદાર-ટિકૈત-રાજારામ-સિંહ-કો-સુનાયા-ગયા-તો-ઉસને-પાંચ-
સૌ-ઠગ-ઉન-આઈયોં-કો-વ-પ્રચારક-કો- Biru મેં-પકડ-મંગાયા। ઉન-આઈયોં
કો-વ-પ્રચારક-કો-મારને-પીટને-કે-લિયે-પહિલે-હી-સે-બાંધની-તૈયાર-રખે-ગયે
થે। પ્રચારક-વ-આઈયોં-કો-પહુંચને-પર-ઉનસે-પૂછા-ગયા-ક્યા-તુમ-ઈસાઈ-હો?
ઉન્હોં-ને-કહા-હાં-હમ-ઈસાઈ-હૈં। ઇતને-હી-પર-વે-મારને-વાલે-જો-ઠહરાયે-ગયે-થે
જમીંદાર-કે-કહને-પર-પ્રચારક-ઔર-આઈયોં-પર-ટૂટ-પડે-ઔર-લાઠિયોં-સે-ખૂબ
મારે-જૈસા-કિ-મારને-વાલે-કિતને-બેહોશ-ભી-હુએ-ઔર-~~લોહૂ~~-લોહૂ-લોહૂ-
ઘાટ-ભી-કરને-લગે- ઔર-જલતા-ચાવલ-કો-હાથોં-સે-રખ-કર-ઉનકે-આગે-પુરી
રખા-ગયા-ઔર-ઉનકો-કહા-ગયા-કિ-તુમ-કહો-કિ-હમ-ઈસાઈ-નહીં-હોંગે-અગર
હોંગે-તો-અંગ્રેજી-પાઠ-(જમીંદાર-કા-એક-દેવતા) હમકો-ખાવે-ઔર-ઉનકો-
પાસ-નંગા-તલવાર-લિયે-એક-જન-ખડા-હોકર-કહતા-થા-કિ-હુકુમ-મુતાબિક
નહીં-કરોગે-તો-ઇસી-તલવાર-સે-કાટ-કર-ફેંક-દેંગે-। સિર-પર-વે-મારે-ઔર

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] Rev.
Ch. Lokies [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] Government [illegible]
Settlement [illegible]

III - [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

મઠ તક-સ્થિત-હૈં-। ઔર-વે-મંડલિયાં-યે-હૈં-જો-દો-પેરિશોં-મેં-બાંટે ગયે હૈં- યાને- ખુંટીટોલી-પેરિશ- ઔર-સિમડેગા-પેરિશ-।

I.- ખુંટીટોલી-પેરિશ-મેં-નિમ્ન-લિખિત-મંડલિયાં-હૈં-।
૧- ખુંટીટોલી - ૨ પોંગબહાર - ૩- કુડિયા- ૪ બોલબાલકોમ
૫- સિમહબેડ઼ા- ૬ સરૈંપાની- ૭ બિરકોમ- ૮ નોડ઼ી કુદર-
૯- આમતરા- ૧૦- કુરા ઓલા- ૧૧- જબબેડ઼ા- ૧૨- આટાઆલ-
૧૩- આઈંદસેલ- ૧૪ ઓબાંગા- ૧૫- પુરનાપાની-૧૬ અરપડાંડ઼
૧૭ - સિમલિયાડાંડ઼ — યે-૧૭-છોટી બડ઼ી-મંડલિયાં-હૈં-જિન્હેં-
૧૧ પ્રચારકપદ-મેં-બાંટે-ગયે-હૈં-।

II- સિમડેગા-પેરિશ-મેં- નિમ્ન લિખિત-મંડલિયાં હૈં-।
૧ સિમડેગા- ૨ રોઝવાડ઼ી- ૩-બિરની બેડ઼ા- ૪ પોરોમડેગા
૫- જામબહાર- ૬ કુડ઼પાની- ૭ લઠારબાર્ન- ૮ ઓનમેંજરા-
૯- ગરજા- ૧૦- જમાબોંદુર- ૧૧- ચિડ઼રાટોલી — યે-૧૧-છોટી બડ઼ી- મંડલિયાં- હૈં- જો ૭ પ્રચારક-પદ-મેં-બાંટે-ગયે-હૈં-

Autonomy-મિલા-હુઆ-અભી- ૨૫-બરસ-ગુજર-ગયે- ઔર-કલીસિયા-કી-મહાસભા-કે-ઠહરાયે-મુતાબિક-હરેક-મંડલિયોં-મેં મંડલી-પંચ-હૈં-જિનકી-સહાયતા-સે-પ્રચારક-લોગ-મંડલી-સંભાલતે હૈં-ઔર- ડિલકે-ઔર-ડિલન-સભા- ડિલન-ભર-મેં-મંડલીયોં-કી-આત્મિક-ઓર-ભિતરી-બડ઼ી-સભા-હૈ- જિસકે-મેમ્બર-આમપ્રજા-કે જરિયે Vote-સે-ચુને-જાતે-હૈં- વર્તમાન મેં-નિમ્ન-લિખિત-જન ડિલન-સભા-કે-મેંબર-હૈં-
૧- પાદ્રી-બાબુ- મસીહ-દીપોનો- ચેયર-મેન-
૨. પાદ્રી-બાબુ- જોહન- ટોપો- નાઈબ-ચેયરમેન
૩. બાબુ ઔસુમ્મુસ-મિંજ— સેક્રેટરી-
૪- બાબુ- ડાનિયલ-લકડ઼ા- ખજાનચી-
૫ - બાબુ- નિર્મલ-ડુંગડુંગ- મેંગરા- વકીલ
૬- બાબુ- બોઆસ- ડુંગડુંગ-
૭- બાબુ- દાઊદ- ડુંગડુંગ
૮- બાબુ- ફિલિપ- એક્કા-
૯- બાબુ- અનિમેષ- કુજૂર
૧૦- બાબુ- નિર્મલ પ્યારા- ખાખા પ્રચારક-
૧૧. બાબુ- આશુતોષ-કેરકેટ્ટા- પ્રચારક-
૧૨. પ્રચારિકા- મર્થા-કેરકેટ્ટા
નંબર- ૩ સે- ૯ તક Lay Member-હૈં-
ડિલન-સભા-કી- અપની કાર્યકારિણી-મેં-યે-સદસ્ય-હૈં
૧- પાદ્રી બાબુ-મસીહ-દીપોનો- ચેયરમેન
૨. બાબુ ઔસુમ્મુસ-મિંજ- સેક્રેટરી-
૩- બાબુ- ડાનિયલ-લકડ઼ા- ખજાનચી-
૪- બાબુ- નિર્મલ પ્યારા- ખાખા- પ્રચારક
૫- બાબુ - દાઊદ-ડુંગડુંગ- લાઇફ-સિમડેગા-કચહરી

ઇસ- ડિલન-કા-સ્કૂલ-વિભાગ-ભી-અબ-બઢ઼તી-પર-હૈ-। બીતે- લડ઼ાઈ-કે પહલે-તો- અપર-પ્રાઈમરી-સ્કૂલ ખોલા-ગયા- થા- જો-બહુત-દિન-તક Standard પર- થી-। પર-લડ઼ાઈ-કે-બાદ- ઓટોનોમી-કા- અપર-પ્રાઈમરી

लड़कों-स्कूल-खूँटीटोली-लड़कियाँ भी-पढ़ती-थीं-तब-लड़कियों-का-अपना-प्राइमरी स्कूल खोला-जाता है। ~~१~~-था-२-पर-अब-यह-स्कूल M.E. Standard तक ~~उठाया~~ सन् १९४२-ईस्वी-से ~~उ~~ उठाया गया-और-x. Khutitoli Girls' M.E. School-कहलाने-लग-जाता है। १-बरसों-से-लड़कियों-का-परीक्षा-फल भी-देखा-जाता है-कि-स्कूल-की-नाक-या-उन्नति-पर-है-और-उम्मेद-है-कि समय-पाकर-ऊँचे-दर्जे-तक-पहुँच-जायेगा। अब-इसको-ऊँचे-दर्जे-तक-पहुँचाने-के-लिये-इलाका-के-इकेन-स्त्रियों-और-बहिन-भी-मास्टरनियों को-कमी-बानी-आज-तक-भी-मालूम पड़-रहे-हैं। ईश्वर-करे-कि-खूँटीटोली-इलाके-में-ईश्वर-के-निमित्त बहुत-सी-प्रवीण-नायिकाएं-व सहायिका प्रचारिकाएं होवें-और-वे-इस-देश-को-चौगुना-उन्नति-कराने-वाली सेवक-के-रूप और-सेवक-होवें।

सन्-१९४४-ईस्वी-के-सात युद्ध-के-समय-के-Anglican Mission के-Right Rev. Bishop साहब-~~साहब~~-की-सहायता-और-आज्ञाओं की-भी-यह-इलाका-कभी-भूल-नहीं-सकता है। जिसके-लिये-यह इलाका-चिर-बहुत-ईश्वर-का-और-सम्माननीय Right Rev. Bishop साहब-का-सदा-धन्यवाद-आदि-सहित-करता रहेगा।

M. Toppo
Ilaka chairman
Khuti toli
21-4-45

Augustus Pitu
Ilaka Secretary
Khutitoli

करीमटी·इलाका·इतिहास ॥

करीमटी इलाका टकरामा का डाली है। जिस समय टकरामा में पादरी काफ्कि केल साहिब थे, उस समय ये ये मण्डलियां थीं— नागपुर में— खोड़गा, जोरी बारी। नगरा ~~स्टेट~~ स्टेट में सिलियापोस, ललसे। जब पादरी वी: केडनेस टकरामा में थे, तब किजिर ~~स्टेट~~ स्टेट में मण्डली बढ़ने लगी, जैसा नवागांव में, पुरनापानी में। पादरी वी: केडनेस साहिब के समय १८८६ साल में करीमटी मिशन स्टेशन गौंझु हररबु भोगता से लिया गया। जिस पर हाथीबारी का गांव घर ठाकुर, हररबु गौंझु पर रिसियाया। पर मिशन स्टेशन के लिये लिया हुआ जगह रजिस्ट्री हो गई थी। तब गांव घर ठाकुर पुरनापानी पर हाथ डाले मुख्य २ भाइयों को हजुत में डाले। उस समय ठाकुर ही का थाना था। हजुत घर में रात को अनोखी बात हुई। भाई लोग सो ~~ने नहीं~~ रहे थे, कि करैत सांप सोते हुए भाइयों में से एक के छाती पर फन रखा था। भाई जाग कर गिंग २ बोल रहे थे, कि सब कोई जाग गये। ~~कानिस्टबल~~ कानस्टबल भी जाग गये। सांप को मार डाले। निर्दोष को हाल चाल पता गया। ठाकुर डर गये और उन को हजुत से छुट्टी दे दिये। पर फिर जब भाई लोग गिर्जा घर बनाने के लिये काठ जमा किये, खपरा भी तैयार किये, पुरनापानी का गोंझु और ठाकुर एक मत हो के अपने आदमियों को ला के काठ, खपरा सब को उठा ले गये। पादरी वी: केडनेस साहिब को इस का हाल सुनाया गया। साहिब तुरत गये। ठाकुर डर गये और माफ़ी मांग कर करार किये, कि अब से बड़े २ घर बनावे, मैं न रोकुंगा। जब करीमटी में साहिबों को रहने का बंगला तैयार हुआ, तब १९०२ साल में करीमटी इलाका टकरामा इलाका से अलग हो गई। और पादरी जी: लांगे साहिब भेजे गये। उस समय ये प्रधान बन थे। नागपुर में— खोड़गा, जोरीबारी, अनन्दपुर में खटांग बेड़ा। किजिर में— करीमटी, पुरनापानी, करडेगा। नगरा में— सिलियापोस, ललसे, दमदापारा, अलागोजो। अब हाल में— नागपुर में जोरीबारी, खोड़गा, मिंजुरगढ़ा, डोंगापानी, फरसा, अनदराय॥

P. T. O.

रैंकेरा, दल्की। किंजिर स्टेट में — करीमटी, कदोपानी, पुरनापानी, रनाकाटा, कटामार करडेगा। नागरा स्टेट में — सिलियाबोह, लांडोसेरा, लरहे, धांगरभाचा, दम्पारा, जानुमबिरा, चिरमिशापुर, लोबारोम, सरदा: कुंदलागाजो, गुड़गुड़ा। आनन्दपुर में — खटांगबेड़ा, दरला, ओमड़ा, चारबलिया; कुनुम्बा; कुड़ना, कुटीबेड़ा। वर्तमान भारत में तैनात मेरा में नयी मराडली खुलने पर है। करीमटी इलाका में छः पादरी काम किये और काम कर रहे हैं: — मान्यवर पादरी स्नातक लंगे, मान्यवर पादरी योहन बाबा, मान्यवर पादरी साहब कुसैन, मान्यवर पादरी सुखानन्द आइन्द, मान्यवर पादरी मनसुख मनकी, मान्यवर पादरी बिभा मीना मिंज, मान्यवर पादरी सिलास बांगे। वर्तमान में मान्यवर पादरी दानियल होरो और मान्यवर पादरी सुखलो चिंता होरो हैं॥

Daniel Horo
Karimati
Ilaka chairman
25-10-45

History of Jharsuguda Ilaka.

By Rev. S. M. Bage.

Jharsuguda Ilaka, jo Orissa Pradesh ke Sambalpur jile ke antrgat sthit hai. Is Ilake ka arambh kab hui so thik jana nahin jata par anuman se yahi sabut hota hai ki yahan Christani mandli ka arambh 1891 se hua hai. yahan ka mandli kam bishes kar Chakradharpur ke Missionary se chalaya jata tha aur pichhe Rajgangpur ke Missionary se chalaya jata tha.

Jharsuguda men Mission station praya 1901 se nirman kia gaya, jis Missionary ne is hate ko sthapit kia, hate ka nam "Frishiapur" rakha.

Jharsuguda Mission station men, 1903 se Missionary Rev. B. Lauzmis aur sahayak Missionary Rev. A. Muzcus rahte the. Jinhong ne hate ka ghera, Missionary bungalow, Line ghar, school aur kunwa adi bana kar thik kiya, par abhagyabas Girja ghar banane na sake, kyonki 1914 men Mahayudh chhir gai aur abhi tak Girja ghar nahin banaya gaya hai. Girja, school ghar ke ek kothri men hoti hai jo Missionaryong ke dinong se chala ata hai.

1914 ke Mahayudh ke karan Missionaryong ne apne

desh ko laut gaye us samay yah Ilaka jaisa Chhota Nagpur ke mandliong ko sambhalne ke liye hamare dayalu sarkar ki or se Englican Bishop ko sompa gaya waisahi is Ilaka ke ko sambhalne ke liye Sambalpur ke Baptist Church ke Missionary Rev. Horsh Burg ko sompa gaya aur unhong ne 1919 tak yahan ke Gossner mandliong ko sambhalte raha. Us samay is Ilaka men Gossner church ke koi deshi Padri ke na hone ke karan Ilake ka bhar Candidate Nathaniel Khalkho ke jime diya gaya aur mandliong men Pabitr kamong ko chalane ke liye Rajgangpur ke Gossner Church ke deshi Padri a kar chalate the.

1919 ke bad Ranchi Gossner Church ne is Ilaka ke Karamchariong aur school ke masterong ka grant bandobast kia par is samay bhi Padri ka bandobast na kia, jis ke karan mandliong ka kam uchit riti se hone na pata tha. 1922 August mahine men Ranchi Gossner Church ne Rev. Luther Jojowar ko bheja jisne mandliong ka kam uchit riti se karne laga aur is Ilake ko 1922 se N. M. S. ki or se sahayta milne laga.

N. M. S. Jharsuguda Ilake ka pura bhar 1923 men aur N. M. S. ke Missionary bhi Jharsuguda men rahne lage. Unhong ne hate men Hospital bhi khola jahan ankh ka bhi bishes ilaj hota tha. N. M. S. 1939 tak is Ilake ka bhar apne upar uthaye raha. Bad Ranchi Gossner Church ne is Ilake ka karj-bhar apne mathe

par liya aur apne Autonomus niyamanusar is Ilaka ko chalati hai.

N. M. S. ke bad is Ilake ka Boarding U.P. Primary school utha diya gaya. 1940 men C.C. ki or se phir Primary school, mission station men khola gaya. Hal men phir C.C. ki madat se Kuṛalor mandli men ek Primary school, 1944 men khola gaya hai. Dono school men ek ek Sikshak hain. School ke na hone ke karan is Ilaka men sikshit logon ki sankhya bahut kam hain.

Is Ilake ka chhetr phal baṛa hai, mandliyan mission statim se bahut dur 2 jagahong par hai. Yahan ki Christian jan sankhya:- Baptisma paye huwe. 1171. Purane dharam khojak 19. Naye dharam khojak 10. Driṛha pan paye huwe 539, Munda 1099 aur Uraon 72. hain.

Is Ilake men nimin deshi Padriong ne kam kiye:-

I Rev. Luther Jojowar 1922 August se 1928 June.
II " Luther Bagraita 1928 July se 1931 February.
III " Amus Baṛa. 1931 March se 1935 June.
IV " Barnabas Hemrom 1936 November se 1937 May.
V " Luther Kongaṛi. 1938 February se 1941 December.
VI " Suleman Bage. 1942 January se kam kar rahe hain.

Bartman is Ilake men ek Padri Suleman Bage aur sat Pracharak hain. Ilaka ke Pracharak pan ye hain:- (1) Jharsuguda yahan Pracharak nahin hai (2) Kuṛalor aur Baraj raj nagar. Pra. Balastus Topono. (3) Kutripali aur Mura. Pra. Masih Prakas Hatipota. (4) Sirgira. Pra.

Habil Kandulna (5) Khonsor. Pra. Daud Horo. (6) Sasan Pra. Zakariah Barla (7) Binjipali aur Basupali. Pra. Yusaph Surin. (8) Langbahal Pra. Daud Barla.

Is Ilake men rimin Ilaka member hain master Johan Barla Secretary. Ilaka ke satong Pracharak aur sadharan bhaiyon me se ye hain:- Alfred Surin Joshua Toppo. Roben Kandulna. Habil Kukra. Yakub Baba. Nathaniel Sanga. Johan Topono. Dipti Prakash Topono.

. Is Ilake ki mandliyan bahut hi garib hai jis ke karan Ilaka ke mandli Karamchariong aur Sikshakong ki arthik awastha sochniye hai.

Ishwar is Ilake ko atmik aur laukik gyan aur samarth dewe ki sidhta ko prapt kare.

———o———

Copy

तमाड़ इलाके का संक्षेप इतिहास।

गोस्सनर एवं० लूथेरान चार्च की तमाड़ इलाका सन १९०० ई० में स्थापित हुई। पहले यह बुर्जू इलाके में सामिल थी। जब यह अलग इलाका बनाई जाने लगी, तब सब प्रचारकपन जो तमाड़ प्रगाने के भीतर थे अलग कर दिये गये। पहले पहल केवल एक पादरीपन याने उम्बुलबहा इस नये नाम से कहलाता रहा। ज्यों तमाड़ इलाका अलग इलाका बनाई गई त्यों ही इलाके का हेड क्वार्टर या स्टेशन बनाने के लिये तमाड़ शहर के सरहद ही में तमाड़ के राजा साहब से जगह प्रबन्ध किया गया था। लेकिन बात की उलट पलट के कारण बन्दोबस्त किया हुआ जगह छोड़ा जाकर उसी सिमाने से सटे हुए आमलेशा मौजे की जगह खरीदी जाके स्टेशन बनाई गई है। तमाड़ इलाका का फैलाव यों है:- उत्तर में बुन्डू प्रगाना, दक्खिन में सिंहभूम जिला, पूर्व में मानभूम जिला और पश्चिम में खूंटी थाना है लेकिन सिंहभूम और मानभूम जिलों के भीतर भी तमाड़ इलाका, काम करती है।

इलाके के स्टेशन हाता तथा बंगले का नेव डालने हारा मिश्नरी Rev. F. Pape थे। उन के साशरा काल में केवल सात आठ प्रचारकपन थे। आपने जीम्मे में केवल तीन थे, बाकी उम्बुलबहा के पादरी के देखभाल में थे। इन्हीं पादरी साहब को मुन्डारी भाषा सिखाने के लिये, लेखक १९०१ ई० में बुलाया गया था, बाद मंडली का काम पकड़के अब तक यहां हैं। पादरी साहब अपना अधिक समय हाता और घर बनाने में बिताये। आप १९०३ ई० में पूरी छुट्टी लेकर विलायत लौटे। बाद उन के चार्ज में Rev. W. Diller साहब आये। आप आते ही स्टेशन में एक स्कूल खोले और आमलेशा से पूर्व, दक्खिन में एक प्रचारकपन बढ़ गया। वैसा ही उम्बुलबहा पादरीपन में भी दो प्रचारकपन बढ़े। चार वर्ष के बाद आप भी स्वदेश जाने को छुट्टी लिये। उन के जगह में Rev. M. Schütz. आये। इन के समय में उम्बुलबहा पेरिश की बढ़ती और हुई। उम्बुलबहा से पूर्व एक प्रचारकपन बना और उम्बुलबहा और कई प्रचारकपनों में स्कूल खुले। १९०८ ईस्वी में M. Schutz साहब भी छुट्टी में थे। उन के चार्ज में Rev. R. Karsten, Rev. P. Wuste अल्प काल के लिये भेजे गये थे। बाद Rev. J. Szallies आये थे। १९१० को Rev. M. Schütz की छुट्टी समाप्त होके फिर आमलेशा ही भेजे गये। मिश्नारियों में से यही पादरी १९१५ तक तमाड़ इलाके की देख भाल किये थे। ज्यों जर्मन पादरियों को हिन्दुस्तान छोड़ना पड़ा, तमाड़ इलाके का कुलभार उम्बुलबहा के पादरी पर पड़ गया। पर उस को आत्मिक कामों में याने, बपतिस्मा और प्रभुभोज देने आदि कामों में बुर्जू इलाके के पादरी मदद देते थे। स्टेशन और हाता और जमदादों को देखना, रखवाली करने का कुल भार मास्टरों पर छोड़ा गया था। समय २ में ट्रस्टी बोर्ड के मेम्बर तथा एडभाइजरी बोर्ड

के मेम्बर जो लूथेरान स्कूलों के हेड सुपरवाइजर समय २ में यहां के काम और जमवारों को जांचते थे। निश्चय जर्मन मिशनारियों के चले जाने पर हमारी मंडली में पादरियों की बहुत कमी थी, जिस के कारण अमलेशा में रहने के लिये और मंडली का काम देखने वो चलाने के लिये कोई पादरी न रखा जा सका। पर ऐसी सकेती और कठिन समय में भी प्रभु अपनी मंडली के काम को संभाले रख कर बढ़ाता ही रहा। हां प्रभु अपनी मंडली में काम करने के लिये भी कामियों को तैयार करने का मार्ग तैयार किया। इस तरह फिर तमाड़ इलाके के अमलेशा पेरिश में भी १९२५ ई० से पादरी रहने लगे। १९२५ से १९४५ के भीतर क्रमःसे ये पादरी काम देखे और चलाये; पा० महीमिमाह सुरिन, पा० खु० कल्याण गुड़िया, पा० मोहन भेंगरा, पा० नरनाथ हेमरोम और पा० कुशलमय तोपनो।

जो ५ स्कूलें

मंडली को जो मंडली के काम को प्रभु धीरे २ बढ़ाते जाता है क्योंकि अभी तमाड़ इलाके के दोनों पेरिशों में जमा १८ प्रचारकगन हैं। जिन में दो पादरी, १२ प्रचारक और ८ मास्टर हैं कितने प्रचारकगन मास्टरों ही द्वारा सेवा किये जाते हैं। प्रायः ५६४ ख्रीष्टान घर हैं, जिन में ३५०० से कुछ ऊपर बप्तिस्मा पाये हुए और १६०० से ऊपर दृढ़ीकृत जन हैं। और कुछ धर्म खोजक भी हैं। धन्यवाद त्रिएक ईश्वर को होवे, जिसने अपने अनुग्रह से भूले भटके लोगों को अपनी संगति में मिलाते जाते हैं। बिन्ती है कि वह सब बुलाये हुए जनों के मनों को सिद्ध भी करे जिस्तें सब के सब स्वर्गवासी बन उस के संग सनातन जीवन में रहें।

लेखक: निर्मल भेंगरा,
द्वितीय मास्टर मु० पी स्कूल
अमलेशा वो तमाड़ इलाका
खजान्ची।

Ilaka chairman ——
Rev. Topno Amlesa.
Dated. 18/8/45

जड़ाकुदर इलाके का संक्षिप्त इतिहास।

(ले॰ एम॰ डी॰ लकड़ा)

पहले पहल जब छोटानागपूर से खिस्तान लोग जीविका के लिये गांगपूर और बनई आदि स्टेटों में आने लगे तब उनकी धर्मसुधि के लिये मिशनरी साहिबों का भी दौरा होने लगा। उन्हीं दिनों चोरपेन्डा का मनसिद्ध होरो जो मदुवा मुन्डा के नाम से जाना जाता था, जड़ाकुदर आया। वह मंडली बिभाग के समय एस॰ पी॰ जी॰ मिशन का अंग था। यहां से उसने अपने मिशनरी साहिबों के पास अर्जी की कि उसकी धर्मसुधि ली जाय परन्तु मिशनरी साहिबों ने जबाब दिया कि एक घर के लिये इतना दूर कौन जाता आता है, उसे छोड़ दिया। तब उसने लूथरन मिशनरी सहिबों से अर्जी की और उन्होंने उसे ग्रहण किया। तुरन्त याकुब मिंज नाम का एक प्रचारक भेजा गया। थोड़े ही दिनों में दो और घराने इस खिस्तान घर के साथ मिल गये। एक एक करके लोग खिस्तान होने लगे और जड़ाकुदर एक मंडली बन गई। इसके उत्तर में पुरनापानी गांव का मनसिद्ध टोप्पो और दक्षिण में इसके बहुत दूर बनईस्टेट के अन्दर टकरा गांव का आनन्दमसीह होरो- दोनों इधर उधर से जड़ाकुदर आने जाने लगे और तीनों मिल कर धर्म के लिये बहुत कोशिश की। इनकी अगुवाई से पुरनापानी और टकरा में भी छोटी छोटी मण्डलियां स्थापित हो गईं। इधर मिशनरी साहिबों का प्यार बढ़ा और उनका ध्यान बिशेष करके दक्षिण की ओर धर्म फैलाने को हुआ। मिशनरी डिङ्लोकिश, लोरबेर्ग, पापे, डिल्लर, हेस्तबेर्ग और केपेन, टकरमा, चाईबासा और चक्रधरपूर मिशन स्टेशनों से दौरा करते थे।

सन् १९०३ में इस क्षेत्र का काम चक्रधरपूर इलाके के देख रेख में सौंपी गई। महायुद्ध के आरम्भ तक यहां से मिशनरी लम्बी २ दौरा कर नगरा (गांगपूर) और बनई की तितर बितर खिस्तानों की खोज करते और आत्मिक और आर्थिक बातों में उनकी सहायता करते थे। उस समय जड़ाकुदर के प्रचारक खिस्तानन्द आईन्द बड़े शिकारी थे। जंगल में शिकारी के समय भी लोगों को धर्म प्रचारते थे और इस तरह से उसने अनेकों को खीष्ट के लिये जीता। मिशनरी साहिबान उसके काम से प्रसन्न हो उसे सेवकाई के पद पर अभिषेक किया। जड़ाकुदर एक पेरिश बन गया। परन्तु पादरी जी कुछ ही दिन के बाद बदली हो गये। उनके जगह पादरी मरकस तोपनो जड़ाकुदर आये। १९०६ में इस पेरिश का कार्यभार ग्रहण कर सेवकाई का काम करने लगे।

महायुद्ध के कारण मिशनरी साहिबों के चले जाने से यह चक्रधरपूर से अलग एक इलाका मानी गई। इसकी चौहद्दी, पूरब में चाईबासा और चक्रधरपूर इलाकाऐं, उत्तर में करिमटी इलाका,

पच्छिम में राजगांगपूर इलाका और दक्खिण में यह बेरह है।

जड़ाकुदर इलाका गांगपूर के नगरा इस्टेट, बनई स्टेट और सिंघभूम के सरान्डा में विस्तृत थी। सिंघभूम जिले के मनोहरपूर, चिड़िया, दुइया खदान, सरान्डा फारेस्ट डिपार्टमेन्ट, जराईकेला और रेडा: ये कितने बर्षों से जड़ाकुदर इलाका ही से देखे और सम्भाले जाते थे। सन् १९३१ में पादरी मरकस तोपनो अपनी बिमारी की अवस्था में पादरी लूथर बगरैला को सहायता के लिये मांग बुलाये। पादरी बगरैला जोड़ाबांध में अपना हेड क्वाटर करके काम करने लगे।

[जोड़ाबांध, नगरा और बनई स्टेट के सिमाने पर बनई स्टेट का एक गांव है। किसी समय लूथरन मिशनरी साहिबों के जरिये बनई राजा साहिब का प्राणोद्धार हुआ जिसके चिन्ह के लिये राजा ने मिशनरी साहिबों को कुछ देने चाहा। साहिबों ने बनई स्टेट में धर्म-प्रचारने और डेरे के लिये कुछ जमीन मांगी। राजा ने खुशी से अपने राज्य में धर्मप्रचारने की इजाजत दी और स्टेशन बनाने के लिये जगह जमीन चुनने का पूरा अखतियार मिशनरी साहिबों पर छोड़ दिया। साहिबों ने जोड़ाबांध को चुना। राजा इसको मंजूर कर कुछ जमीन मिशन को दे दिया।]

उसी १९३१ के स्वर्गारोहण के दिन प्रभु ने पादरी मरकस-तोपोनो को इस असार संसार से अनन्त बिश्राम के लिये अपने पास बुला लिया। सन् १९३२ में जड़ाकुदर अ० प्रा० स्कूल के हेडमास्टर मसीहदास लकड़ा (कन्डिदत्त), महासभा के समय सेवकाई के पद पर अभिषेक किया गया। अब इलाका जड़ाकुदर और जोड़ाबांध, दो पेरिशों में बांट गई। कुछ बर्षों के पीछे सिंघभूम जिले की मंडलियां चक्रधरपूर पेरिश में मिलाये गये। फिर गांगपूर स्टेट के आन्दोलन से इलाके और मंडली के कामों में कुछ कुछ धक्का पहुंची जो तुलना में और इलाकाओं की अपेक्षा मामूली थी। जड़ाकुदर इलाका पहाड़ पर्बतों से भरा है। जंगली जानवरों बिशेष कर हाथियों और बाघों का भय हमेशा बनी रहती है। छोटी छोटी मंडलियां घने जंगलों के भीतर यहां वहां छितरी हुई हैं ऐसे विस्तृत इलाका का काम हल करने और राज्यनैतिक असुबिधाओं को दूर करने के निमित्त महासभा के फैसला अनुसार और एक नया पेरिश बनाया गया। समूचे इलाका का ख्रिस्तान जन समूह ५५८९, उनमें दृढ़िकृत २८८६ हैं। १८२ धर्मखोजक हैं। जिनके बीच ४० प्रचारक और ३ पादरी काम करते हैं। ९ लो० प्रा० स्कूल हैं जिनमें २२५ लड़के लड़कियां बिद्या हासिल कर रहे हैं। ९ शिक्षक हैं। ईश्वर योग्य सेवकों को उदय करे और चारा पाने हारों को मंडलियों में लावे॥

No.2

History of Madhupur Ilaka.
By Rev. C. B. Ekka.

बमड़ा एक Political State है। यहां धर्म्म का नेव अक्टोबर १९१४ में Rev. W. Diller द्वारा नेव डाला गया यहां के संसारिक भाइयों ने पादरी साहब के पास आकर अपना मत प्रकाश किये कि हम ख्रिस्तान होना चाहते हैं यह सुन पादरी साहब उन के पास गया और एक दिन ठहर कर उन को धर्म्म सिखा दिये। बाद चार प्रचारकों ~~को~~ (जुनस होरो, अन्द्रियस होरो, प्रभुसहाय मिंज और सामुयल बाड़िया सोरेंग) को धर्म्म प्रचार के लिये भेजा। धर्म्म प्रचार में अनेक रोक टोक स्टेट की ओर से हुई। पर सब बात पादरी साहब के द्वारा हल किये गये। राजा भी अपने स्टेट के अन्दर लूथेरन चर्च को ठहरा किया और उपरोक्त प्रचारकों को धर्म्म प्रचार के लिये Certificate भी दिये थे। १९१४ सन के महायुद्ध में जब Rev. W. Diller भी १९१५ में नजर बन्दी किये गये तब यहां का देखभाल राजगांगपुर के Late Rev. N. Kirkey द्वारा होता था। १९२८ में Rev. W. Diller फिर आकर अपना ही राजगांगपुर हलका ही से देख भाल करते थे। इन के मृत्यु के बाद फिर भी राजगांगपुर ~~के~~ इलाके के पादरियों के द्वारा यहां का काम सम्भाला जाता था। १९४१ जुलाई से यहां खास बमड़ा के लिये मुझ (C. B. Ekka) को

C. C. ने appoint किया। १९४१ की Census यहां की १००० की थी। जौभी स्टेट की ओर से यहां Open Preaching बन्द है तौभी साल २ ईश्वर अपने लोगों को बुलाता बटोरता है इस प्रकार से १९५५ की Census १३०७ की है। यह पत्थरीली ऊंचा नीचा जंगली पहाड़ी देश है - यहां के प्रजा लोग बहुत गरीब हैं। जंगली जानवरों के द्वारा खेती बारी और मवेसी की बड़ी हानि होती है। लोगों के लिये जंगल में भी खाने के लिये अनेक प्रकार के कन्द मूल फल फूल हैं जिसे गरीब होने पर भी कोई प्रकार से अपना जीवन निर्वाह कर लेते हैं। - आहते २ जंगल घटते जा रहे हैं और उपज की भी बढ़ती होती जा रही है। लौकिक और आत्मिक जीवन की उन्नति होती जा रही है। मण्डली आमदनी भी बढ़ते जा रहे हैं। यहां के लिये महीना ५०) रुपैया C. C. की ओर से ग्रान्ट भेजा जाता है।

स्टेट के कईएक रोकटोक के कारण C. C. ने अच्छा समझा कि बमड़ा स्टेट के बाहर मधुपुर गांव में पादरी का Head quarter बनाया जाये। यह मधुपुर कोई १२ वर्ष की और २५, २६ घर की मण्डली है। यह जयपुर खलसा के अन्दर है जो बमड़ा महासिमाना से लगा हुआ है।

Continuous

यहां हाता बनाने के लिये C.C. ने ३ एकड़ जमीन ठिबरा नाम एक धर्मखोजक भाई से ३२) रुपैया में खरीदा और मार्च २०, १९४२ को भूतपूर्व Church Supervisor Rev. L. Gajuwa द्वारा ढोढ़ियाम गौटिया के सामने लिखा पढ़ी किया गया। और १९४२, ६ मई को महासभा द्वारा बमड़ा के लिये मंजूर एक अलग इलाका पास किया गया। इस इलाके में प्रायः २५० घर ख्रिस्तानों का है। केवल एक घर उरांव और एक घर खड़िया है। यहां पानी की बड़ी मुश्किल होती है। कोई बड़ी नदी नजदीक में नहीं है। बाजार, रेल स्टेशन, पोस्ट ऑफिस भी सब ७ मील की दूरी पर हैं, जिसके कारण हेड क्वार्टर के लायक यह अच्छा जगह नहीं हुआ। अगर बमड़ा स्टेट मंजूर करती तो हेड क्वार्टर को उठाकर बमड़ा के अन्दर जुनाइन में लाया जाता तो सब बातों में सुविधा होती। वर्त्तमान १० जनवरी १९४५ से Rev. S. Barla इस इलाके के charge में हैं। ईश्वर दया करे कि यहां की आर्थिक और आत्मिक दशा दिन २ बढ़ती जावे।

C. B. Ekka.

A. Short History of Jashpur Nichghat Ilaka.

1906 में Jashpur Nichghat में ईश्वर का निराला वचन मृत Rev. A. Johan साहेब के द्वारा से प्रचारा गया। इसी साल अर्थात् १९०६ ई० में सरहापानी में एक मिशन स्टेशन स्थापित किया गया इस आशा से कि यह स्थान सुरगुजा और उदयपुर का मध्यस्थ स्थान है वहाँ भी मण्डली बढ़ने और फैलने की आशा थी। सुरगुजा और उदयपुर में भी वचन प्रचारने का हुकुम स्टेट सरकार की ओर से मिल चुकी थी। परन्तु समय बीत जाने से यह हुकुमनामा उठा दिया गया और अभी सुरगुजा और उदयपुर में वचन प्रचारने का हक उठा दिया गया है। परन्तु Jashpur Nichghat में प्रभु का वचन ग्रहण किया गया और बहुत मण्डली फैल गई और अंधकार में बैठने वाले ज्योति पा कर बहुत आनन्द करने लगे हैं।

कुछ समय बाद स्टेट में राज्य द्रोह हुआ तब बहुत प्रजा लोग अपना २ घर द्वार छोड़ कर भाग गये। मिशनरी साहेब और पादरी प्रचारक लोग भी काम छोड़ कर भाग गये। उसी समय जमीन का नाप आया तब नाप में सरहापानी मिशन स्टेशन का कोई वारिसदार खड़ा नहीं हुए मिशन की ओर से तब सरहापानी का एक भाई उस जगह को अपने नाम में नाप करा लिया तब मिशन का सब अधिकार उठ गया। अभी तक उसी के नाम में है परन्तु उस भाई के मेहरबानी से अभी तक स्कूल उसी जगह में चलाया जाता है। वहाँ एक गिरजा घर भी है परन्तु बहुत जगहों में अब तक कोई गिरजा घर नहीं है।

बहुत मण्डली फैली हुई थी परन्तु उसी उलगुलान के समय में कर्मचारी और पादरी और मिशनरी साहेबों के न रहने के वजह से बहुत मण्डली जो उस समय स्थिर न रह सकी और बहुत मण्डली तो उलट हो कर रोमी मण्डली को चले गये और बहुत मण्डली उलट कर संसार बन गये और चुन्दी बढ़ाने लगे। बाकी जो रह गये वे अभी तक हैं जिनकी संख्या अभी वर्तमान में छोटी बड़ी मण्डली मिलाके २० मण्डली हैं और ख्रिस्तान जनसमूह की संख्या वर्तमान में 3663 है। १६ कर्मचारी हैं और एक पादरी है। और 1405 दृढ़ीकृत संख्या हैं।

जशपुर नीच घाट की मण्डलियाँ अभी १९०६ से १९५४ तक में लड़कपन पूरे जवान उम्र में पहुंच तो गई है परन्तु आर्थिक और आत्मिक स्थिति इसकी अभी तक जवान नहीं हुई है। यह चाहता था कि कलिसिया अभी तक पूरा आत्म शासन कलिसिया हो जाती और अपने से कमाती खाती पर अभी तक कमजोर और अल्पबुद्धि बालक ही के समान अपने मां बाप

ही के ऊपर ~~मू~~ भरोसा रखना पड़ा है। परन्तु आशा की जाती है कि समय की पूर्णता पर यह कलिसिया भी पूरा आत्म शासन कलिसिया हो जायगी कलिसिया अभी बढ़ती अवस्था ही में है इससे आशा है कि अपनी पूर्णता अवस्था में समय की पूर्णता पर पहुंच जायगी।

Paulus Beck, pastor
in charge Jarhipur Melghat
G.E.L. Church.
Jarhipur Itali.
16/12/44.

Burju Ilaka ka Itihas.
1845 — 1944.

1845–1868.

1, बुड़जू इलाके में खृस्तान धर्म का प्रवेश और प्रथम खृस्तान लोग।

गोस्सनर साहेब से भेजे हुए मिशनरियों के काम का बर्णन:—
(कि वे १८४५ में रांची पहुंचे और स्टेशन और गिरजा बनाये, और रांची में सिर्फ नहीं पर इधर उधर यीशु को मुक्तिदाता कह के प्रचार करते हैं, दुखियों की सुद्धि लेते बालकों को पढ़ाते और सताये हुओं को सहारा देते हैं। दिहात में भी स्टेशनों को बनाते और गिरजा घरों को खड़ा करते हैं और सिपाही बिद्रोह के बाद लौट कर आये हैं और बहुत लोग यीशु को ग्रहण करते जाते हैं)। और उसका प्रभाव रांची के दखिन ३०, ४० माईल लों पहुंचा जहां के आदिवासी मुन्डा लोगों पर ~~[illegible]~~ जमीनदारों से अत्याचार होता था और कहीं २ सताये भी जाते थे।

उन्हीं दिनों में मुड़हू का जमीनदार अपने घोड़े को ४०) रु० में बेचकर वहां के कजरू मुन्डा को पकड़ा कि तुम्ही ने मेरे घोड़े को बेचा, या भगा दिया सो तुम बिना उजुर ४०) रु० देओ; कजरू अति झंझट में पड़कर करा के एक खृस्तान भाई के पास गया जिसने उसको रांची के पाद्री साहेबों के पास भेजा। उस समय रांची में पाद्री शत्स साहेब ने उसको खृस्तान धर्म के बिषय बताया और उसको एक छोटी पुस्तक दिया जिसमें दस आज्ञायें छपी हुई थीं। वह लौट कर घरे २ उस पुस्तक को पढ़ते २ खृस्तान होने का बिचार किया, और खृस्तान हुआ और खृस्तान होकर चुप नहीं रहा पर औरों को भी खृष्टीय धर्म के बिषय समझाया और खृस्तान पंथ में लाया। वे थे हैं - अर्थात - मड़ुंगटोला का योहन प्राचीन, सुड़ुन्दा का दीत। इनके पीछे मंडली के ये बिशेष जन थे अर्थात - दियांकेल का पौलुस, कोयोंगसा का फिलिप हिदुडीह का नथानिएल गुलु: का प्राचीन कुड़कों का सुलेमान और डाड़िगुट का दानिएल इत्यादि इति: दिन २ खृस्तानों की संख्या बढ़ती गई।

2, गिर्जा जाना।

उन दिनों में खृस्तान लोग गिरजा स्नान प्रभुभोज औ मंडलीसम्बन्धी कामों के लिये १५, २० कोस से रांची पैदल जाते थे और ठीक समय में हाजिर होते थे। १८६८—६९ मण्डली बिभाग होने औ मुड़हू

डाड़िगुटू, टकरा आदि जगह के बहुतेरे ख्रिस्तान आंगलिकन मण्डली जाने से और रांची भी अति दूर होनेसे दक्खिन तरफ मिशन ने स्टेशन बनानेका बिचार किया।

3, 1869 — 1915.

बुड़जू स्टेशन भाईयों का दान।

मिशन Inspector पादरी अनसोर्गे साहेब पादरी डिड लौकिस साहेबके साथ स्टेशन बनाने के लिये जगह चुनने आये, डिड लौकिस साहेब ने मुड़कुके नजदीक वाली डुंगरी को चुना पर अनसोर्गे साहेबने मंजूर न की, तब बुड़जू के पूर्व ओतोंग-ओड़ा: के पास के जमीन को दिखाया पर उसे भी अनसोर्गे साहेब ने मंजूर न की, अन्त में बुड़जू और रुईटोला के भाईयों से यह जगह बिना दाम मिला और अबतक भी कुछ देना नहीं है, इसके लिये भाईलोग सराहनीय हैं।

4, बुड़जू स्टेशन का स्थापन और नाम।

बुड़जू स्टेशन १८६९—७० में जेलिंगहौस और कामफिकेलर साहेबों के द्वारा तैयार किया गया, जेलिंग हौस के बदली होने पर जब डेढ़ बरस नोतरोत्त साहेब चैंबासा और बुड़जू के चार्ज में थे तब १८७२—७३ में पादरी W. Kroecher ने गिर्जा घरको बनवाया और रुईटोला वालोंसे कबरस्थान को जगह भी मांगली। गिर्जे का गुम्मट और पश्चिम भाग कुश्चिंग साहेब ने १८९८—९९ में बनवाया और १९३३—३४ में दुस्टोबोर्ड और इलाके ने पादरी मसिह पुर्ती इलाका चेअरमैन के समय नये तौर से सुधारा और मरम्मत किया गया।

यह जगह जहां बुड़जू स्टेशन बना कजोसेरेंग भी कहावता है, उसरअलंग पर बिछाये हुए के समान चट्टान पर आसपास के लोग पूर्व काल में भारी २ बातों के लिये बिचार करते और चट्टान को नाईं (सेरेंग) बिचार को दृढ़ करते थे।

इस का नाम पतरस बुर्ज भी रखा गया, गिर्जे में बुर्ज याने गुम्मट होने के बजह तो नहीं पर गोस्सनर साहेब के मित्र पिटरसबुर्ग के एक कुलीन जनने स्टेशन बनाने का समूचा खर्च दिये।

बुड़जू में १८६९—१९१४ लगातार मिशनरी लोग थे, हर एक ने कोई न कोई बड़ा काम किया और साथ में स्वपालन सम्बन्धी काम भी किये गये। नोतरोत्त साहेब ने मण्डली सम्भालने के लिये जैसे सिंहभूम बुजुर में तैसे यहां दियांकेल और सरनाटोली में खेती का प्रबन्ध किया, हाती के खजूर गाछ और कई दूसरे गाछ उन्हीं के लगाये हुए हैं। यहां का आखरी मिशनरी पादरी स्मिथ साहेब थे जो १९११ में पहुंचते ही लड़के स्कूल को M.E. और लड़की स्कूल को U.P. किये और स्वपालन के लिये समूचे इलाके को जगाये और स्वपालन पुंजी के सूद से एक पादरी को तलब पुराते थे।

1915—1944.

५. आंगलिकन बिशप से कलीशा का सम्भाला जाना (१९१५—१९१८)।

महायुद्ध के समय मिश्नरियों को जाने का हुकुम होने पर कलीशा का समूचा भार आंगलिकन बिशप के हाथ दिया गया, इससे इलाके के स्वपालन पुंजी चार हजार रुपैया भी जिम्मा देने पड़े जिससे बिशप साहेब को इलाके का काम चलवाने में सहारा हुआ, जो लड़ाई के अन्त में तेरह सौ रुपैये बचाये जो ट्रस्टी फन्ड में सामिल हो गये। आंगलिकन कलीशा ने अपना सब काम विश्वस्तता से किया।

मिश्नरियों के जाते ही सब जायदाद भी सरकार ने अपने जिम्मा में लिया और उसके लिये एक बोर्ड नियुक्त किया, इस समय के लड़ाई के पहिले सरकार ने कलीशा की सब जायदाद कलीशा को दे दी। मिश्नरियों के जाते ही कलीशा ने बिशप साहेब के आलोचन पर एक सेन्ट्रल कमिटी बनाई जो अब चर्च कौंसिल कहलाती है। इस सभा के लोग इस इलाके में भी आके इलाका को उत्साह देते थे।

६. महायुद्ध के अन्त होने पर कलीशा का प्रबन्ध।

महायुद्ध के अन्त होने पर यह समाचार फैलाया गया कि मिश्नरी लोग फिर न आवेंगे, कलीशा S.P.G. के हाथ चली जायगी, इसके बारे में मिस्टर P. Hurad के प्रयत्न से N.M.S. ने कमिशन भेजी, वह कमिशन पुरुलिया भी आई। आनन्द का विषय है कि पुरुलिया इलाके ने भी कमिशन को जनाया कि अपने विश्वास में दृढ़ हैं और किसी दूसरी मण्डली से नहीं मिलेंगे। सो इलाका ने अन्य २ इलाकाओं के संग रांची सभा में कमीशन के आगे १० जुलाई १९१९ को आटोनोमी की घोषणा की। और स्कूलों को सम्भालने के लिये N.M.S. से Advisory Board का प्रबन्ध हुआ १९१९ में। और American मिश्नरी Ruplay साहेब की सहायता से कलीशा की नियमावली तैयार हुई और रजिस्ट्री हुई। Ruplay के पीछे Rev. J. Cannaday और दूसरे २ मिश्नरी भी अति विश्वस्तता के साथ काम किये। सब पादरियों को स्कूलों का Supervisor ठहराये और उसके लिये हर एक को माहवारी ५) रु. देते थे। १९२८ में Advisory Board के अन्त होने पर भी Rev. J. Cannaday अब लों इस कलीशा को सम्भालने के ~~लिये~~ महा कामों में रहते हैं। वे इस कलीशा के महादयालु जन और प्रेमी सहायक हैं। यह ईश्वर का बड़ा दान है।

७, महायुद्ध के बाद इलाका ।

महायुद्ध के बाद बुड़जू इलाका में रोकाद और टमाड़ इलाका मिलाया जाके एक बड़ा इलाका था पर १९२४ में टमाड़ और १९४० में रोकाद अलग हुए सिर्फ प्रचारकों की शिक्षा क्लास एक में होती है ।

अब बुड़जू इलाके में पांच पादरीपन हैं जिन में पादरी C.K. Kurian इलाका चेअरमैन हैं । और ३३ प्रचारकपन हैं (जिन में २१ प्रचारक हैं, बाकी जगहें स्कूल मास्टरों से चलाये जाते हैं जिन को इलाका से १९४४ में Bonus देने का प्रबन्ध हो गया है) ।

इलाके में केवल एक मिडिल स्कूल १ लड़की लोअर स्कूल और १३ दिहाती स्कूल हैं और कई अन्य स्कूल भी हैं जिन में हमारे बालक पढ़ते हैं । वर्तमान में इलाका में १५८९ घर ८९६४ बपतिस्मा पाये हुए और ४२ धर्मखोजक हैं और ४७७१६ दृढ़ीकृत हैं ।

इलाका अपने कामों को सम्भालने और आत्मिक बातों में बढ़ने के लिये अपने काम सभा से पास किये हुए नियमों को चालू रखने को यत्न करती है । और अपने गिरजा घरों को अच्छी दशा में रखने के लिये अपने को जवाबदेही समझती है । सिवाय बड़े गिर्जा घरों के जिनको सम्भालने और मरम्मत करने के लिये चर्च कौंसिल और ट्रस्टीबोर्ड के सेक्रेटरी अति चिन्तादाई हैं ।

और अब लों कलीशा के अगुवे याने चर्च कौंसिल के सदस्य लोग अर्जी किये जाने पर या बड़े प्रेम से प्रोग्राम बनाके इलाके में आते, गड़बड़ होने पर शांत करते, गिरती दशा को जगाते, आत्मिक बातों के लिये उसकाते और उत्साहित करते हैं । इस में भूतपूर्व स्कूल सुपरवैजर मिस्टर निर्मल साय ने Organiser होके इलाके को स्वपालन के लिये जमाने और बढ़ाने के लिये इलाके को हर प्रचारकपन में पहुंच के परिश्रम किये हैं ।

ईश्वर ने इस इलाके को ७५ बरस लों रक्षा की है, ऐसा ही आगे भी सम्भाले और बढ़ती देवे ।

C. K. Kurian
Ilaka Chairman
Burju
20-12-44.

मिनमेत इलाका का संक्षेप इतिहास —
१८६९ — १९४५ — Ceuk

मिनमेत इलाका में प्रभु का काम विशेष रीति से १८६९ ई. से शुरू हुआ है पहिले खुटीटोली इलाका के नाम पेरवा जाता था। यहाँ के गिर्जा घर का संस्थापन १९०८ में हुआ है। इस इलाका में और २ मिशनरी ने काम किये हैं पर अधिक दिन और अधिक काम मान्यवर A. John और बेटा John से हुआ है। महायुद्ध के दिनों में यह इलाका बहुत परीक्षा में था भरमानेहारे बहुत थे और कितने लोग अपनी माता मण्डली को छोड़ S.P.G. में चले गये H महायुद्ध के बाद मान्यवर A. John फिर लौट आकर ~~और~~ १९२५ में और यहाँ रहने लगे और १९२५ से मिडिल स्कूल भी चल रहा है। १९१९ में औटोनोमी गड़बड़ा करने पर भी यह इलाका स्थिर नहीं था कितने औटोनोमी को उठाने चाहते थे कितने दूसरे कलीसिया से मिल जाने चाहते थे ऐसा ही १९३६ ई. तक करते आते थे पर अभी बिलकुल

मिट गई है। इसी से यह इलाका सब
और इलाकों से सब बातों में पिछड़ी
है। मण्डली के कामों में या इलाका के
कामों में सहायता देने वाले कोई नहीं
हैं। बहुत थोड़े भाई लोग हैं पर पुनः
दुर्बल ही लोगों से अपना काम चला
रहा है और मण्डली बढ़ रही है। कितने
जगहों में हाल ही में धर्म खोजक लोग
ख्रिस्तान हुए हैं। कोरवा लोग भी ख्रिस्तान
हुए हैं और और भी होने वाले हैं। इस
इलाका से भाई लोग अपना जीविका
के लिये गांगपुर, पनपुर और उदयपुर
आदि जगहों में जा कर बस रहे हैं और
वहां मण्डली खड़ा कर रहे हैं। S.P.G.
से कितने अपने माल मण्डली में और
रहे हैं साल भर साथ रोमी मण्डली से
भी एक दो घर आ रहे हैं। इसी
इलाका का उमर १९४५ में असली
उमर ४५ हो होगा। पूरा नाम है
"कितमेल गेरवाईपुर"।

Mage Kinkel

To
The convener, Rev. T. T. P. Tigo.
G. E. L. church Ranchi.

Dated. 19th September 1944
Rev. K. N. Topno.

Dear Sir,

I am sending the History of Tamar Thaka.

Rev. K. N. Topno

गोस्सनर एवंजेलिकल कलीसिया की तमाड़ इलाके का संक्षेप इतिहास।

यह कलीसिया जर्मन मिशनरियों के द्वारा खड़ी किई गई। अगले समय में तमाड़ थाना के चार पांच प्रचारकपन बुर्जू इलाके में सामिल थे। १९०० ई० में मिशनरियों ने इस को अलग इलाका बनाये, उस समय से अब लों इस इलाके का केवल दो परिश हैं उम्बुलनहा + अमलेशा। हाल में इन दोनों परिशों में १६ प्रचारकपन हैं। उन प्रचारकपनों में से १३ प्रचारकपनों में प्रचारक रखे गये हैं बाकी मास्टरों वो अन्य कर्मचारियों से देख भाल किया जाता है। वर्तमान में लगभग २००० प्राणी इस कलीसिया में हैं।

तमाड़ इलाका जो बुर्जू इलाका से अलग इलाका बनाई गई यहां की आत्मिक वो आर्थिक कामों को चलाने वो देख भाल के लिये मिशनरियों में से Rev. F. Pape साहब भेजे गये। उन्हीं के द्वारा यहां के बंगला और लाइन घरों की नेव डाली गई। उन के विलायत जाने की छुट्टी लेने पर Rev. W. Diller साहब आये। आप नये प्रचारपन तथा स्कूलों के स्थापक थे। आप के बाद Rev. M. Schütz साहब आये; उन के समय में भी कितने प्रचारकपन और बढ़ गये। आप १९०६ में विलायत जाने की छुट्टी लिये। उन के जगह में Rev. R. Karolen वो Rev. P. Wuste अल्प समयों के लिये इलाके का चार्ज लिये थे। बाद Rev. J. Szallies साहब भेजे गये आप १९१० ई० तक तमाड़ इलाके की चरवाही किये; बाद फिर Rev M. Schutz वापस विलायत से लौट कर १९१५ ई० तक याने प्रथम महायुद्ध तक इलाके की आत्मिक वो आर्थिक कामों का भार लिये थे। महायुद्ध के कारण जर्मन मिशनरी ज्यों हिन्दुस्तान छोड़ दिये तो इलाके का कुल भार परिश उम्बुलनहा के चेयरमेन पर पड़ा, लेकिन आप को बुर्जू इलाके से इलाके का काम चलाने के लिये सहायता मिलती थी। प्राय: १९२३ ई० तक ऐसो ही तमाड़ इलाका वो बुर्जू इलाका संग मिलित काम चलाते आये।

१९२४ ई० से चार्च कौंसिल फिर से अमलेशा परिश में पादरियों को रखने का बन्दोबस्त किया। उस समय से १९४४ ई० तक जितने पादरी इस इलाके के चेयरमेन हुए सो ये हैं:—१ला मृत Rev. Nehmiyah Surin, २रा Rev. C. K. Guria, ३रा मृत Johan Bhengra, ४था Rev. Barnabas Hemrom, ५वां Rev. K. M. Topno. जब से चार्च कौंसिल अमलेशा में फिर से पादरी रखने का प्रबन्ध किया तब से जैसा मिशनरियों के समय वैसा अमलेशा पेरिस वो उम्बुलनहा पेरिस मिल के तमाड़ इलाका नाम अपने को कहकर इलाके भर के आत्मिक वो आर्थिक कामों को देख-भाल और प्रबन्ध करते आ रही हैं। प्रार्थना है कि सर्वसामर्थी वो कृपासागर ईश्वर उस नये और पिछड़ी इलाका पर अनुग्रह करे जिस्ते आत्मिक वो आर्थिक कामों में उन्नति करने की बुद्धि वो शक्ति प्राप्त करे।

लेखक:—

N. Bhengra Master

CENSUS DER KOLS—MISSION 1914. TABELLE I. DIE GEMEINDEN U. IHRE AR[...]

1		2 Besoldete Missions-Arbeiter.																	3	4 Stand der Gemeinde 1913.			5 Abgang im Jahre					
Station.		Missionare.	Lehrschwestern.	Diakonissen.	Eingeb. Pastoren.	Candidaten i. d. Gemeinde.	Catechisten.	Colporteure.	Bibelfrauen.	Eingeb. Aerzte.	Compounder.	Pandits.	Candidaten i. d. Schule.	Stat. Lehrer.	Stat. Lehrerinnen.	Dorflehrer.	Kindergärtnerinnen.	Sa. aller besoldeten Miss. Arbeiter.	Unbesoldete Arbeiter, Aelteste etc.	Sa. aller Taufbewerber.	Sa. aller Getauften.	Sa. aller Gemeindeglieder.	In den grossen Bann.	Taufbewerber abgefallen.	Nach Rom.	In die S. P. G.	Zu den Baptisten.	Ausgewandert.
1, Ranchi Station	(gegr 1845)	2	3	...	5	2	40	...	4	...	1	1	1	8	5	12	2	86	25	223	7938	8161	33	13	29	10	...	56
2, „ Seminar	(„ 1867)	4	...	...	...	...	...	...	...	...	...	3	3	8	...	...	...	18	...	...	297	297	...	...	...	...	...	...
3, Hazaribagh u. Jala	(„ 1853)	1	...	...	1	...	2	...	1	...	...	...	...	2	...	1	...	8	2	6	394	400	...	1	...	2	...	...
4, Purulia	(„ 1863)	2	...	2	2	...	10	2	4	1	2	...	...	15	3	5	3	51	45	48	1933	1981	...	...	...	2	...	...
5, Chaibassa—Singbhum	(„ 1865)	2	...	...	1	...	2	1	...	...	...	2	1	3	2	...	1	15	4	25	625	650	5	1	...	...	...	2
6, Chaibassa—Porahat	(„ 1867)	1	...	...	2	...	9	...	...	...	...	...	...	5	1	10	...	28	10	232	2833	3065	...	28	1	1	...	10
7, Burju	(„ 1869)	1	1	...	6	...	22	...	...	...	...	1	1	9	1	25	2	69	41	129	7703	7832	5	9	22	13	...	49
8, Govindpur	(„ 1870)	2	...	...	5	...	25	...	...	...	...	3	1	7	2	46	1	92	94	309	11554	11863	2	35	38	13	...	74
9, Lohardaga	(„ 1871)	2	...	...	3	...	24	1	3	1	...	1	1	9	2	14	1	62	34	261	4756	5017	...	22	50	1	...	28
10, Takarma	(„ 1873)	1	1	...	1	1	19	...	...	...	...	...	...	3	1	10	4	41	103	496	6370	6866	...	21	...	7	...	18
11, Chainpur	(„ 1892)	2	...	...	2	...	20	...	...	...	...	1	1	5	2	12	...	45	27	207	4008	4215	26	3	20	...	...	34
12, Chakradharpur	(„ 1893)	1	...	...	1	1	10	...	...	...	...	...	...	2	2	4	...	21	3	237	1660	1897	...	6	...	...	...	1
13, Khutitoli	(„ 1895)	1	...	1	3	...	19	...	...	...	...	...	...	5	2	9	...	40	22	1854	4203	6057	52	137	20	...	...	28
14, Gumla	(„ 1895)	2	...	...	1	...	16	...	...	...	...	...	...	3	2	5	1	30	6	282	2296	2578	3	20	5	...	...	26
15, Kinkel	(„ 1899)	2	...	...	2	...	33	...	3	...	...	1	...	7	1	16	...	65	2	1227	5552	6779	36	86	16	...	..	38
16, Rajgangpur	(„ 1900)	1	...	...	3	...	32	...	...	...	...	...	...	4	1	8	...	49	17	1878	5359	7237	115	228	64	1	...	24
17, Tamar	(„ 1901)	1	...	...	1	...	12	...	...	...	...	...	...	3	...	3	1	21	18	57	2026	2083	13	9	3	4	...	13
18, Karimati	(„ 1902)	1	...	...	1	...	15	...	...	...	...	...	1	2	...	13	...	33	20	420	3996	4416	15	57	...	32	...	15
19, Koronjo—Plathpur	(„ 1903)	2	...	...	2	1	19	...	...	...	...	...	1	7	4	32	...	68	16	875	8049	8924	162	144	70	...	...	31
20, Jharsuguda	(„ 1904)	1	...	...	...	...	10	...	...	...	...	...	1	2	...	...	...	14	6	604	790	1394	11	32	6	...	1	17
21, Kondra		1	...	...	1	...	19	...	...	...	...	...	...	2	1	6	...	30	26	412	2089	2501	...	27	30	...	...	38
22, Kinkel Jaspur		1	...	...	...	...	19	...	...	...	...	...	...	...	...	5	...	25	...	1040	1290	2330	...	40	18	...	...	130
SUMMA.	...	34	5	3	43	5	377	4	15	2	3	13	12	111	32	236	16	911	521	10822	85721	96543	478	919	392	86	1	632

EMEINDEN U. IHRE ARBEITER.

	5									6										7		
	Abgang im Jahre 1914.									Zuwachs im Jahre 1914.										Stand der Gemeinde Ende 1914.		
den ossen ann.	Taufbewerber abgefallen.	Nach Rom.	In die S. P. G.	Zu den Baptisten.	Ausgewandert.	Gestorben.	In andere Gemeinden.	Sonstiger Abgang.	Sa. des Abgangs 1914.	Neue Taufbewerber.	Aus dem grossen Bann.	Von Rom.	Aus der S. P. G.	Von den Baptisten.	Auswanderer zurück.	Christenkinder geboren.	Aus anderen Gemeinden.	Sonstiger Zuwachs.	Sa. des Zuwachses 1914.	Sa. aller Taufbewerber.	Sa. aller Getauften.	Sa. aller Gemeindeglieder.
33	13	29	10	…	56	138	47	93	419	59	22	19	5	…	4	338	43	…	490	206	8026	8232
…	…	…	…	…	…	3	71	…	74	3	…	…	…	…	…	3	88	…	94	3	314	317
…	1	…	2	…	…	7	94	…	104	…	…	…	2	…	…	15	…	38	55	5	346	351
…	…	…	2	…	…	170	…	…	172	135	…	…	…	…	…	64	…	…	199	135	1873	2008
5	1	…	…	…	2	12	26	8	54	10	1	..	…	…	…	20	49	…	80	24	652	676
…	28	1	1	…	10	35	53	86	214	39	…	24	3	…	1	117	51	…	235	146	2940	3086
5	9	22	13	…	49	116	75	89	378	41	11	8	17	…	9	286	79	…	451	135	7770	7905
2	35	38	13	…	74	99	165	214	640	81	1	8	9	…	12	401	107	236	855	278	11800	12078
…	22	50	1	…	28	90	32	…	223	62	…	1	2	…	17	190	22	…	294	206	4882	5088
…	21	…	7	…	18	94	32	36	208	128	…	5	…	…	10	246	48	…	437	532	6563	7095
26	3	20	…	…	34	41	21	…	145	49	…	3	…	…	5	164	25	13	259	218	4111	4329
…	6	…	…	…	1	23	28	…	58	99	…	…	…	…	…	52	7	…	158	298	1699	1997
52	137	20	…	…	28	126	176	…	539	135	…	13	…	…	10	190	172	…	520	1408	4630	6038
3	20	5	…	…	26	42	33	70	199	40	…	1	…	…	12	100	44	…	197	208	2368	2576
36	86	16	…	..	38	70	23	…	269	174	…	52	…	…	7	258	14	65	570	1362	5718	7080
15	228	64	1	…	24	58	24	57	571	1008	…	31	…	…	3	280	23	…	1345	2430	5581	8011
13	9	3	4	…	13	27	7	…	76	15	5	1	6	…	…	91	9	…	127	55	2079	2134
15	57	…	32	…	15	91	183	…	393	206	14	1	1	…	34	169	121	…	546	369	4200	4569
62	144	70	…	…	31	106	61	…	574	63	12	10	…	…	9	387	80	…	561	611	8300	8911
11	32	6	…	1	17	16	30	…	113	40	…	6	…	4	…	45	28	8	131	609	803	1412
…	27	30	…	…	38	37	11	…	143	52	…	19	…	…	4	48	20	13	156	451	2063	2514
..	40	18	…	…	130	36	…	…	224	94	…	29	…	…	14	164	3	66	370	969	1507	2476
78	919	392	86	1	632	1437	1192	653	5790	2533	66	231	45	4	151	3628	1033	439	8130	10658	88225	98883

1	2	3										
Station.	Wohnen in wie viel Dörfern u. Tolas?	Volksstämme.										
		Hindus u. Bengalis.	Mohammedaner.	Mundaris.	Ho's.	Santals.	Kharias.	Gonds u. a.	Urau's.	Im Gericht.	In der Stadtverwaltung.	In der Polizei.
1, Ranchi (gegr. 1845)	300	170	...	1381	...	4	...	...	6677	25	5	21
2, „ Seminar („ 1867)	1	3	...	123	...	1	3	...	187	...	...	...
3, Hazaribagh u. Jala(„ 1853)	18	61	...	28	...	224	...	...	38	...	1	2
4, Purulia („ 1863)	41	1664	37	133	...	140	...	...	34	14	2	10
5, Chaibasa-Singbhum(„ 1865)	31	91	...	39	336	15	...	...	195	3	...	2
6, Chaibasa-Porahat(„ 1867)	97	26	...	3060	...	...	...	...	...	...	...	...
7, Burju („ 1869)	206	86	...	7756	...	...	...	...	63	12	...	5
8, Govindpur („ 1870)	181	8	...	11799	...	...	16	...	255	1	...	7
9, Lohardaga („ 1871)	215	18	...	89	...	1	8	...	4972	...	...	7
10, Takarma („ 1873)	216	22	...	6713	...	...	286	...	74	...	...	3
11, Chainpur („ 1892)	76	3	...	50	...	...	...	...	4276	...	...	9
12, Chakradharpur („ 1893)	92	82	...	1140	...	9	...	...	766	...	...	2
13, Khutitoli („ 1895)	175	3	...	1293	...	...	2811	...	1931	...	...	3
14, Gumla („ 1895)	64	13	...	75	...	...	65	...	2423	6	...	5
15, Kinkel („ 1899)	186	43	...	83	...	...	1186	4	5764	...	...	6
16, Rajgangpur („ 1900)	176	27	1	4018	...	6	1108	...	2853	1	...	...
17, Tamar („ 1901)	101	30	...	2076	...	...	...	...	28	...	...	...
18, Karimati („ 1902)	112	7	...	4100	...	...	43	...	419	...	...	...
19, Koronjo—Plathpur(„ 1903)	183	...	...	7103	...	...	1060	...	748	...	...	...
20, Jharsuguda („ 1904)	54	...	...	814	...	...	...	...	598	...	...	7
21, Kondra	57	...	...	9	...	...	...	...	2505	...	...	...
22, Kinkel Jaspur	51	...	...	...	...	...	...	...	2476	...	...	1
SUMMA...	2633	2357	38	51882	336	400	6586	4	37282	62	8	90

4											
Beschäftigung ausser Ackerbau											
In der Stadtverwaltung.	In der Polizei.	Handwerker.	Eisenbahn.	Vermessung.	Dienstboten.	Impfer.	Aerzte.	Apotheker.	Forstbeamte.	Post.	Im Govt. Schul-Dienst.
5	21	70	10	60	250	6	1	1	...	3	...
...	...	...	...	...	13	...	...	...	...	...	...
1	2	1	...	5	3	...	...	...	...	...	...
2	10	71	12	...	35	...	1	5	...	5	...
...	2	6	1	6	17	1	...	1	2	...	...
...	...	7	1	1	...	1	...	...	5	2	1
...	5	20	...	8	16	3	...	...	3	...	4
...	7	3	...	32	8	4	...	2	...	2	9
...	7	6	...	1	9	...	1	...	...	2	10
...	3	12	...	1	7	1	...	...	...	1	8
...	9	1	...	...	7	...	...	...	26	...	9
...	2	4	9	...	10	...	...	...	...	1	...
...	3	16	...	...	9	1	...	...	...	...	4
...	5	5	...	...	15	1	...	...	...	1	7
...	6	5	...	...	17	...	...	...	...	1	13
...	...	...	...	...	4	...	...	1	...	...	...
...	...	17	...	...	6	...	...	...	...	...	...
...	...	4	...	...	7	...	...	...	...	1	1
...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...
...	7	1	...	...	2	...	...	...	...	...	...
...	...	1	...	...	6	...	...	...	...	...	...
...	1	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...
8	90	250	33	114	441	18	3	10	36	19	66

CENSUS DER KOLS-MISSION 1914. TABELLE III. DIE KIRCHLICHEN U. SITTLICHEN V

1	2	3	4	5			6		7		8					9		10
				Getauft 1914			Confirmiert		Abendmahl		Ehen					Kirchendisciplin		Getän
Station.	Wie viel Native Pastorate ?	Wie viel Kirchen u. Kapellen ?	Wie viel Begräbniss-Plätze (unfriedigt) ?	Christenkinder	Heiden	Summa	In 1914	Sa. aller Confirmierten	Wie oft gefeiert ?	Wie viele Gäste ?	Wie viele Trauungen ?	Davon mit Rom ?	„ S. P. G.	„ mit Baptisten ?	Wie viele Paare leben in wilder Ehe ?	Wie viele in den kl. Bann getan ?	Wie viele absolviert ?	Wie viele wegen Feldstreitigkeiten ?
1, Ranchi Station [gegr 1845]	4	42	56	338	23	361	170	3644	128	6596	62	...	8	...	46	26	20	11
2, „ Seminar [„ 1867]	...	...	...	3	3	6	...	209	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...
3, Hazaribagh [„ 1853]	1	3	2	16	...	16	3	125	14	175	8	...	4	...	...	4	4	...
4, Purulia [„ 1863]	1	8	13	57	94	151	112	1277	29	3012	26	...	2	...	3	3	6	...
5, Chaibasa Singbhum [„ 1865]	1	5	1	20	3	23	11	256	17	249	1	...	...	...	2	10	5	...
6, Chaibasa Porahat [„ 1867]	2	16	4	117	46	163	62	1381	60	2506	34	...	...	...	33	32	30	...
7, Burju [„ 1869]	6	36	148	286	28	314	147	3954	179	13449	68	...	16	...	62	30	26	...
8, Govindpur [„ 1870]	5	46	19	401	79	480	227	5668	128	9312	61	...	...	...	6	67	28	...
9, Lohardaga [„ 1871]	1	31	109	190	83	273	109	2315	81	4359	52	...	1	...	19	4	3	...
10, Takarma [„ 1873]	2	27	15	316	53	369	162	2977	81	4854	64	...	...	...	29	58	71	...
11, Chainpur [„ 1892]	2	25	37	144	29	173	80	1407	62	1706	35	...	...	...	6	3	5	...
12, Chakradharpur [„ 1893]	1	14	10	68	42	110	34	646	13	366	19	...	1	...	5	5	3	...
13, Khutitoli [„ 1895]	2	33	18	190	246	436	148	1014	58	1702	40	...	...	...	4	12	4	...
14, Gumla [„ 1895]	1	12	19	100	55	155	103	1071	57	2191	23	...	...	...	2	16	9	...
15, Kinkel [„ 1899]	1	29	12	255	51	306	156	1335	36	1452	79	1	...	...	11	6	6	...
16, Rajgangpur [„ 1900]	2	39	33	265	191	456	193	1541	93	3664	67	...	...	...	7	38	51	...
17, Tamar [„ 1901]	1	12	12	76	13	89	33	950	27	2085	22	...	6	...	7	35	32	...
18, Karimati [„ 1902]	...	19	22	184	109	293	130	1736	88	3253	28	1	...	...	5	26	19	1
19, Koronjo—Plathpur [„ 1903]	2	26	69	440	183	623	140	2463	87	5314	69	...	...	...	7	44	28	...
20, Jharsuguda [„ 1904]	1	10	15	16	18	34	3	134	13	190	16	...	...	1	3	3	5	...
21, Kondra	1	1	13	47	21	68	28	420	22	395	29	...	...	...	3	2	1	...
22, Kinkel Jaspur	...	8	...	64	46	110	52	126	6	217	10	...	...	...	2	3	2	...
SUMMA ...	37	442	627	3593	1416	5009	2131	34649	1279	67047	813	2	38	1	262	427	358	12

SITTLICHEN VERHAELTNISSE DER GEMEINDEN.

9		10		11	12	13			14		15		16					
rchendisciplin		Gefängniss		Trunk		Sonntagsschulen			Gebetsversammlungen		Vereine		Dienende Liebe					
kl. Bann getan?	Wie viele absolviert?	Wie viele wegen Feldstreitigkeiten?	Wie viele wegen Verbrechen?	Wie viele notorische Säufer?	Wie viele arbeiten bewusst gegen den Trunk?	Wie viele Schulen?	Wie viele Helfer?	Wie viele Besucher?	An wie vielen Orten für Alle?	Nur für Frauen?	Wie viele für junge Männer?	Wie viele für Jungfrauen?	Aussätzige	Im Kinderheim	Unheilbare	Hospitaliten	Polyklinik (ungefähre Angabe)	Sa. aller im Asyl u. Hospital
6	20	11	4	49	301	30	60	860	24	3	1	..	...	...	...	6	1988	1994
[illegible]	...	...	...	...	...	...	...	...	3	...	..	..	...	...	...	...	...	...
4	4	...	...	2	7	2	2	22	2	...	...	...	...	...	...	...	60	...
3	6	...	...	8	80	11	32	960	12	1	...	1	670	38	...	59	4308	5075
[illegible]	5	...	...	28	24	2	2	95	4	1	...	...	...	...	...	5	820	825
2	30	...	...	13	64	18	19	108	21	...	...	...	...	...	...	...	300	...
[illegible]	26	...	...	73	364	46	46	516	36	4	..	...	...	...	...	...	800	...
[illegible]	28	...	...	100	173	54	102	855	44	1	1	1	...	...	...	...	...	...
[illegible]	3	...	...	25	366	30	56	542	25	1	10	...	14	2	10	5	3100	3131
[illegible]	71	...	...	67	127	27	37	415	47	4	2	..	...	...	...	...	...	...
[illegible]	5	...	...	124	137	19	30	268	19	...	...	...	...	...	..	..	...	...
[illegible]	3	...	...	12	35	7	7	175	9	1	..	...	...	...	...	...	...	..
[illegible]	4	...	1	339	510	27	30	410	32	...	..	...	...	...	...	...	3000	3000
[illegible]	9	...	...	180	164	19	19	262	20	..	...	...	...	...	...	...	725	...
[illegible]	6	...	...	21	372	21	34	225	20	1		...	...	...	...	...	700	...
[illegible]	51	...	...	108	260	16	18	250	33	3	...	..	...	...	...	...	1500	...
[illegible]	32	...	...	14	67	18	33	700	21	1	...	..	...	...	...	...	1000	...
[illegible]	19	1	1	18	77	19	20	217	16	...	...	...	...	...	...	...	...	500
[illegible]	28	...	...	...	...	10	10	182	...	...	...	...	...	...	...	...	1000	...
[illegible]	5	...	...	77	30	9	9	100	12	...	...	...	...	...	...	...	...	...
[illegible]	1	...	...	71	60	17	16	222	30	..	...	..	...	...	...	...	1000	...
[illegible]	2	...	...	22	53	17	17	179	4	...	..	...	...	...	...	..	200	200
	358	12	6	1351	3271	419	599	7563	434	21	14	2	684	40	10	75	20501	14725

SCHUL—CENSUS DER KOLS-MISSION 1914 UND TAETIGKEIT DER GEMEINDEN BEHUFS SEL

1	2																																					
	Schultaetigkeit.																																					
	Kindergaerten.					Dorfschulen.					Kostschulen auf Stationen und Native Pastoraten.						Davon sind				In Seminaren.			In sonstigen Schulen.		Summa aller Schueler.				Kinder unserer Mission in anderen Schulen. Knaben.			Maedchen.					
Stationen.	Wie viele Kindergärten.	Christen Knaben.	Christen Mädchen.	Heiden Knaben.	Heiden Mädchen.	Reguläre Dorfschulen.	Christen Knaben.	Christen Mädchen.	Heiden Knaben.	Heiden Mädchen.	Stationsschulen.	Nativepastorats-Schulen.	Christen Knaben.	Christen Mädchen.	Heiden Knaben.	Heiden Mädchen.	Kostschüler.	Kostschülerinnen.	Tagesschüler.	Tagesschülerinnen.	Theol. Seminar.	Catech. u. Lehrerseminar.	Lehrerinnenseminar.	Apothekerschule.	Klöppelschulen.	Christl. Schüler.	Christl. Schuelerinnen.	Heiden-Schueler.	Heiden-Schuelerinnen.	In engl. Missions-Schulen.	In römischen Schulen.	In Regierungs-Schulen.	In engl. Missions-Schulen.	In römischen Schulen.	In Regierungs-Schulen.	Die lesen und schreiben können (Schueler incl.)	Bibeln und Bibelteile verkauft.	Religiöse Schriften
1. Ranchi Station	2	57	94	—	1	10	119	36	72	—	2	—	134	166	22	2	56	82	100	86	—	—	16	—	30	310	342	94	3	57	4	10	12	—	—	1461	562	
2. „ Seminar... ...	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	1	—	246	—	21	—	189	—	78	—	12	—	—	—	—	258	—	21	—	—	—	—	—	—	—	279	—	
3. Hazaribagh	—	—	—	—	—	1	14	8	—	—	1	—	8	3	6	—	3	3	11	—	—	—	—	—	—	22	11	6	—	5	—	—	—	—	—	94	15	
4. Purulia	2	41	47	9	2	5	55	10	57	—	6	—	139	138	4	3	104	111	39	30	—	—	—	3	16	238	211	70	5	1	—	14	8	—	—	1383	293	
5. Chaibasa Singbum ...	1	6	13	—	2	—	—	—	—	—	2	—	44	23	94	2	31	19	107	6	—	—	—	—	—	50	36	94	4	7	—	4	1	—	6	247	493	
6. „ Porahat ...	—	—	—	—	—	10	85	16	90	—	2	—	48	8	11	—	45	8	14	—	—	—	—	—	—	133	24	101	—	10	—	8	—	—	—	314	—	
7. Burju	2	18	13	1	—	28	225	44	102	1	2	5	295	64	41	—	211	62	125	2	—	—	—	—	—	538	121	144	1	14	1	8	—	—	—	1306	408	
8. Govindpur	1	13	20	—	—	36	563	181	144	1	2	4	325	142	37	—	161	78	201	64	—	36	—	—	—	937	343	181	1	13	—	35	8	—	2	1960	238	
9. Lohardaga	1	19	20	—	1	14	128	48	114	—	2	1	112	72	20	—	76	59	56	13	—	—	—	—	—	259	140	134	1	2	—	30	—	—	1	877	172	
10. Takarma	2	36	53	3	—	20	257	78	23	—	1	—	40	20	—	—	30	17	10	3	—	—	—	—	—	333	151	26	—	1	3	27	—	—	1	953	183	
11. Chainpur	—	—	—	—	—	8	131	23	10	—	1	2	91	37	4	—	45	19	50	18	—	—	—	—	—	222	60	14	—	—	—	21	—	—	56	492	105	
12. Chakradharpur	—	—	—	—	—	4	49	21	19	—	2	—	24	27	10	—	19	27	15	—	—	—	—	—	—	73	48	29	—	—	—	—	—	—	2	800	25	
13. Khutitoli	—	—	—	—	—	14	181	39	43	—	2	—	51	23	3	—	30	11	24	12	—	—	—	—	—	232	62	46	—	—	—	60	—	—	—	411	70	
14. Gumla...	1	16	19	2	2	5	61	18	12	—	2	1	67	31	4	—	41	25	30	6	—	—	—	—	—	144	68	18	2	—	1	13	—	—	2	386	62	
15. Kinkel	—	—	—	—	—	16	229	41	36	—	1	—	118	44	2	—	160	36	20	8	—	—	—	—	—	347	85	38	—	—	—	140	—	—	15	629	184	
16. Rajgangpur	—	—	—	—	—	14	181	50	38	—	1	1	100	37	14	—	40	28	74	9	—	—	—	—	—	281	87	52	—	—	—	—	—	—	—	529	147	
17. Tamar...	1	4	3	1	4	3	32	—	17	—	1	1	35	17	2	—	32	13	5	4	—	—	—	—	6	71	26	20	4	—	—	—	—	—	—	215	21	
18. Karimati	—	—	—	—	—	13	106	38	78	—	1	—	31	14	—	—	26	12	5	2	—	—	—	—	—	137	52	78	—	—	—	2	—	—	—	470	152	
19. Koronjo-Plathpur ...	—	—	—	—	—	32	438	30	103	7	2	1	207	76	8	—	160	45	55	31	—	—	—	—	—	645	206	111	7	—	—	—	—	—	—	780	—	
20. Jharsuguda	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	1	—	30	6	2	—	26	6	6	—	—	—	—	—	—	30	6	2	—	—	—	—	—	—	—	119	52	
21, Kondra	—	—	—	—	—	5	68	14	14	1	1	—	26	11	1	—	25	8	2	3	—	—	—	—	—	94	25	15	1	—	—	—	—	—	—	172	181	
22. Kinkel Jaspur	—	—	—	—	—	5	70	1	10	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	70	1	10	—	—	—	—	—	—	—	110	—	
SUMMA ...	13	210	282	16	12	243	2992	796	982	10	36	16	2171	959	306	7	1450	669	1027	297	12	36	16	3	52	5424	2105	1304	29	110	9	372	29	—	85	13987	3363	

UFS SELBST-ERHALTUNG. TABELLE IV.

	3																															
	Gemeindetaetigkeit.																															
	Beitraege.																															
(Schueler incl.)	Bibeln und Bibelteile verkauft.	Religiöse Schriften verkauft (Schulbuecher ausg.)	An Collecten Gebuehren und Gemeindesteuer.			An Prabhuprit-Gaben.			Erstlingsgaben und Smmeltopf.			Barwe-Missions-Beitraege.			Jashpur-Missions-Beitraege.			Schul-und Kostgeld.			Fuer Dorfschulen.			Zu Bauten und Reparaturen.			Fuer Bibelgesellschaft etc.			Sa. aller Beitraege.		
61	562	7655	1822	—	6	96	13	3	86	—	6	36	15	—	15	1	—	1729	5	6	100	8	—	150	—	—	20	4	—	4056	15	9
79	—	—	73	11	9	—	—	—	—	—	—	12	14	—	—	—	—	4250	14	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	4337	7	9
94	15	—	169	—	9	4	2	6	—	—	—	—	—	—	7	—	6	25	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	205	3	9
83	293	131	767	7	½	41	6	6	—	—	—	30	—	—	14	—	—	391	11	6	—	—	—	—	—	—	75	—	—	1319	9	½
47	493	202	252	5	9	4	14	6	41	10	6	—	—	—	9	14	—	425	—	—	—	—	—	5	—	—	69	—	9	807	13	6
14	—	—	504	3	1½	46	9	6	175	11	—	14	7	9	8	14	9	533	8	—	6	7	3	191	2	—	3	4	9	1484	4	1½
06	408	225	1717	8	1½	102	—	9	204	3	—	42	2	9	15	9	7½	2516	4	9	318	11	3	305	4	—	27	4	3	5249	—	6
060	238	1067	1958	10	1½	425	15	9	155	12	7½	57	1	9	42	4	9	2767	8	3	1047	—	3	75	4	—	12	5	—	6521	14	6
377	172	230	1279	—	—	201	—	—	193	8	9	42	—	—	5	—	—	1232	6	3	142	8	—	130	—	—	—	—	—	3225	7	—
053	183	125	1574	7	6	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	349	8	—	162	8	6	176	—	—	4	8	—	2267	—	—
492	105	220	477	13	6	15	15	9	22	10	—	20	4	6	1	6	—	585	11	6	90	13	3	145	—	—	1	5	3	1360	15	9
300	25	86	363	11	3	22	12	3	—	—	—	—	—	—	7	4	—	390	4	—	118	—	—	—	—	—	—	—	—	901	15	6
411	70	40	902	10	—	108	9	6	424	6	3	34	4	6	3	10	—	600	12	—	130	—	—	120	—	—	4	13	3	2329	1	6
386	62	138	694	4	—	47	—	—	118	15	—	17	13	6	3	2	3	510	10	—	37	—	—	63	7	—	—	—	—	1492	3	9
629	184	234	862	—	6	149	6	9	—	—	—	1	2	—	—	—	—	943	10	—	480	—	—	90	—	—	—	—	—	2526	3	3
529	147	—	1437	14	3	107	5	6	183	15	3	—	—	—	1	1	—	507	8	—	361	—	—	200	—	—	20	11	—	2819	7	—
215	21	80	250	12	3	13	11	6	145	1	6	—	—	—	14	—	3	550	—	—	36	—	—	50	—	—	—	—	—	1059	9	6
470	152	156	424	15	6	20	8	—	460	9	6	14	3	—	8	—	—	357	14	—	315	7	—	126	4	—	10	2	—	1737	15	—
780	—	—	1488	10	9	129	1	6	21	9	9	34	2	3	—	—	—	1100	—	—	537	8	—	335	—	—	—	—	—	3646	—	3
119	52	18	281	15	4½	34	6	9	—	—	—	9	—	—	2	—	6	193	10	—	—	—	—	—	—	—	4	6	6	525	7	1½
172	181	178	405	15	9	25	9	3	20	6	6	3	—	—	11	10	—	186	—	—	81	12	—	119	—	—	—	7	—	853	12	6
110	—	—	198	1	9	22	15	—	72	5	9	—	—	—	3	6	—	—	—	—	24	8	—	35	—	—	—	—	—	356	.4	6
987	3363	10785	17907	3	6½	1620	4	6	2326	13	10½	349	7	—	173	4	7½	20147	1	9	3989	11	6	2316	5	—	253	7	9	49083	11	6½

38,284-113